

संपादक

अभिजीत कुमार, 9431006107

प्रबंध संपादक

मुकेश कुमार सिंह, 9534207188

समाचार संपादक

अंखिलेश कुमार, 9431089053

राजनीतिक संपादक

प्रो. नीरज कुमार सिंह, 9431049337

सहायक संपादक

प्रभाकर कुमार राय/एस. एन. श्याम

संपादकीय सलाहकार

राजीव कुमार सिंह 9431210181

रंजीत कुमार 8800689555

कॉन्सेप्ट एडिटर

अनुप कुमार शर्मा, 7004821433

विधि सलाहकार

वीणा कुमारी जयसवाल, पटना हाई कोर्ट

बिहार ब्लूरे

अनुप नागरण सिंह

मुख्य संचारदाता

सोनू सिन्हा, 9431006189

आशीष कुमार

जिला ब्लूरे

बेगूसराय : विरेश कुमार सिंह, 9430415316

अमित सिंह, 9430595995

भागलपुर प्रमंडल : राजेश पंजिकार,

(ब्लूरे चौफ), 9334114515

सहस्रा : आशीष कुमार झा, 9430633262

साराण प्रमंडल : सचिन पर्वत, 9430069987

समस्तीपुर : मृत्युंजय कुमार ठाकुर, 8406039222

राजेश कुमार, 8539007850

चांदन : अमोद कुमार ढूँये : 8578934993

हसनपुर : विजय चौधरी : 9155755866

दरभंगा : जाहिद अनवर : 8541849415

बाराहाट : हेमन्त कुमार (संचारदाता)

सुईया : चन्द्रशेखर मिश्र (संचारदाता)

बिहार-झारखण्ड : अभिनव कुमार

9771654511

दिल्ली : नवल वत्स

ग्रेटर नोएडा : अरमान कुमार, 8920215318

प्रधान कार्यालय

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर,

काली मंदिर रोड नं.- 7, पटना - 800 020 (बिहार)

मो.- 9431006107, 9939815347

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक : अभिजीत कुमार

गिरिराज सदन, हनुमान नगर, संजय गांधी नगर, काली

मंदिर रोड नं.- 7 पटना - 800 020 (बिहार) से

प्रकाशित व एस. एम. ऑफसेट पंडुईकोठी लंगर टोली,

डीएन दास लेन, पटना-800 004, से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित कियी भी रचना के विवाद के लिए लेखक स्वयं जिमेवार होंगे। इसके लिए संपादक से सहमति जरूरी नहीं। पत्रिका से संबंधित सभी विवादों का निवटारा पटना उच्च न्यायालय से होगा।

संरक्षक



डॉ. संजय मयूर

राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी  
माजपा

जय जयराम सिंह

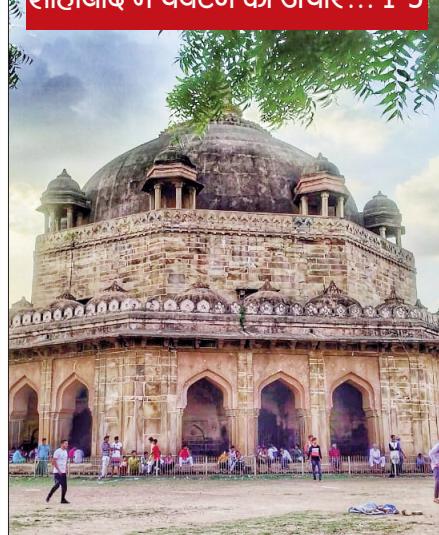
समाजसेवी

# चर्चित बिहार

वर्ष : 6, अंक : 11, जुलाई 2019, मूल्य : 25/- राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

**सीतारमण 49 साल बाद बजट पेश करने वाली देश की दूसरी महिला**

शाहबाद में पर्यटन की अपार ... 15



आज मिलिए मिथिलांचल ... 18



नेपाल से संबंध को ... 24



समाजसेविका के 'आचार्य ... 24

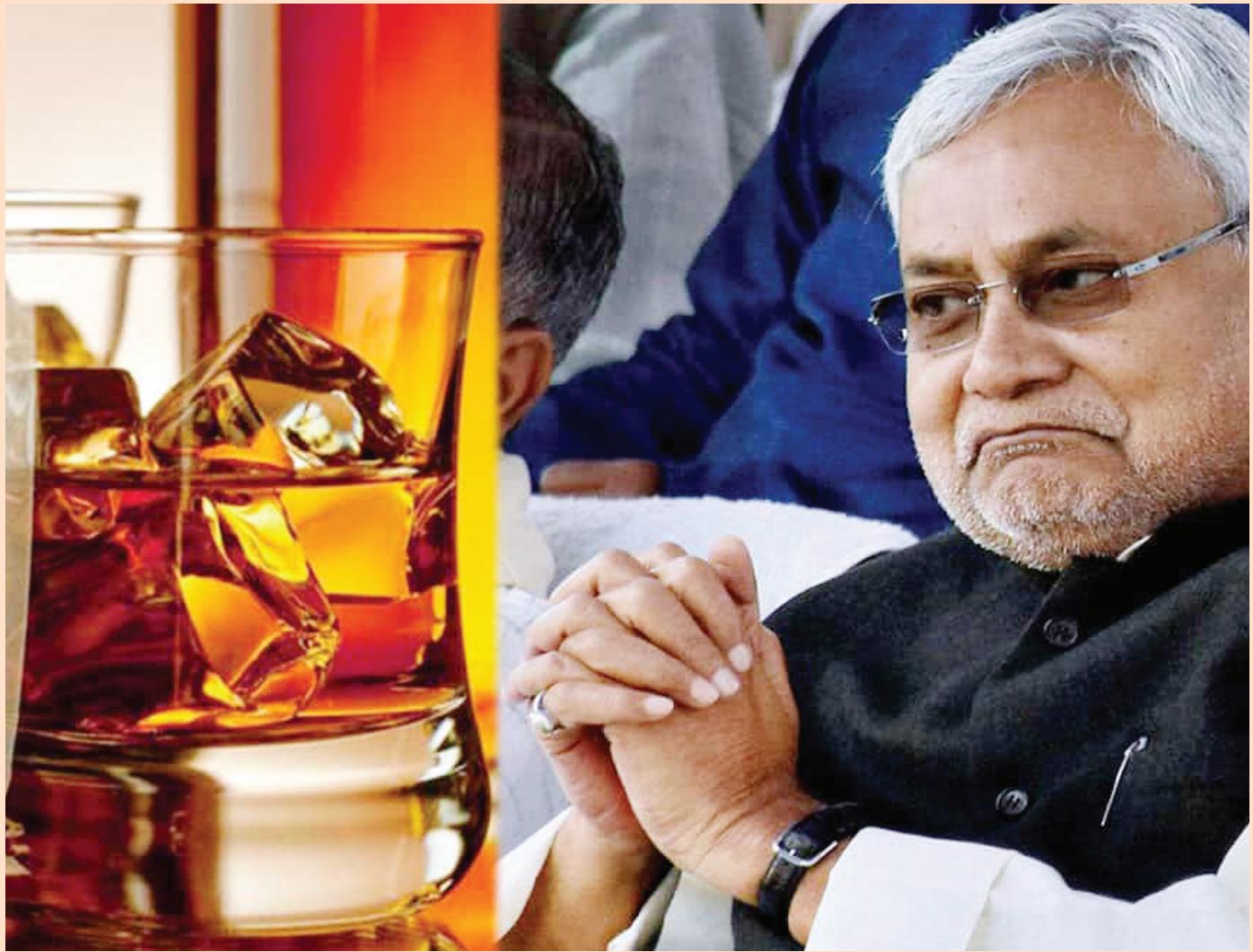
## सड़क और सुरक्षा

मुना एक्सप्रेस-वे पर सोमवार की भोर में हुए भीषण बस हादसे में 29 लोगों की मौत अत्यंत दुखदायी है। यूपी रोडवेज की एक डबल डेकर बस लखनऊ से दिल्ली जा रही थी। बीती रात में वह सड़क छोड़कर 40 फीट गहरे नाले में जा गिरी। शुरूआती जांच में पता चला है कि ड्राइवर को झपकी आ गई थी, जिससे यह दर्दनाक हादसा हुआ। यमुना एक्सप्रेस-वे पर आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। वर्ष 2019 के पहले छह महीनों में ही यहां हुई 247 सड़क दुर्घटनाओं में 127 लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 2018 में 659 सड़क दुर्घटनाओं में 110 लोगों की जान गई थी। हर दुर्घटना को राज्य सरकार दुर्भाग्यपूर्ण बताती है, उस पर दुख व्यक्त करती है, मुआवजे का ऐलान भी करती है लेकिन एक्सीडेंट रोकने के गंभीर उपाय अब तक नहीं किए जा सके हैं। सोमवार के हादसे पर केंद्र सरकार ने साफ किया है कि इसके लिए वह जिम्मेवार नहीं है। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी का कहना है कि इस हाईवे का निर्माण यूपी सरकार ने करवाया है और इसका नियंत्रण नोएडा प्राधिकरण के पास है। जो भी हो, सवाल यह है कि इस तेज रफ्तार सड़क पर लोगों की जिंदगी कब तक इतनी सस्ती बनी रहेगी? सचाई यह है कि उत्तर प्रदेश में ही नहीं, पूरे देश में सड़क परिवहन भारी अराजकता का शिकार है। कुछ राज्यों में तो स्थिति बेहद खराब है। वहां नियम-कानूनों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। सोमवार को हादसा इसलिए हुआ क्योंकि बस में ड्राइवर एक ही था। जबकि नियम यह है कि दिन हो या रात, एक ड्राइवर 400 किमी ही बस चलाएगा। इतनी दूरी पूरी होते ही बस दूसरे ड्राइवर को सौंप दी जाएगी लेकिन लखनऊ से आनंद विहार (दिल्ली) की दूरी 500 किमी से ज्यादा है, फिर भी दुर्घटनाग्रस्त बस में एक ही ड्राइवर बताया जा रहा है। दरअसल रोडवेज के पास ड्राइवरों की कमी है। मांग के अनुपात में बसें भी कम हैं इसलिए अनुबंधित बसें चलाई गई हैं। इनके ड्राइवर खराब शर्तों पर काम करने को तैयार रहते हैं। असली समस्या राज्य सड़क परिवहन निगम के दायरे से बाहर चलने वाली बसों की है, जिनमें तय संख्या से ज्यादा सवारियां बिठाई जाती हैं और इनके ड्राइवर भी प्रशिक्षित नहीं होते। इन्हें रोडवेज की बसों के रंग में रंगवा दिया जाता है लेकिन न तो इनके रूट का कोई ठिकाना है, न ही ये कोई नियम-कायदा मानती हैं। देश में 30 प्रतिशत ड्राइविंग लाइसेंस फर्जी हैं। परिवहन क्षेत्र में भारी भ्रष्टाचार है लिहाजा बसों का ढांग से मेनटेनेंस भी नहीं होता। इनमें बैठने वालों की जिंदगी दांव पर लगी होती है। पिछले दिनों तमिलनाडु ने दुर्घटना रोकने के लिए ऐसे कई उपाय किए हैं, जिनसे काफी फर्क पड़ा है। देश भर में बसों के रख-रखाव, उनके परिचालन, ड्राइवरों की योग्यता और अन्य मामलों में एक-समान मानक लागू करने की जरूरत है, तभी देश के नागरिक एक राज्य से दूसरे राज्य में निश्चिंत होकर यात्रा कर सकेंगे।

**अभिजीत कुमार**  
संपादक  
9431006107

[cbhindi.news@gmail.com](mailto:cbhindi.news@gmail.com)

# शराबबंदी के बाद बिहार में ‘काली अर्थव्यवस्था’



अखिलश कुमार

बिहार में शराबबंदी कानून लागू करने के बाद अवैध रूप से शराब बिक्री में संलिप्त नेटवर्क ने एक काली अर्थव्यवस्था को स्थापित कर दिया है जिसमें राजनेता से लेकर अधिकारी तक के संलिपता की बात समय-समय पर सामने आ रही है। सबसे चिंता का विषय यह है इस कारोबार में नाबालिक बच्चे से लेकर प्रौढ़ और बुजुर्ग तक लगे हुए हैं। शराब के कारोबार में अकूत आमदनी को देखते हुए खासकर बिहार की नई पीढ़ी गलत रास्ते पर चल दिया है जो भविष्य के लिए चिंता का विषय है। शराब कारोबार में आमदनी के असीमित स्रोत को देखते हुए अब बिहार के विभिन्न भागों में इस

धर्थे में वर्चस्व कायम करने को लेकर खून खराबे का खेल भी शुरू हो गया है। जिसमें कई लोग अपनी जान गवां चुके हैं। 2015 में सत्ता में पुनर्वासी के बाद नीतीश कुमार ने 1 अप्रैल 2016 पूर्ण शराबबंदी कानून को लागू किया था। एक ऐसा कानून, जिसका विरोध विपक्ष ही नहीं बल्कि आम जनता और बुद्धिजीवियों ने भी कानून में प्रावधानों को लेकर खुले तौर पर किया था। लेकिन नीतीश कुमार ने बिहार को पुर्णतः शराब मुक्त कराने के उद्देश्य से इस कठोर कानून को यह जानते हुए भी लागू किया की शराब बंदी के बाद बिहार को प्रति वर्ष करीब 3000 करोड़ से अधिक राजस्व का नुकसान होगा। कठोर कानून के बिन्दुओं और उसके दुरूपयोग को लेकर उठ रहे आवाज के बाद

सरकार ने जुलाई 2018 में मध्य निषेध विधेयक को नरम किया। जिसके तहत इसके 16 धाराओं में बदलाव की गई तथा 8 धाराएं समाप्त कर दी गईं।

1 अप्रैल 2016 को लागू कानून में प्रावधान था कि यदि किसी घर में शराब पकड़ी जाती है या शराब के नशे में कोई पकड़ा जाता है तो उस घर में रहने वाले 18 साल से अधिक उम्र के सभी सदस्यों को दोषी मानते हुए सजा देने का प्रावधान था साथ ही साथ उक्त मकान या प्रतिष्ठान को सील कर देने का भी प्रावधान था। लेकिन सरकार ने जुलाई 2018 में इन प्रधानों को भी हटा दिया साथ ही साथ पहली बार शराब के नशे में पकड़े जाने वाले व्यक्ति को 50000 जुर्माना देकर थाने से ही बेल लेने का प्रावधान बनाया गया।



शराब बंदी कानून लागू होने के बाद बिहार में अवैध शराब बिक्री जोर पकड़ते गया। गांव से लेकर कस्बा तथा शहर के चप्पे-चप्पे में अवैध शराब विक्रेताओं का नेटवर्क स्थापित हो गया। शराब बंदी कानून की सख्ती के बाद बिहार में धड़ल्ले से हो रही बिक्री और होम डिलीवरी का प्रमाण खुद शराब के नशे में गिरफ्तारियां और शराब की लगातार हो रही बरामदी है। शराबबंदी नीति के बाद बिहार में शराब काफी महंगा हो गया 300 का शराब यहां 1000 से 15 सौ रुपए में बिक रहा है। शराब में असीमित मुनाफे को देखते हुए शराब माफियाओं के साथ ही साथ बिहार की युवा पीढ़ी भी संलिप्त हो चुकी है। छोटे-छोटे बच्चे के साथ ही साथ महिला भी शराब के धंधे में संलिप पाई जा रही हैं। जिनके हाथों में कलम और बैग में किताब कॉपी होना चाहिए था वो इस उम्र के पढ़ने वाले कई बच्चे आज स्कूल बैग में शराब रखकर होम डिलीवरी कर रहे हैं। सरकार चाहे शराबबंदी कानून को सख्ती से लागू करने का जितनी दावा कर ले, लेकिन आप जनता और समाज के अन्य वर्गों को तो छोड़ दीजिए, खुद इस कानून को अमलीजामा पहनाने की जिम्मेवारी लिए बिहार पुलिस के जवान और अधिकारी भी आए दिन शराब के नशे में पकड़े जा रहे हैं। दिन में शराब नहीं पीने और नहीं बेचने देने किस शपथ लेने वाले पुलिस पदाधिकारी रात में खुद शराब पीते पकड़े जा रहे हैं। भागलपुर के नवगांधिया, फतेहपुर के न्यू कॉलोनी, पटना के पुलिस लाइन, कैम्प के कुदरा थाने सहित राज्य के विभिन्न भागों में शराब के नशे में पुलिस पदाधिकारियों की गिरफ्तारी इस बात का प्रमाण है कि बिहार में शराबबंदी कानून की घजियां खुले आम उड़ाई जा रही हैं।

हालांकि बिहार के डीजीपी गुरेश्वर पांडे कहते हैं कि पूर्ण शराबबंदी कानून को हर हाल में लागू किया जाएगा। और इसमें सलिप किसी भी व्यक्ति को बच्चा नहीं जाएगा, चाहे वह कितना ही ऊंचा रसूख वाला क्यों ना हो। डीजीपी के अनुसार अब तक बिहार में शराब

वह कहते हैं कि शराबबंदी कर सरकार ने कुछ लोगों को काफी अमीर बना दिया है।

बिहार में शराबबंदी के बाद अवैध रूप से हो रही शराब बिक्री और इसमें काली कमाई पर बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने भी सवाल खड़ा कर चुके हैं। वह कहते हैं की 300 का शराब बिहार में 15 सौ में बिकता है तो आखिर बीच का 12 सौ रुपया कहां जाता है? सरकार को यह भी बताना चाहिए।

विश्वेषणों का कहना है कि शराबबंदी कानून को लागू करने से पहले इस पर गहराई से अध्ययन नहीं किया गया। यही इसकी विफलता का प्रमुख कारण है। राष्ट्रीय जनता दल दलित प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अनिल कुमार साथु कहते हैं कि नीतीश कुमार ने पहले गांव गांव में शराब की दुकानें खुलवाएं। नीतीश सरकार से पहले पंचायत स्तर पर शराब दुकान का प्रावधान नहीं था, लेकिन इन्होंने हर गांव में शराब बेचवाने के बाद शराब बंदी कानून तो लागू कर दी, लेकिन कानून लागू होने से पहले इन्होंने बिहार के नई पीढ़ी को शराब के नशे में झोंक दिया था। और अब शराबबंदी कानून लागू कर अवैध कारोबारियों को अवैध कमाई का मौका दे दिया है। बिहार में शराबबंदी कानून लागू होने से पहले भी देश के कई राज्यों ने शराब बंदी कानून लागू किया था गुजरात देश का पहला राज्य है जहां शराब बंदी कानून लागू किया गया था लेकिन वहां 60,000 से अधिक लोगों को शराब पीने और खरीदने की परमिट निर्गत की गई है हरियाणा की बंसी लाल सरकार ने शराब बंदी कानून लागू किया था लेकिन उस में विफल होने के 2 साल बाद वहां पुणे शराब बिक्री शुरू हो गई थे केरल में भी शराब बंदी कानून लागू है कुल मिलाकर शराबबंदी कानून लागू होने के बाद अवैध रूप से बिहार में बिक रहे शराब और इसमें नाबालिंग किशोर तथा युवा वर्ग की बड़े पैमाने पर सलिपता चिंता का विषय है। नई पीढ़ी को गलत रास्ते पर जाने से रोकने के लिए सरकार को गंभीरता से विचार करते हुए कठोर कदम उठाने की जरूरत है।

बंदी कानून के तहत करीब एक लाख सत्रह हजार मामले दर्ज हुए हैं। एक लाख 60 हजार से अधिक लोगों की गिरफ्तारियां हुई हैं। जिसमें तेरह हजार से अधिक शराब कारोबारी हैं। अबतक 50 लाख 70 हजार लीटर से अधिक शराब बरामद हुए हैं। डीजीपी बताते हैं कि शराबबंदी कानून के तहत 430 पुलिसकर्मियों पर भी कर्रवाई हो चुकी है। 56 पुलिसकर्मी अब तक सेवा से बर्खस्त किए जा चुके हैं। पिछले पखवाड़े ही बिहार के 41 पुलिस अफसरों को 10 वर्षों तक थानेदार नहीं बनने का आदेश निकाला गया है, जिसमें 9 इंस्पेक्टर तथा 27 सब इंस्पेक्टर हैं। शराबबंदी कानून के बाद अवैध कारोबार में लगे लोगों द्वारा बिहार में कायम हो रही 'काली अर्थव्यवस्था' को बिहार के पूर्व डीजीपी अभ्यानंद भी स्वीकार करते हैं।



# सीतारमण 49 साल बाद बजट पेश करने वाली देश की दूसरी महिला

निर्मला सीतारमण को 49 साल बाद बजट पेश करने वाली देश की दूसरी महिला हैं। सीतारमण देश की पहली पूर्ण कलिक वित्त मंत्री हैं। इससे पहले 28 फरवरी 1970 को देश की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने बजट पेश किया था। उनके पास वित्त मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार था।

सीतारमण ने नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का पहला बजट पेश किया। पिछली सरकार में अरुण जेट्टी के पास वित्त मंत्रालय था किंतु उनके अस्वस्थ होने और मंत्रिमंडल में शामिल होने से इंकार करने पर इस बार सीतारमण को वित्त जैसे प्रमुख मंत्रालय का कार्यभार सौंपा गया।

सीतारमण बजट पेश करने वाली पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री भी बन गई हैं। इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी बजट पेश करने वाली पहली महिला थीं लेकिन उस समय उनके पास प्रधानमंत्री पद के साथ वित्त मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार था। गांधी ने 28 फरवरी 1970 को वित्त मंत्री के रूप में पहला बजट पेश किया था। वर्ष 2000 से पहले आम बजट संसद में फरवरी माह के अंतिम कारोबारी दिवस को शाम पांच बजे पेश किया जाता था। वर्ष 2001 में अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में बजट का समय बदला गया और इसे पहली बार दिन में 11 बजे पेश किया गया। यह बजट वित्त मंत्री यशवंत सिन्धा ने पेश किया था। स्वतंत्र भारत के पहले वित्त मंत्री आर के शनमुखम चेहरे 1947-1949 रहे। पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत मोरारजी देसाई देश के सबसे अधिक समय तक वित्त मंत्री रहे। वह सबसे पहले 1959 से 1964, फिर 1967 से 1970 तक वित्त मंत्री के पद पर रहे। इसके बाद 1977 से 1979 के दौरान भी वह इस पद पर रहे। सबसे अधिक बजट पेश करने का श्रेय भी स्वपीय मोरारजी देसाई को ही है। उन्होंने कुल दस बजट पेश किए जिसमें 8 पूर्ण और 2 अंतिरिक्त बजट थे।

## मिडिल वलास से किसान तक किसे क्या मिला

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा शुक्रवार को लोकसभा में पेश किए गए वित्त वर्ष 2019-20 के अपने बजट भाषण में कहा कि हालिया चुनाव में एक आर्कषक और मजबूत भारत की उम्मीदें लहरा रही थीं और लोगों ने एक ऐसी सरकार को चुना जिसने काम कर के दिखाया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जनतात्रिक गठबंधन (राजग) ने अपने पहले कार्यकाल में 'न्यू इंडिया' के लिए काम शुरू कर दिया था। अब इन कार्यों की रफ़तार बढ़ाई जाएगी और आगे चलकर लालफीताशाही को और कम किया



जाएगा। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने पहले कार्यकाल में काम को पूरा कर के दिखाया। आम चुनाव में मतदाताओं ने काम करने वाली सरकार के पक्ष में मत दिया। उन्होंने कहा कि हमने अंतिम छोर तक कार्यक्रमों को पहुंचाया। अब कार्यक्रमों की रफ़तार तेज़ की जाएगी और लालफीताशाही को कम किया जाएगा। बजट में देश के तीन करोड़ खुदरा कारोबारियों और दुकानदारों को पेंशन सुविधा के तहत लाने की भी घोषणा की गयी है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने अपने पहले बजट में मध्यम वर्ग, युवाओं, महिलाओं समेत सभी वर्गों के लिये विभिन्न योजनाओं का प्रस्ताव किया है। आइये देखते हैं किसको क्या मिला?

## मिडिल वलास

45 लाख रुपये तक के मकान खरीदने पर अतिरिक्त 1.5 लाख रुपये के ब्याज पर कर लाभ। यानी अब 3.50 लाख रुपये के ब्याज पर कर छूट का लाभ मिलेगा।

आयकर रिटर्न भरना सुगम हुआ। पैन कार्ड नहीं होने पर भी आधार के जरिये आयकर रिटर्न भरा जा सकेगा।

इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने के लिये लिये गये कर्ज पर 1.5 लाख रुपये ब्याज भुगतान पर अतिरिक्त आयकर छूट।

## युवा

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को दुनिया की बेहतरीन शिक्षा प्रणाली बनाने के लिये नई शिक्षा नीति लाने का प्रस्ताव।

शोध के वित्त पोषण, समन्वय तथा उसे बढ़ावा देने के लिये नेशनल रिसर्च फाउंडेशन के गठन का प्रस्ताव।

भारत को वैश्विक उच्च शिक्षा का केंद्र बनाने के लिये विदेशी छात्रों को यहां पढ़ाई के लिये आकर्षित करने को लेकर 'भारत में अध्ययन कार्यक्रम की शुरूआत।

शैक्षणिक संस्थानों को अधिक-से-अधिक स्वायत्ता प्रदान करने और शैक्षणिक परिणामों पर ध्यान देने को लेकर को लेकर भारतीय उच्च शिक्षा आयोग गठित करने का प्रस्ताव।

खेलों इंडिया कार्यक्रम के तहत खेलों को लोकप्रिय बनाने तथा खिलाड़ियों के विकास के लिये राष्ट्रीय खेल शिक्षा बोर्ड के गठन का प्रस्ताव।

विदेशों में युवाओं के रोजगार के लिये तैयार करने को लेकर कृत्रिम मेधा, इंटरनेट आफ थिंग, बिग डेटा जैसे क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण पर जोर दिया जाएगा।

## महिला

महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन। महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) ब्याज सहायता कार्यक्रम का विस्तार हर जिले में करने का प्रस्ताव।

एसएचजी से जुड़ी प्रत्येक सत्यापित उन महिलाओं को 5,000 रुपये की ओवरड्रॉफ्ट सुविधा देने का प्रस्ताव जिनके पास जनधन खाता है।

मुद्रा योजना के तहत प्रत्येक स्वयं सहायता समूह की एक महिला एक लाख रुपये तक के कर्ज लेने के लिये पात्र होंगी।

ये भी पढ़ें: गांव, गरीब और किसान के लिए क्या? जानें मोदी सरकार के बजट की अहम बातें

## छाटे व्यापारी

डेढ़ करोड़ रुपये के कारोबार वाले तीन करोड़ खदान व्यापारियों और दुकानदारों को प्रधानमंत्री कर्म योगी मानन्द योजना के तहत मिलेगा पेशें।

एमएसएमई के लिये भुगतान मंच के गठन का प्रस्ताव। इससे वे समय पर बिल भर सकेंगे और भुगतान प्राप्त कर सकेंगे। इससे भुगतान में देरी की समस्या समाप्त होगी।

ब्याज सहायता योजना के तहत 350 करोड़ रुपये का आवंटन। जीएसटी पंजीकृत सभी एमएसएमई को नये कर्ज पर दो प्रतिशत ब्याज सहायता मिलेगी।

## किसान

मत्स्यन के क्षेत्र में मूल्य श्रृंखला में कमी को पूरा करने के लिये प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत मत्स्यन के क्षेत्र में मजबूत प्रबंधन व्यवस्था स्थापित करने का प्रस्ताव।

सहकारिता के जरिये दूध और उसके उत्पादों का उत्पादन, भंडारण और वितरण के कारोबार को प्रोत्साहन। दूध खरीद, प्रसंस्करण और विपणन के लिये बुनियादी ढांचा के सूजन पर जोर।

10,000 नये किसान उत्पादक संगठन बनाने का प्रस्ताव। इससे अगले पांच साल में किसानों को पैमाने की मितव्यता का लाभ मिलेगा।

पायलट आधार पर चल रही 'जीरो बजट खेती' को देश के अन्य भागों में लागू करने का प्रस्ताव।

## सीतारमण ने बदली 159 साल पुरानी ब्रीफकेस की परंपरा

देश की पूर्णकालिक पहली महिला वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल का पहला बजट पेश करने के दौरान 159 साल पुरानी परंपरा को बदल दिया। वित्त मंत्री लोकसभा में बजट पेश करने के लिए जब अपने मंत्रालय से बाहर आईं तो उनके हाथ में इस मौके पर पहले के वित्त मंत्रियों के हाथ में नजर आने वाला लाल या काले रंग का ब्रीफकेस नहीं बल्कि लाल रंग का अशोक संसंभ वाला मखमली कपड़े का एक पैकेट था जिसमें बजट रखा हुआ था।

## यह बजट नहीं बही-खाता है

मुख्य आर्थिक सलाहकार के सुब्रमण्यन ने ब्रीफकेस की जगह बजट को लाल रंग के कपड़े में लाने का कारण बताया। उन्होंने कहा, यह भारतीय परंपरा है और पश्चिमी विचारों की गुलामी से निकलने का प्रतीक। यह बजट नहीं बही-खाता है।

## ब्रीफकेस का रोचक इतिहास

वास्त तब में बजट फ्रांसीसी शब द ह्यॉगेटीहू से निकला हुआ है, जिसका मतलब लेदर बैग होता है। 1860 में ब्रिटेन के ह्यांसलर ऑफ दी एक सचेकर चीफ़्ल विलियम एवर्ट र लैड्स टन फाइनेंशियल एपर्स के बंडल को लेदर बैग में लेकर आए थे। यह बैग उन्हें खुद ब्रिटेन की महारानी ने ग्लैडस्टन को दिया था। इसमें बजट से संबंधित तमाम दस्तावेज थे, जिन पर महारानी का



सोने में मोनोग्राम था।

बिटेन में रेड ग्लैडस्टन बजट बॉक्स 2010 तक प्रचलन में रहा इसके बाद इसे म्यूजियम में रख दिया गया। अब इसकी जगह एक नए लाल लेदर बजट बॉक्स का इस्तेमाल किया जाता है।

## आजाद भारत का पहला बजट चमड़े के बैग में पहुंचा था संसद

आजाद भारत का पहला आम बजट 26 नवंबर 1947 को तत्कालीन वित्त मंत्री आर के शनमुखम चेट्टी ने पेश किया था। वह अपने बजट दस्तावेज को चमड़े के बैग में रखकर संसद भवन पहुंचे थे। कई सालों तक देश के तमाम वित्तमंत्री इसी तरह के बैग में बजट दस्तावेज लेकर पहुंचे।

कभी लाल तो कभी काले रंग में रंगा बजट बैग भारत में बजट सूकेस के कलर और शेड्स में अंतर आता रहा। 1958 में बजट पेश करने सदन पहुंचे जवाहर लाल नेहरू के हाथ में भी काला ब्रीफकेस नजर आया था। हालांकि मोरारजी देसाई और कृष्णमचारी बजट को फाइल में लेकर के गए थे। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 1991 में बजट पेश किया तो वह काला बैग लेकर पहुंचे थे। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने ग्लैडस्टन जैसे रेड बजट बॉक्स का उपयोग किया था।

पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली के हाथों में ब्राउन और रेड ब्रीफकेस दिखा था। इस साल अंतरिम बजट पेश करने वाले कार्यवाहक वित्त मंत्री पीयूष गोयल ने बजट दस्तावेज के लिए लाल ब्रीफकेस का चुनाव किया था।

## बजट में किफायती मकान पर जोर, घर खरीदारों को मिलेगा ब्याज में छूट का लाभ

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 45 लाख रुपये मूल्य तक का अपना पहला घर खरीद खरीदने वाले व्यक्तियों को चालू वित वर्ष के दौरान मंजूर बैंक कर्ज पर ब्याज पर 3.5 लाख रुपये तक के ब्याज पर कर में कटौती की छूट दी है। इस कदम से सर्वे आवास क्षेत्र को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। फिलहाल आवास रिंग के सालाना दो लोख रुपये तक के ब्याज पर कर में कटौती का लाभ मिलता है। वित्त मंत्री ने कहा कि किराये के आवास को बढ़ावा देने के लिए सुधारवादी कदम उठाए जाएंगे और

राज्यों के लिए किराया कानून का एक आदर्श प्रारूप तैयार कर जारी किया जाएगा। सीतारमण ने शुक्रवार को अपने पहले बजट में कहा कि सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएसएवाई)-ग्रामीण के तहत अगले दो साल में 1.95 करोड़ घर बनाएगी। आयकर अधिनियम के तहत किफायती आवास की परिभाषा को जीएसटी अधिनियमों के साथ सरेखित करने के लिए, सीतारमण ने महानगर क्षेत्रों में मकान के कारपेट एरिया की सीमा 30 वर्ग मीटर से बढ़ावा 60 वर्ग मीटर और गैर महानगर क्षेत्रों में इसे 60 वर्ग मीटर से 90 वर्ग मीटर तक बढ़ावे का प्रस्ताव किया है। किफायती घर की कीमत 45 लाख रुपये और उससे कम तय की गई है।

## सहिंडी खर्च 13.32 प्रतिशत बढ़कर 2 लाख करोड़ रुपए के पार

वित्त मंत्री ने 45 लाख रुपये तक की कीमत वाले किफायती आवास की खरीद के लिए 31 मार्च, 2020 तक लिए गए बैंक कर्ज पर अदा किए गए ब्याज के लिए 1,50,000 रुपये तक की अतिरिक्त कटौती की अनुमति देने का प्रस्ताव रखा है। इसका अर्थ है कि किफायती मकान खरीदने वाले वह यक्ति को आवास कर्ज पर अब 3.5 लाख रुपये तक के ब्याज पर कर-कटौती का लाभ मिलेगा। इससे मध्य यम वर्ग के मकान खरीदारों को 15 वर्षों की अपनी ऋण अवधि के दौरान लगभग 7 लाख रुपये का लाभ मिलेगा। उन्होंने कहा कि सरकार के सभी कार्यक्रमों के केंद्र में गांव, गरीब और किसान हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घरों के निर्माण की अवधि 2017-18 में प्रत्यक्ष लाभ अंतरण प्लॉटफार्म और प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से घटकर 114 दिन रह गई है। 2015-16 में इस योजना के तहत घरों के निर्माण में 314 दिन लगते थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के दूसरे चरण में 2019-20 और 2020-21 के दौरान पात्र लाभार्थियों को 1.95 करोड़ मकान दिए जाएंगे। इन घरों में बिजली, एलपीजी कनेक्शन और शौचालय उपलब्ध होगा। वित्त मंत्री ने कहा कि पिछले पांच साल में 1.54 करोड़ घर बनाए गए हैं। सीतारमण ने कहा कि बिजली कनेक्शनों और मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर योजना ने ग्रामीण भारत में बड़ा बदलाव ला दिया है।

# चनकी बुखार से 125 से ज्यादा बच्चों की मौत का जिम्मेदार कौन?



अखिलश कुमार

मुजफ्फरपुर जिले में मौत से जुड़े जो कारण सामने आ रहे हैं वो एक ऐसा विषय है अगर 100 बच्चों की मौत न हो तो आपका यही मीडिया उस पर तीस सेकेंड की भी खबर न दिखाए. मीडिया ही नहीं आप भी नहीं देखना चाहेंगे. जाहिर है आप भी कुपोषण पर चर्चा नहीं करना चाहेंगे क्योंकि आप तो मानते हैं कि वो लिखा जाए जिससे लगे कि कुछ हो रहा है. कुपोषण वौरह तो चलता ही रहता है. आप भी याद कीजिए कि कुपोषण और गरीबी को लेकर कब आपने न्यूज चैनल या अखबार में अधियान टाइम चर्चा या कवर स्टोरी देखी थी. अगर कोई करे तो क्या आप देखना चाहेंगे, अगर कोई इस सवाल को लेकर डिबेट करे कि फलां बीमारी को रोकने के लिए टीकाकरण ठीक से चल रहा है या नहीं तो क्या आप देखेंगे. शायद बहुत से दर्शक चैनल बदल लेंगे. फेसबुक से लेकर चैनलों में ज्यादातर लोग परेशान इस बात से हैं कि कोई कुछ बोल कर्मों नहीं रहा है. हम भावुक लोगों की भीड़ तलाश रहे हैं. जब वह भीड़ नहीं बनती है तो उत्तेजना शांत होने लगती है तब हम आखिरी कोशिश करने लगते हैं. मुख्यमंत्री कहां हैं, प्रधानमंत्री कहां हैं. सरकार कहां है. सच यही है कि किसी को फर्क नहीं पड़ता है. हम सबने इस तरह की परेशानी कई बार देख ली है. समस्या वहीं की वहीं हैं. सिस्टम वैसा का वैसा है. आधा अधूरा. अब पाठकों का समाज इस स्तर पर आ गया है वह किसी भी मुद्दे पर डिबेट चाहता है. यह उसकी अंतिम खालिश हो गई है. डिबेट कराइये. जैसे मेले में भैसा या

भी नहीं देखना व पढ़ना चाहेंगे. क्योंकि आप तो मानते हैं कि वो दिखाया या लिखा जाए जिससे लगे कि कुछ हो रहा है. कुपोषण वौरह तो चलता ही रहता है. आप भी याद कीजिए कि कुपोषण और गरीबी को लेकर कब आपने न्यूज चैनल या अखबार में अधियान टाइम चर्चा या कवर स्टोरी देखी थी. अगर कोई करे तो क्या आप देखना चाहेंगे, अगर कोई इस सवाल को लेकर डिबेट करे कि फलां बीमारी को रोकने के लिए टीकाकरण ठीक से चल रहा है या नहीं तो क्या आप देखेंगे. शायद बहुत से दर्शक चैनल बदल लेंगे. फेसबुक से लेकर चैनलों में ज्यादातर लोग परेशान इस बात से हैं कि कोई कुछ बोल कर्मों नहीं रहा है. हम भावुक लोगों की भीड़ तलाश रहे हैं. जब वह भीड़ नहीं बनती है तो उत्तेजना शांत होने लगती है तब हम आखिरी कोशिश करने लगते हैं. मुख्यमंत्री कहां हैं, प्रधानमंत्री कहां हैं. सरकार कहां है. सच यही है कि किसी को फर्क नहीं पड़ता है. हम सबने इस तरह की परेशानी कई बार देख ली है. समस्या वहीं की वहीं हैं. सिस्टम वैसा का वैसा है. आधा अधूरा. अब पाठकों का समाज इस स्तर पर आ गया है वह किसी भी मुद्दे पर डिबेट चाहता है. यह उसकी अंतिम खालिश हो गई है. डिबेट कराइये. जैसे मेले में भैसा या

भेड़ा लड़ाते हैं, वैसे डिबेट कराइये .कुलमिलाकर भावुकता भरी रिपोर्टिंग में आप दर्द के अहसास से रू-ब-रू तो हो जाते हैं मगर तुरंत आप उसे भूल भी जाते हैं. तभी तो आप भूल गए कि 2014 में 139 बच्चों की मौत हुई थी. तभी आपको याद नहीं आया कि डॉ. हर्षवर्धन तो इस अस्पताल में 2014 में भी गए थे, 2019 में भी गए. 2014 में 20 से 22 जून तक डॉ. हर्षवर्धन मुजफ्फरपुर में ही रहे थे. इस दौर के बारे में 2014 में डॉ. हर्षवर्धन ने फेसबुक पर विस्तार से लिखा था जो अभी भी मौजूद है. उसके कुछ दिनों बाद वे स्वास्थ्य मंत्री पद से हटा दिए गए और उनकी जगह जो पी नड़ा आ गए. सवाल यह पूछा जाना चाहिए कि इन पांच सालों में केंद्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मुजफ्फरपुर को लेकर क्या किया. उन घोषणाओं पर क्यों नहीं अमल किया जो कई सरों की बैठकों के बाद किए गए थे. 2014 में हर्षवर्धन ने कहा था कि 100 फीसदी टीकाकरण होना चाहिए. कोई बच्चा टीकाकरण से नहीं छूटना चाहिए. जल्दी ही यहां 100 बिस्तरों वाला बच्चों का अस्पताल बनाया जाएगा. पांच साल बाद वही हर्षवर्धन जब दोबारा स्वास्थ्य मंत्री बने हैं तो वही सब दोहरा रहे हैं. कहा है 100 बिस्तरों वाला बच्चों का

अस्पताल !

पांच साल में स्वास्थ्य विभाग सोया रहा

100 करोड़ का 100 बिस्तरों वाला बच्चों का अस्पताल बनेगा। उस वक्त डॉ. हर्षवर्धन ने एलान किया था कि या, भागलपुर, बेतिया, पावापुरी और नालंदा में विरोलॉजिक डायग्नोस्टिक लैब बनाया जाएगा। मुजफ्फरपुर और दरभंगा में दो उच्च स्तरीय रिसर्च सेंटर बनाए जाएंगे। यही नहीं मेडिकल कालेज की सीट 150 से बढ़ाकर 250 कर दी जाएगी। यदि रखिएगा जून 2014 में 139 बच्चों की मौत हुई थी। पांच साल बाद डॉ. हर्षवर्धन यही सब कह रहे हैं, लैब बनेगा, अस्पताल बनेगा। पांच साल पहले इन तमाम बैठकों के फैसले पर अमल हुआ होता तो 100 बच्चों की मौत नहीं होती।

डॉ. हर्षवर्धन को 2014 की बात 2019 में भी कहनी पड़ रही है। केंद्र के स्वास्थ्य मंत्रालय से पूछा जाना चाहिए कि 2014 में स्वास्थ्य मंत्री ने जो एलान किया था उस पर क्या कदम उठाए गए। कोई कदम क्यों नहीं उठाए गए। अगर इसमें केंद्र के मंत्री का रोल नहीं है तो फिर वे दौरा करने के बाद घोषणा क्यों करते हैं। क्या उन्होंने मीडिया में ही एलान किया था, ऐसा तो

दिल्ली से लेकर भारत के दूसरे शहरों में कुल 9 ब्रांच हैं। इन सभी ब्रांचों में ब्रांचों में मिलाकर वैज्ञानिकों और हर स्तर के अधिकारियों कर्मचारियों की कुल संख्या 434 ही है। भारत की आबादी है एक अरब से अधिक। कितनी महामारियां फैलती हैं। इस हिसाब से यह संख्या कितनी कम है। इसका बजट भी मात्र 233 करोड़ है। यह सब जानकारी एनसीडीसी की वेबसाइट से ली है। अब आइये महामारियों से लड़ने वाली दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित बड़ी संस्था सीडीसी की बात करते हैं। सीडीसी यानी सेंटर फार डिजिल कंट्रोल। अमेरिका के अटलांटा में है। इसका बजट सुनकर ही आप बेहोश हो जाएंगे। इस अकेली संस्था का बजट 2018 के लिए 11.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर है। भारतीय रुपयों में 77,000 करोड़। भारत के स्वास्थ्य बजट से भी ज्यादा है एक सेंटर का बजट। भारत का स्वास्थ्य बजट 52 हजार करोड़ है। अब आपको समझ आ जाएगा कि हम महामारियों से लड़ने के नाम पर चूने और फिटकरी का छिड़काव ही कर पाते हैं, यही बहुत है। भारत की संस्था नेशनल सेंटर फार डिजिज कंट्रोल में 500 कर्मचारी भी काम नहीं करते होंगे लेकिन अटलांटा के सीडीसी में 10



लगता नहीं। फिर इसका जवाब कौन देगा कि पांच साल में बिहार में वाइरोलॉजिकल लैब क्यों नहीं बने। मुजफ्फरपुर में 100 बिस्तरों वाला अस्पताल क्यों नहीं बना। केंद्र भूल गया तो राज्य सरकार क्या कर रही थी। 2015 से 17 के बीच भी इस जिले में मौतें होती रहीं भले ही संख्या 50 से कम थी। बिहार के स्वास्थ्य मंत्री क्या कर रहे थे। बिहार के मुख्यमंत्री क्या कर रहे थे। एक महीने से वहां नहीं गए लेकिन पटना में ही रहते हुए मुजफ्फरपुर के गरीब बच्चों के लिए क्या किया। मुजफ्फरपुर की जनता ने अपने लिए क्या किया। कभी किसी से पूछा। बिहार सरकार बता सकती है कि 2014 में 139 बच्चों की मौत के बाद उसे तीन साल का वक्त मिला था, उसने क्या किया। बिहार सरकार ने 100 बच्चों की मौत को रोकने के लिए क्या किया।

डॉ. हर्षवर्धन बिहार में पांच विषाणु जांच केंद्र बनाने की बात कर रहे हैं। सबसे पहले डॉ हर्षवर्धन यही बता दें कि केंद्र सरकार की जो ऐसी संस्थाएं हैं उनमें कितने स्टाफ हैं। नेशनल सेंटर फार डिजिज कंट्रोल जैसी संस्था में पर्याप्त स्टाफ है। हमने इसकी वेबसाइट चेक की।

मेहनत से की गई ऐसी रिसर्च के नीजे सिर्फ़ फाइलों में दबाकर रखने के लिए हैं। रिसर्चर सिर्फ़ रिसर्च कर सकते हैं। उस पर अमल करने की जिम्मेदारी स्वास्थ्य महकमे की है चाहे वो केंद्र सरकार का हो या फिर राज्य सरकार का। दरअसल हमारी अधिकतर अफसरशाही को अपने वैज्ञानिकों और रिसर्चर्स के काम की मौत का अंदाजा ही नहीं है। वो उनकी सिफारिशों को समाचार बात मानकर उन्हें पढ़ना या समझना भी जरूरी नहीं मानते।

फिर कैसे बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने ट्वीट कर दिया कि इस बीमारी का इलाज नहीं है। उन्होंने ट्वीट कर दिया कि अमेरिका के पास भी इलाज नहीं है। प्रिवेशन यानी रोकथाम भी इलाज माना जाता है, एक और बात। महामारियां जब फैलें तो कारणों का पता लगाने, साक्ष्य जुटाने, रिसर्च करने, रोकने के उपाय बताने के लिए अटलांटा के सीडीसी में एक पद होता है। एपिडेमिक इंटीलिजेंस आफिसर का। जब हमारे मित्र डॉक्टर ने यह बात बताई तभी ध्यान गया कि देखा जाए कि हम भारत में ऐसी महामारियों के लिए क्या कर रहे हैं। बहरहाल डॉ हर्षवर्धन अपने मंत्रालय की इन संस्थाओं का हाल पता कर ले और अपनी तरफ से ही मीडिया को ट्वीट कर बता दें, कितना बजट है, कितना स्टाफ है और क्या हाल है। मंत्री खुद बता दें क्योंकि मीडिया में खासकर न्यूज चैनलों में ऐसे बोरिंग विषयों की रिपोर्टिंग नहीं होती है। तभी होती है जब 100 बच्चे मर जाते हैं।

मुजफ्फरपुर के श्री कृष्ण मेडिकल कालेज अस्पताल में जहां 100 से अधिक बच्चों की मौत हुई है वहां 50 बिस्तरों की आई सी यू है। पांच साल में इस अस्पताल की क्षमता इतनी ही बढ़ी है। आप इन तस्वीरों को देखकर भावुक न हों। यही हाल ज्यादातर सरकारी अस्पतालों का है। दिल्ली का टिव्वटर क्लास अगर अपने बच्चों को जमीन पर बैठा देख लेगा तो इंडिया शेम-शेम करने लगेगा। हिन्दी का क्लास चुप-चाप मर जाता है और भारत पर मरने के बाद भी गवं करता है। ये अंतर है। आलम यह है कि बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील मोदी ने बयान जारी किया है कि बजट से पहले जो बैठक होगी उसमें केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से इसके लिए बजट मांगेंगे। जाहिर है राज्य सरकार ने अपनी तरफ से कुछ खास नहीं किया होगा या उसके पास पैसा नहीं होगा। अब केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री प्राइमरी हेल्थ सेंटर में एक साल में 10-10 बिस्तरों वाला आईसीयू बनाने की बात कर रहे हैं। यानी 160 बिस्तरों की आईसीयू। इसी महीने 2020 में उनके इस दावे की जांच कर लीजिएगा। हमारी जानकारी के अनुसार मुजफ्फरपुर में 16 प्राइमरी हेल्थ सेंटर हैं। सिविल सर्जन शैलेष प्रसाद सिंह ने कहा कि प्राइमरी हेल्थ सेंटर में दो-दो बिस्तरों के आईसीयू बनाए गए हैं, तो फिर सारे मरीज मुजफ्फरपुर क्यों आ रहे हैं। क्या जो मरीज यहां आ रहे हैं उन्हें इन प्राइमरी हेल्थ सेंटर पर गाइडलाइन के हिसाब से उपचार मिला है। यही नहीं टीकाकरण भी 76 पर्सेंट हो सका। 100 फीसदी नहीं हुआ।

नेशनल सैपल सर्वे के अनुसार बिहार में 3000 प्राइमरी हेल्थ सेंटर होने चाहिए, पर हैं मात्र 1883। इतनी कमी है। क्या ये ठीक होगा। भारत में पब्लिक हेल्थ पर काम करने वाले कई डॉक्टर इस विषय पर शोध कर रहे हैं। उन सबसे ऑफ रिकार्ड बातचीत हुई। कइयों के रिसर्च ऐपर पढ़े। जो इंटरनेट पर आपके लिए भी उपलब्ध

हैं। उन्हें पढ़ने के बाद यही लगा कि बिहार के 100 बच्चों की मौत नहीं हुई, उनकी हत्या हुई है। अगर सिस्टम मुस्तैद रहता तो गरीब परिवारों में बच्चों की मौत नहीं होती। क्या गरीबी एक कारण है? बिल्कुल है। गरीब हैं तभी तो सिस्टम ढीला पड़ गया। गरीब हैं तभी तो इनके बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। तभी तो इनकी मौत हुई है। अब आपने सुना कि लीची खाने से मौत हुई है। कई लोगों ने हंसा। उन्होंने सही किया। वे हंसते ही तो आ रहे हैं। रोने से तो कई फायदा भी नहीं। मेडिकल जर्नल है लासेट। दुनिया में इसकी अपनी प्रतिष्ठा है। इसके लिए अरुण शाह और टी जेकब जॉन ने एक रिसर्च पेपर लिखा था जो 31 मार्च 2017 को छपा था। दोनों 2012 में बिहार गए थे जब 178 बच्चों की मौत हो गई थी।

जेकब जॉन और अरुण शाह का पेपर बताता है कि मुजफ्फरपुर में होने वाली मौत का संबंध लीची से है। गरीबी से है और कुपोषण से है। इन्होंने 2012 में रिकॉर्ड देखा तो पता चला कि ज्यादातर बच्चों को सुबह के 6 से 7 बजे के बीच दौरे पड़ते हैं। दौरे पड़ने का मतलब साधारण ज़्बान में यह हुआ कि बच्चों का दिमाग सून-

तो कुछ नहीं होगा। लेकिन कुपोषण का शिकार बच्चा खाएगा तो उसके लिए धातक हो सकता है।

जब संवाददाताओं ने मुजफ्फरपुर के अस्पताल में भर्ती मरीजों और डॉक्टरों से लीची को लेकर सवाल पूछा। तो पता चला कि 100 में से 88 लोगों ने माना कि बच्चे ने लीची खाई है। अप्रैल, मई, जून के समय का संबंध लीची से है और इनका संबंध गरीबी, कुपोषण से है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे जो 2015-16 में हुआ था उसके अनुसार बिहार में 5 साल के 44 फीसदी बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। आप सोच सकते हैं कि कितनी गरीबी है। भारत का राष्ट्रीय औसत 36 फीसदी है। दुनिया में सबसे अधिक कुपोषण के शिकार लोग भारत में रहते हैं। 117 मुल्कों में हमारा स्थान 103 है। तो लीची में खराबी नहीं है खराबी है बिहार की गरीबी में, उसके सिस्टम में। अरुण शाह और टी जेकब ने अपने रिसर्च में बताया था कि 2012 में मरने वाले बच्चे फूड बेस्ट टॉक्सिस के कारण इनफेलाइटिस की चपेट में आ गए। लखनऊ के डॉ मुकुल दास ने बताया कि लीची कारण हो सकता है क्योंकि जमैका में भी लीची की तरह का एक फल है जिसमें इस तरह के



होने लगा। होता यह है कि लीची सुबह 4 बजे तोड़ी जाती है। तोड़ने वाले गरीब मजदूर होते हैं। रात को कम खाया होता है। खाली पेट मां बाप और बच्चे पहुंच जाते हैं और लीची तोड़ते वक्त खा लेते हैं। जब कमज़ोर शरीर वाला और खाली पेट वाला बच्चा लीची खाता है तो वह एक्यूट एंसिफलाइटिस की चपेट में आ जाता है। वैसे इसे एंसीफलोपैथी भोलते हैं। दिमागी बीमारी के लिए इस शब्द का इस्तेमाल होता है। ध्यान रखिए कि फलाइटिस और पैथी में अंतर होता है। लीची में एक ऐसा तत्व होता है जो कुपोषण वाले खाली शरीर में ग्लूकोज का बनना बंद कर देता है। ग्लूकोज बंद होते ही दिमाग काम करना बंद कर देता है और तेजी से ब्रेन के बाद लीवर पर असर होता है। बच्चा मर जाता है। रिसर्च में यह सुझाया गया है कि अगर बच्चे को तुरंत ही ग्लूकोज दिया जाए तो उसे बचाया जा सकता है। ग्लूकोज देने से शरीर में इंसूलिन बनने लगता है और वह ब्रेन यानी दिमाग में ग्लूकोज बनाने वाले तत्वों को सक्रिय कर देता है। यह बात पब्लिक में है। यही लीची जब स्वास्थ्य शरीर का कोई भी खाएगा तो उसे कुछ नहीं होगा। हम आप खाएंगे

लक्षण देखे गए हैं। शायद इसलिए जमैका के अखबार जमेकन आब्जर्वर में भी मुजफ्फरपुर में लीची से हुई मौत पर रिपोर्ट लियी है। इंडिपेंडेंट अखबार से हमें 2014 की एक रिपोर्ट मिली जिसमें जमैका और मुजफ्फरपुर में हुई मौत के बीच एक समानता पाई गई है। वहां लीची जैसी फसल को एकी (बाम) कहते हैं, जिससे एक्यूट एंसिफलोपैथिक डिजिज फैला था। एकी और लीची में एक ही तरह का टॉक्सिक पाया जाता है। दोनों ही जगह खाए-पीए बच्चों में इस फल का कोई असर नहीं हुआ। उड़ीसा और सहारनपुर में भी खाने में जहरीली तत्व होने के कारण इस तरह की मौत की घटना हो चुकी है। 2016 में ओडिशा के मलकानगरी में 100 से अधिक बच्चों की मौत हो गई थी। वहां भी देखा गया कि एक खास तरह के पौधे के बीज खाने से ब्रेन में ग्लूकोज का बनना बंद हुआ और बच्चे मरने लगे। वहां पर इसे लेकर जागरूकता फैलाई गई और अब वहां से ऐसी कोई सूचना नहीं है। टी जेकब जॉन ने सहारनपुर एंसिफलाइटिस का नाम दिया है। यानी उसके कारण और कैरेक्टर अलग थे। मुजफ्फरपुर एंसिफलाइटिस का नाम

दिया है क्योंकि यहां कारण लीची है। इन वैज्ञानिकों ने बिहार के स्वास्थ्य मंत्रालय को सलाह भी दी थी कि ऐसे वक्त में क्या क्या करना चाहिए। क्या उन पर कदम उठाया गया, उठाया गया होता तो 100 से अधिक बच्चों की मौत क्यों होती। टी जेकब जॉन ने अपने एक रिसर्च पेपर में लिखा है।

हेल्थकेयर में जांच के गलत नतीजे या इलाज के गलत तरीके को चिकित्सा में लापरवाही माना जाता है। पब्लिक हेल्थ यानी लोक स्वास्थ्य में गलत मैनेजमेंट को लापरवाही माना जाता है। इसके कारण जो मौत होती है उसे हत्या समझा जाना चाहिए। राज्य सरकार के अधिकारी मानते हैं कि महामारी होने पर जांच की जिमेदारी केंद्र सरकार की होती है। दिल्ली में माना जाता है कि स्वास्थ्य राज्य का विषय है। राज्य का काम है जांच करे और बीमारी की रोकथाम करे। दुर्भाग्य यह है कि इसके शिकार लोग होते हैं। उनकी आवाज कहीं नहीं होती है।

मैं यह सब इसलिए नहीं बता रहा कि सरकार या सिस्टम या समाज शर्म करे। यह सबको पता है कि कुछ दिनों बाद सब सामाज्य हो जाएगा। एक तरीका यह हो सकता है कि सभी लीची बागान में बिहार सरकार एक बोर्ड लगा दे या बोर्ड लगाना अनिवार्य करा दे कि सुबह के वक्त लीची तोड़ने आए बच्चों को खाली पेट खाने से मना करें। उनके परिवार को समझाएं। दूसरा सरकार कुपोषण दूर करने का काम करे। भारत विश्व गुरु ने वक्तास रूम में बैठे इन बच्चों की निगाह लीची पर ही रहेगी जो उनकी मौत का इंतजार कर रही होगी। सोचिए बिहार के सौ बच्चों को खड़ा करेंगे तो 44 बच्चे आपको कुपोषण के शिकार मिलेंगे। क्या अच्छा लगेगा? ठीक है कि इन मसलों पर चुनाव नहीं होते हैं लेकिन जनता ने कहां कहा है कि चुनाव के बाद उसे इस कारण मार दिया जाए। डाक्टरों पर दबाव रहता है। ऐसे वक्त में वे सरकार की ही बात करेंगे। उन्हें भी पता है कि पर्याप्त सिस्टम नहीं है। जागरूकता के लिए कर्मचारी कहां हैं और कौन है? जिस तरह के आर्थिक रूप से कमज़ोर तबके में बच्चों की मौत हुई है वहां तो घर घर जाकर जागरूकता फैलानी होगी। बताना होगा कि खाली पेट लीची न खाएं, मिड डे मिल और आंगनबाड़ी का दायरा बढ़ाना होगा। कुपोषण का होना बता रहा है कि दोनों योजनाएं फेल हैं। फेल है तभी तो श्री कृष्ण अस्पताल में मरने वाले बच्चे पूर्वी चंपारण से आए हैं। समस्तीपुर से आए हैं। बगुसराय से आए हैं। मुजफ्फरपुर से तो आए ही हैं। चार चार चार जिलों से मरीज एक अस्पताल में पहुंचे तो सोचिए हेल्थ सिस्टम की क्या हालत है। निधि, शहनाज, अस्मिन खातून, शलवानी कुमारी, सुगंगति कुमारी, समरीन परवीन, खुशी कुमारी, शितांशु कुमारी, नीतू कुमारी, अनिशा कुमारी, शंकर कुमार, इंदल कुमार, प्रह्लाद कुमार, वीतू कुमारी, सुहानी खातून, प्रीति कुमारी, गुजन, निशा कुमारी, अनुष्मा कुमारी, तरन्नुम, संजीत कुमार, विकास कुमार, विक्रांत कुमार, सबिस्ता परवीन, सन्नी कुमार, आलोक कुमार, गोनौर कुमार, निधि कुमारी, सीता कुमारी, मुस्कान कुमारी, सोनाती खातून, साहिदा खातून, अंजली कुमारी, स्वाति, ज्योति कुमारी, चांदनी कुमारी, सोनू कुमार, आयुष कुमार, गुंजा कुमारी, राजा बाबू, कहानी कुमार, गुड़िया, रवीना कुमारी, फरजाना खातून, हम सबका नाम नहीं ले सकते हैं।

# सफलता प्राप्त करने की कोई उम्र नहीं होती : विकास वैभव

प्रतिभा सम्मान समारोह में जमुई पहुंचे डीआईजी

विकास वैभव ने शास्त्रों-उपनिषदों से उदाहरण देकर बच्चों को प्रेरित किया

छात्र जीवन में बैलेंड लाइफ जरूरी है : जमुई एसपी जे. रेण्टी

बिधुरंजन उपाध्यक्ष/जमुई

जमुई के आबोहवा की रंगत ही अलग नजर आ रही थी। अन्य दिनों की अपेक्षा उत्साह चर्मोत्कर्ष पर थी। कारण था कि भागलपुर प्रक्षेत्र एवं मुगेर प्रक्षेत्र (अतिरिक्त प्रभार) के डीआईजी विकास वैभव भगवान महावीर की धरती जमुई में मौजूद थे। वे यहाँ प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वैलफेर एसोसिएशन जमुई द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित होने आए थे। डीआईजी विकास वैभव ने सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को सम्मानित किया और उन्हें जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम को हमारे लिए कवर किया जमुई से सुशान्त साई सुन्दरम एवं बिधुरंजन उपाध्याय ने।



शहर के शिल्पा विवाह भवन में मौजूद एसोसिएशन के पदाधिकारियों, सदस्यों, शिक्षक-शिक्षिकाओं के बीच अलग सी गहमगाहमी थी। विशेषकर छोटे-छोटे स्कूली बच्चों का उतावलापन देखने योग्य था। आज सभी उस पल के गवाह बनने को आतुर थे जब उनके रोल मॉडल कड़क, बच्चों के प्यारे युवाओं के गुरु डीआईजी विकास वैभव उनके बीच आकार अपने आशीर्वचनों से सभी को अनुगृहीत करने वाले थे। घड़ी की सुरुईयों के 4 पर जाते ही एसोसिएशन के अधिकारी मुख्य द्वारा पर जम गए। वहाँ स्कूली बच्चों का बैंड पहल से ही खड़ा था। कुछ ही समय बाद जमुई एसपी जगन्नाथरेण्टी जलारेण्टी डीआईजी विकास वैभव को लेकर कार्यक्रम स्थल शिल्पा विवाह भवन पहुंचे। जहाँ आयोजकों ने आगंतुकों को माला पहनाकर स्वागत किया। इसके बाद स्कूली बच्चों के बैंड ने उन्हें एक्स्कॉर्ट करते हुए मंच तक पहुंचाया। कहते हैं जब कुछ अच्छा होता है तो ईश्वर भी खुश होते हैं। शायद ऐसा ही नजारा देखने को मिला। डीआईजी विकास वैभव का कार्यक्रम स्थल से पहुंचने के ठीक 20 मिनट पहले ईश्वर खुश होकर बारिश करने लगे। हल्की फुहार वाली बारिश के बीच प्रतिभा सम्मान समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि डीआईजी विकास वैभव, सम्मानित अतिथि जमुई एसपी जे. रेण्टी, शिक्षाविद विनय अश्म, जिले के सुप्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. एस. एन. झा ने संयुक्त रूप से वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्वलित कर किया। जिसके बाद आवासीय रामकृष्ण विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गान की प्रस्तुति दी गई। एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर बच्चों ने मन मोह लिया। अतिथि सक्तकर का अनुपालन करते हुए एसोसिएशन के सदस्यों ने आगत अतिथियों को पुष्प गुच्छ, सृति चिन्ह एवं अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। भारतीय संस्कृति





में पगड़ी का बड़ा महत्व है। सम्मान देने के नजरिये से आदिकाल से ही पगड़ी पहनाई जाती रही है। इसी के महेनजर डीआईजी विकास वैभव, एसपी जे. रेण्टी सहित सभी अतिथियों को पगड़ी पहनाकर उनकी गरिमा को बढ़ाया गया। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष लक्षण झा ने डीआईजी विकास वैभव जबकि झाझी रिच लुक स्कूल के निदेशक अधिजीत सिंह ने एसपी जगन्नाथरेण्टी का सत्कार किया। पत्रकार बिधुरंजन उपाध्याय ने डीआईजी विकास वैभव को मोमेंटो प्रदान किया। साहित्यिक अंदाज में स्वागत भाषण देते हुए एसोसिएशन के जिला महासचिव विजय कुमार सिंह ने कहा कि श्री विकास वैभव बच्चों के प्रेरणास्रोत हैं। उनके व्यक्तित्व से लोगों को प्रेरणा मिलती है। उनका आना नौनिहालों के लिए सौभाग्य की बात है। मुख्य अतिथि डीआईजी विकास वैभव ने कहा कि बच्चों के बीच जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब भी में अपने आपको बच्चों और युवा विद्यार्थियों के बीच पाता हूँ तो मुझे भी वो समय याद आने लगता है जब एक बैंड कमरे में बैठकर किताबों के साथ मानसिक संघर्ष होता रहता था। कभी आगे रहते थे, कभी पीछे रहते थे। संघर्ष में अजीब-अजीब घड़ियां आती थी। कई बार लगता था टूट चुके हैं, लेकिन अगले पल कुछ रास्ता निकलने लगता था। अक्सर बच्चों के बीच मे समाज मे ये बात होती है कि जब बड़े हो जाओगे तब कुछ ऐसा करोगे। बहुत चीजों में बच्चों को रोका जाता है। अगर हम इतिहास देखेंगे तो जिनलोगों ने सबसे ज्यादा सफलता प्राप्त की या जिनको पूरा विश्व जानता है। कहीं न कहीं अपने बचपन के दिनों में ही उन्होंने निश्चय किया था कि अपने जीवन में क्या करना है और उस ध्येय को मन में लेकर पूरे जीवन चलते रहे। सफलता प्राप्त करने की कोई उम्मीद नहीं होती। आदि शंकराचार्य ने अपने जीवन में 3 बार सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा की। भारत के चारों कोनों में चार धाम के रूप में प्रसिद्ध चार मठ, अनेक स्थानों पर अनेक अवशेष हैं, अनेक पांपराएं हैं जो उनके द्वारा स्थापित हुईं। उन्होंने केवल 8 वर्ष की उम्र में सन्यास ले लिया था। छत्रपति शिवाजी महाराज को हर कोई जानते हैं। उन्होंने अपने जीवन में पहला किला

में पगड़ी का बड़ा महत्व है। सम्मान देने के नजरिये से आदिकाल से ही पगड़ी पहनाई जाती रही है। इसी के महेनजर डीआईजी विकास वैभव, एसपी जे. रेण्टी सहित सभी अतिथियों को पगड़ी पहनाकर उनकी गरिमा को बढ़ाया गया। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष लक्षण झा ने डीआईजी विकास वैभव जबकि झाझी रिच लुक स्कूल के निदेशक अधिजीत सिंह ने एसपी जगन्नाथरेण्टी का सत्कार किया। पत्रकार बिधुरंजन उपाध्याय ने डीआईजी विकास वैभव को मोमेंटो प्रदान किया। साहित्यिक अंदाज में स्वागत भाषण देते हुए एसोसिएशन के जिला महासचिव विजय कुमार सिंह ने कहा कि श्री विकास वैभव बच्चों के प्रेरणास्रोत हैं। उनके व्यक्तित्व से लोगों को प्रेरणा मिलती है। उनका आना नौनिहालों के लिए सौभाग्य की बात है। मुख्य अतिथि डीआईजी विकास वैभव ने कहा कि बच्चों के बीच जाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब भी में अपने आपको बच्चों और युवा विद्यार्थियों के बीच पाता हूँ तो मुझे भी वो समय याद आने लगता है जब एक बैंड कमरे में बैठकर किताबों के साथ मानसिक संघर्ष होता रहता था। कभी आगे रहते थे, कभी पीछे रहते थे। संघर्ष में अजीब-अजीब घड़ियां आती थी। कई बार लगता था टूट चुके हैं, लेकिन अगले पल कुछ रास्ता निकलने लगता था। अक्सर बच्चों के बीच मे समाज मे ये बात होती है कि जब बड़े हो जाओगे तब कुछ ऐसा करोगे। बहुत चीजों में बच्चों को रोका जाता है। अगर हम इतिहास देखेंगे तो जिनलोगों ने सबसे ज्यादा सफलता प्राप्त की या जिनको पूरा विश्व जानता है। कहीं न कहीं अपने बचपन के दिनों में ही उन्होंने निश्चय किया था कि अपने जीवन में क्या करना है और उस ध्येय को मन में लेकर पूरे जीवन चलते रहे। सफलता प्राप्त करने की कोई उम्मीद नहीं होती। आदि शंकराचार्य ने अपने जीवन में 3 बार सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा की। भारत के चारों कोनों में चार धाम के रूप में प्रसिद्ध चार मठ, अनेक स्थानों पर अनेक अवशेष हैं, अनेक पांपराएं हैं जो उनके द्वारा स्थापित हुईं। उन्होंने केवल 8 वर्ष की उम्र में सन्यास ले लिया था। छत्रपति शिवाजी महाराज को हर कोई जानते हैं। उन्होंने अपने जीवन में पहला किला

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता की पत्तियों के जिक्र करते हुए बच्चों को सदैव आगे बढ़ते रहने को कहा। एसोसिएशन के संरक्षक रामाकांत सिंह ने समारोह को संबोधित किया और स्कूली बच्चों को देश का भविष्य बताते हुए उनके स्वर्णिम भविष्य की कामना की।

प्रतिभा सम्मान समारोह को लेकर स्कूली बच्चों में विशेष उत्साह को देखते हुए प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन जमुई द्वारा प्रश्नोत्तर काल भी रखा गया जिसमें डीआईजी विकास वैभव एवं जमुई एसपी जे. रेण्टी ने बच्चों के सवालों के जवाब दिए। जमुई में ट्रैफिक और उसकी वजह से स्कूली बच्चों को होने वाली समस्यों के जवाब में एसपी ने कहा कि सड़कों के संकरे होने की वजह से जाम की समस्या होती है। इसका निदान भी जल्द निकाला जाएगा। कश्मीर को लेकर मचे बवाल से सम्बंधित एक प्रश्न के जवाब में डीआईजी विकास वैभव ने कहा कि इसमें कोई दोषाय नहीं कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा था, है और हमेशा रहेगा। जो इस मंसूबे में बैठे हैं कि वे कश्मीर को भारत से ले लेंगे, उन्हें सबक सिखाने और देश की रक्षा करने सेना के जवान दिन रात जुटे हैं। इसके बाद डीआईजी विकास वैभव और एसपी जगन्नाथरेण्टी जलारेण्टी ने दसवीं की बोर्ड परीक्षा में सफल बच्चों को प्रमाण पत्र देकर उन्हें सम्मानित किया और उनका हौसला बढ़ाया। छोटे-छोटे बच्चों ने मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देकर उपस्थित लोगों को दांतों तले अंगुली दबाने को विवश कर दिया। प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन जमुई के कोषाध्यक्ष बी. अभिषेक ने धन्यवाद जापन कर कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने के लिए आगंतुकों का से आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन जिरेंद्र कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम में बाल विकास विद्यालय के निदेशक विमल कुमार, गिर्दा सेंट्रल स्कूल के निदेशक अमर सिंह, झाझी रिच लुक के निदेशक अधिषेक सिंह, चकाई बड़मस्त पैराडाइज के निदेशक समीर दुबे, महात्मा गांधी पब्लिक स्कूल के राजेश कुमार पाठक सहित कई शिक्षक-शिक्षिका, अभिभावक एवं बच्चे उपस्थित रहे।



पुण्यतिथि पर विशेष

# आसान नहीं दिग्विजय होना

सुशांत साईं सुन्दरम/जमुई

दिग्विजय सिंह का नाम जुबां पर आते ही एक दिव्य चेहरा बरबस ही नजर के सामने आ जाता है। अपने निकटम लोगों के बीच दादा के नाम से पहचाने जाने वाले दिग्विजय सिंह ने राजनीति के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में अपनी पहचान विकास पुरुष के रूप में बनाई। बांका लोकसभा का प्रतिनिधित्व करने वाले पूर्व सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री दिग्विजय सिंह की भारतीय राजनीति पर विशेष पकड़ रही।

वर्ष 2010 में लंदन में ब्रेन हेमरेज से असमय काल-कवलित होने वाले बेहद लोकप्रिय शशिभ्यत दिग्विजय सिंह की नौवीं पुण्यतिथि 24 जून को जमुई के गिर्द्धार प्रखंड के कुंधुर पंचायत अंतर्गत नयागांव के नारी-नकटी कटहरा नदी तट पर स्थित उनके समाधि स्थल पर श्रद्धाभाव के साथ पारिवारिक सदस्यों, राजनेताओं, बुद्धिजीवियों, समाजसेवियों एवं उनके चाहनेवालों ने श्रद्धा-सुमन के पुष्प अर्पित कर मनाया।

## स्व. दिग्विजय सिंह की समाधि

अहले सुबह से ही साफ-सफाई व सजावट का कार्य शुरू हो गया था। सुगन्धित फुलों से दिग्विजय सिंह की समाधी व आदमकद प्रतिमा को सजाया गया। तकरीबन 7 बजे से ही लोगों का जुटना शुरू हो गया था। जमुई, झाज्हा, बांका, गिर्द्धार सहित दूर-दराज के इलाके के लोग अपने प्रिय नेता के पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि देने नयागांव पहुंचे। आगंतुकों द्वारा समाधि स्थल एवं दादा के आदमकद प्रतिमा पर पुराण्जलि अर्पित की गई। सभी ने उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व की चर्चा की और स्व. दिग्विजय सिंह को आदर्श बताया। इस मैके पर



स्व. दिग्विजय सिंह की पती एवं बांका की पूर्व सांसद पुतुल कुमारी मौजूद रहीं।

**स्व. दिग्विजय सिंह की पुण्यतिथि पर अपने संस्मरण साझा कर रहे हैं सुशांत साईं सुन्दरम् पढ़िए अक्षरशः** उनकी कलम से... दोपहर का ही समय रहा होगा। यही कोई 3-4 बजे के आसपास। गिर्द्धार के कुमार सुरेन्द्र सिंह स्टेडियम में किसी खेल का आयोजन चल रहा था। अब यह राज्यस्तरीय था या राष्ट्रस्तरीय यह ढंग से मुझे याद नहीं। शायद वर्ष 2004 या 2005 की यह बात है। हर दिन की तरह उस दिन भी मैं वहां होने वाली स्थाओं को देखने जा पहुंचा था।

छोटा होने की वजह से भीड़ में मुंडी घुसाने या भीड़ को चीरकर आगे आने की मशक्कत करना मुझे अच्छा नहीं लगता था। इसलिए स्टेडियम पहुंचते ही सीधा मंच पर जाकर वहीं से खड़े-खड़े इसका आनंद लेता था। इसके लिए अपने पसंद की एक जगह को मैंने चुन रखा था जहाँ से बिना किसी अवरोध के पुरे स्टेडियम को देखा जा सकता था।

हर दिन की तरह उस दिन भी स्टेडियम पहुंचते ही मंच की ओर बढ़ चला। मंच की सीढ़ियाँ चढ़ते ही थोड़ा ठिठका, क्यूंकि खेल के आयोजन का कुछ उस दिन कुछ विशेष स्पर्धा था, लेकिन समापन का दिन नहीं था ये अच्छे से याद हैं मुझे। इसलिए वहां तत्कालीन बांका सांसद दिग्विजय सिंह मौजूद थे। तूँ तो उद्घाटन भी उन्होंने ही किया था लेकिन उस दिन मैं नहीं जा सका था।

अब जबकि वहां पहुंच चुका था तो ऐसे ही वापस लौट जाने की इच्छा नहीं हुई और हिम्मत कर के मंच पर अपनी रोजाना वाली जगह पर जा पहुंचा। मंच के आगे वाली सीढ़ी दो तरफ से है, पूर्व और पश्चिम जो कि दोनों एक प्लेटफॉर्म पर आकर मिलती है। मंच को घेरने के लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस के छोटे-छोटे खम्भों के बाड़ जैसे लगे हैं। आगे की सीढ़ी से चढ़कर पश्चिम की ओर उसी बाड़े के पास मैं जा खड़ा हुआ और मैदान में चल रहे खेल का आनंद लेने लगा।

काफी देर होने के बाद पीछे से आवाज आई, "बैठ जाओ न।" पलटने पर देखा दामोदर काकू आवाज दे रहे थे। दामोदर काकू यानि कि दामोदर गावत उस समय झाज्हा विधानसभा के एमएलए थे। चूँकि बंगल में चाचा को काकू कहते हैं और गिर्द्धार से निकट होने की वजह



से बंगाल की संस्कृति व भाषा का काफी प्रभाव यहाँ की लोकसंस्कृति व बोलचाल में है, इसलिए और घर के भाई-बहन पापा-चाचा के दोस्तों को काकू ही कहा करते आए हैं, इसलिए वैसे लोगों को मैं भी काकू ही कहता हूँ।

मैंने उनसे कहा, "हम ठीक हैं" इस बीच दिविजय सिंह हाथ मोड़े मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे. दामोदर काकू ने फिर कहा, "पैर दुखने लगेगा, बैठने के देखो।" बैठने के लिए मैं मंच पर पीछे लगी कुर्सियों में जगह देखने गया. जगह नहीं मिलने और ऐसी जगह मिलने, जहाँ से मैदान में हो रही गतिविधियों को देख पाना संभव नहीं था, मैं वापस से दामोदर काकू के पास जाकर बोला कि जगह ही नहीं है. तभी दिविजय सिंह बोले, "पीछे से देखोगे कैसे? यहाँ बैठ जाओ।" वो अपने बाएँ और की कुर्सी की तरफ इशारा कर बैठने बोले. उनकी दाहिनी ओर दामोदर काकू और उनके ठीक बगल में बड़े पापा बैठे थे. उनके पीछे राजो काकू (राजेन्द्र रावत), जो कि तब दामोदर काकू के पर्सनल सेक्रेटरी थे, वो बैठे थे.

दिविजय सिंह के बगल में बैठने में मुझे झिझक हो रही थी. हालाँकि उस बक्से मैं काफी छोटा था लेकिन बचपन से ही दिविजय सिंह के बारे में सुनता आया था. घर में राजनीतिक माहौल होने के कारण उनकी चचाएँ होनी आम थीं. बड़े पापा उनके करीबियों में से एक रहे. उस समय मैं सोच रहा था कि उनके बगल में बैठूँ या नहीं? तभी दामोदर काकू फिर बोले, "बैठ जाओ वहाँ पर।" मेरे बैठने के बाद दामोदर काकू दिविजय सिंह से बोले, "चिन्हअ ह एकरा?" (पहचानते हैं इसे?) दिविजय सिंह बोले, "देखो तो हैं इसको कई बार।" तब दामोदर काकू ने उन्हें बताते हुए कहा, "डॉ. प्रफुल्ल का बेटा है।" इसे सुनने के बाद उन्होंने आश्वस्त होते हुए अपना सर हिलाया. जिसके बाद मेरी पढ़ाई और शौक



के बारे में उन्होंने मुझसे बातचीत की. उस दिन की स्पर्धा की समाप्ति शाम 5:30 के बाद हुई. पुरस्कार वितरण के दौरान भी दामोदर काकू और दिविजय सिंह के साथ खड़े होने का मौका मिला. यह मेरे लिए तब भी और अब भी बहुत बड़ी बात है. इस बारे में आज भी सोचता हूँ तो लगता है जैसे वो कुर्सी मेरे सौभाग्यवश ही खाली थी. इसके बाद गिर्दौर महोत्सव में अल्लाफ रजा के कार्यक्रम के दौरान दर्शक दीर्घा में दूसरी पंक्ति में ठीक उनके पीछे बैठने का अवसर मिला. चूँकि अल्लाफ का कार्यक्रम सुबह 4 बजे तक चला था और मैंने उनके पुरे कार्यक्रम का लुफ्त उठाया था. तो रात ढलते-ढलते भीड़ खाली होने लगी और वीआईपी दीर्घा से भी लोग उठकर जाने करे, तो मैं खाली कुसियों का मुआयना करने पहुँच गया और जगह देखकर दूसरी दीर्घा में रखी कुर्सी पर बैठ गया. आगे सोफे लगे थे जिनपर दिविजय सिंह के साथ और भी कई लोग बैठे थे. पहली बार श्रेयसी सिंह को देखा था. तब वो साधना कट हेयरस्टाइल रखती थीं।

दिविजय सिंह गिर्दौर से ताल्लुक रखते हैं. उनके पिता गिर्दौर राजघराने में मेनेजर हुआ करते थे. जमुई लोकसभा बनने से पहले गिर्दौर इलाका बांका लोकसभा में ही हुआ करता था. दिविजय सिंह राजनीति के क्षेत्र में इसी लोकसभा का नेतृत्व करते थे. केन्द्रीय मंत्री के रूप में भी उन्होंने भारतीय राजनीति में अपना योगदान दिया. हालाँकि अब नीतीश कुमार बिहार में और नरेंद्र मोदी देश के हर कोने तक बिजली पहुँचाने का तथाकथित दावा कर रहे हैं. लेकिन 10-15 बरस पहले गिर्दौर में जब ज्यादा समय के लिए बिजली आती थी तो सबको अपने आप ही पता चल जाता था कि दिविजय सिंह गिर्दौर आये हुए हैं. गिर्दौर रेलवे स्टेशन पर पुल का निर्माण होना भी उस समय चर्चा का विषय था. रेल राज्य मंत्री रहते हुए उन्होंने गिर्दौर रेलवे स्टेशन से यात्रा करने वालों को यह तोहफा दिया था. अपनी माँ की सृष्टि में उन्होंने सोना देवी मेरियिल चैरिटेबल हॉस्पिटल का निर्माण कराया. जिसका उद्घाटन करने तत्कालीन उप राष्ट्रपति भैरो सिंह शेखावत पहुँचे थे. पहली बार हेलिकोप्टर को करीब से देखने पापा की ऊंगलियाँ पकड़े बम कोठी के पास के मैदान गया था. बड़े पंखे और खुले दरवाजे से सीट देख विस्रूत था. स्काई ब्लू एकवा रंग का हेलिकोप्टर था वो।



निजामी बंधू, अनुप जलोटा, पंकज उधास, नलिनी-कमलिनी, रविन्द्र जैन, विश्वमोहन भट्ट सरीखे बड़े सितारों को दिविजय सिंह ने गिर्दौर सांस्कृतिक महोत्सव के बहाने यहाँ की धरती पर उतार दिया था. उस आबोहवा में जहाँ की मिट्टी में सौंधी सी खुशबू और वातावरण में प्रकृति की मिठास घुली हैं।

"दिविजय सिंह की शख्सियत का अंदाजा इस बात से ही लगाया जा सकता है कि जब उनकी पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) ने उन्हें वर्ष 2009 में लोकसभा का टिकट नहीं दिया था तो उन्होंने बगावत करते हुए निर्दलीय ही बांका से चुनाव लड़ा और जीत हासिल की।"

उनसे आखिरी मुलाकात गिर्दौर के एक स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर 20 फरवरी 2010 को हुई थी।

जहाँ उन्होंने पुचकारते हुए मेरी खेत्रिय पूछी थीं। और फिर उसी वर्ष (2010) 28 जून की अहले सुबह प्रकृति भी गमगीन थी. फुहर वाली बारिश हो रही थी मानो आसमान भी सिसककर रो रहा हो. दिविजय सिंह अब दिवंगत हो चुके थे. 24 जून को लन्दन में ब्रेन हेमरेज की वजह से उनकी मृत्यु हो गई थी. वे वहाँ कामनवेल्थ गेम्स की आयोजन समिति की बैठक में हिस्सा लेने गए हुए थे. 28 जून को उनके पार्थिव शरीर को गिर्दौर लाया गया था. तब जाकर लोगों को उनके स्वर्गीय हो जाने पर भरोसा हुआ था. आम लोगों के अंतिम दर्शन के लिए ताबूत कुमार सुरेन्द्र सिंह स्टेडियम के मंच पर रखा गया।

और ये वही मंच था जहाँ कुछ वर्ष पहले ही उनके बगल में मैं बैठा था. पंक्ति से जाकर मैंने भी उनके अंतिम दर्शन किये. उनके बाएँ और ही. मैं था, दिविजय सिंह थे, लेकिन वो अब कुछ बोल नहीं रहे थे. बेजान से ताबूत में पड़े उनका चेहरा भभस गया था. सर के अगल-बगल रुई की मोटी तह रखी थी जिसमें खून के अंश नजर आ रहे थे. मेरी आँखें नम हो गई थीं. कुछ घंटों बाद ही उन्हें ले जाया गया. पूरा गाँव रोया था. किसीने ढंग से खाना नहीं खाया था उन हफ्तों में. दिविजय सिंह पंचतत्व में विलीन हो गए. नश्वर हो गए. लेकिन उनसे जुड़े कई किस्से आज भी चर्चित हैं. नीतीश कुमार, लालू यादव, रामविलास पासवान सबने उन्हें ब्रद्धांजलि अर्पित की थी. दिविजय सिंह अब भी हमारे बीच हैं. उनके विचारों, सिद्धांतों, आदर्शों एवं समाज के प्रति उनके समर्पण में।

# बिहार की 11 करोड़ आवादी भगवान भरोसे

कुर्सी के चक्कर में पूरी तरह अनदेखी हुई है स्वास्थ्य सेवाओं की राज्य में 57% चिकित्सक तथा 71% नर्सों का पद है खाली



बिहार में स्वास्थ्य सुविधाओं का हाल पूरी तरह खस्ता है। यहां के राजनेता कुर्सी को सुरक्षित बनाने में राज्य के 11 करोड़ से अधिक आवादी के स्वास्थ्य की सुरक्षा को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिये हैं। और बिहार वासी भगवान भरोसे जीवन बसर कर रहे हैं। इसमें सबसे अधिक परेशानी निम्न आय वर्ग और गरीब लोगों को उठानी पड़ती है। साधान संपन्न लोग तो निजी चिकित्सा केंद्रों में या फिर बिहार से बाहर जाकर अपना इलाज करा लेते हैं, लेकिन निर्धन लोग के समक्ष कोई विकल्प नहीं है। किसी भी बीमारी या महामारी के बाद वे काल के शिकार हो जाते हैं।

पिछले दिनों मुजफ्फरपुर में आई एक्यूट इंसेफेलोइटिस सिंड्रोम यानि चमकी बुखार में बच्चों की मौत के बाद बिहार सरकार ने खुद हलफनामा दायर कर इस बात को स्वीकार किया है कि राज्य में चिकित्सकों और स्वास्थ्य कर्मियों की अधिकतर पदें रिक्त हैं।

दरअसल मुजफ्फरपुर में चमकी बुखार से 157 बच्चों की हुई मौत के बाद मनोहर प्रताप तथा सनप्रीत सिंह नामक व्यक्ति द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में दखिल की गई याचिका की सुनवाई के दौरान न्यायालय ने राज्य सरकार से हलफनामा दायर करने के लिए कहा था। पिछले 2 जुलाई को राज्य सरकार द्वारा न्यायालय में दायर की गई हलफनामे में कहा गया कि बिहार में

सरकार द्वारा संचालित स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सकों के लिए कूल 12206 पद सृजित हैं जबकि वर्तमान समय में मात्र 5205 चिकित्सक ही कार्यरत हैं। हलफनामे में राज्य सरकार ने भी स्वीकार किया कि 157 बच्चों की मौत इस बीमारी के चलते हो गई है। वहीं बिहार सरकार द्वारा हलफनामा दायर करने के दूसरे दिन यानी 3 जुलाई को केंद्र सरकार ने भी एक हलफनामा सर्वोच्च न्यायालय में दायर किया जिसमें अपना पल्ला झाड़ते हुए कहा कि मेडिकल सेवाएं राज्य सरकार का विषय है। उस हलफनामे में केंद्र सरकार ने कहा कि इसके बावजूद हम सहायता और मार्गदर्शन के लिए उपाय किए गए हैं।

विदित हो कि अएर यानि दिमारी बुखार या चमकी बुखार पिछले वर्ष भी मुजफ्फरपुर क्षेत्र में महामारी के

रूप में आयी थी। इसके बावजूद इस वर्ष राज्य सरकार ने एहतियात के रूप में कोई गंभीर कदम नहीं उठाया और ना ही इसके बचाव के लिए पहले से तैयारी की गई थी। जिसके चलते इतने मासूमों की जाने गंवानी पड़ गई।

देखा जाए तो बिहार के राजनेता जातीय जोड़-तोड़ और कुर्सी अपनाने की होड़ में राज्य के स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति कभी भी गंभीरता नहीं दिखाते हैं। सत्ता पक्ष की लापरवाही और अनदेखी को विषय के नेता भी कभी गंभीर मुद्दा के रूप में इसे नहीं उठाते हैं। यह विषय तब चर्चा में आती है जब लोगों की जान चली जाती है और बीमारी में मरे गए लोगों के लाश पर राजनीति शुरू करनी होती है।

आज चिकित्सा के क्षेत्र में बिहार की स्थिति काफी बदतर है इसका सबसे अधिक खामियाजा निर्धन और गरीब लोगों को भुगतान पड़ रहा है।

## लालू नीतीश राज में कोई फर्क नहीं : गोपाल

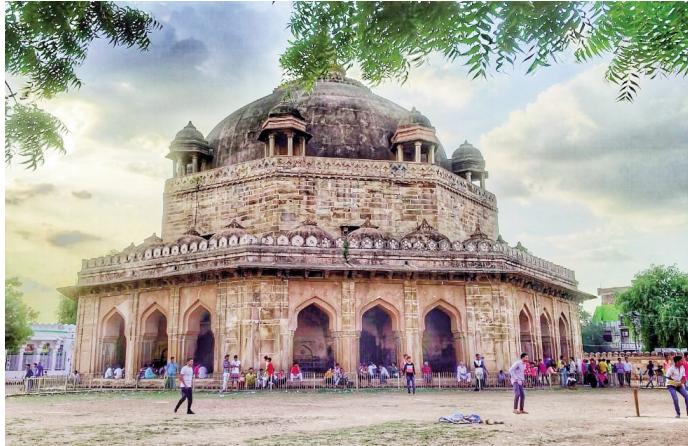
बिहार में सत्तासीन नीतीश सरकार में शामिल भारतीय जनता पार्टी ने भी बिहार के चिकित्सा व्यवस्था पर सवाल खड़े किए हैं, तथा चिकित्सा की बदहाली के लिए नीतीश कुमार को दोषी ठहराया है।

चमकी बुखार को लेकर उठे सवाल पर भारतीय जनता पार्टी से राज्यसभा सदस्य सह पार्टी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष गोपाल नारायण सिंह ने कहा कि लालू और नीतीश राज में कोई फर्क नहीं है। लालू राबड़ी के समय से ही अस्पताल की स्थिति बदहाल है। और उसमें सुधार के लिए नीतीश कुमार ने भी कोई सकारात्मक पहल नहीं किया। उन्होंने कहा कि पिछले 30 वर्षों से लालू राबड़ी और नीतीश के हाथ में बिहार का बांगड़ोर है। और किसी ने भी चिकित्सा सेवा में सुधार और राज्य की जनता के स्वास्थ्य को लेकर कभी कोई गंभीर प्रयास नहीं किए। सर्वोच्च न्यायालय में दायर हलफनामा के संबंध में उन्होंने कहा कि हलफनामा से कुछ नहीं होता है। यह समस्या का हल नहीं है। यह बिहार सरकार की कमज़ोरी है। जिसे दूर करना होगा।

विदित हो कि लोकसभा चुनाव से ठीक पहले केंद्रीय मंत्री आरके सिंह ने भी बिहार में चिकित्सा व्यवस्था को लेकर सवाल उठाए थे तथा नीतीश कुमार को घेरा में लेते हुए कहा था कि ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की जीवन भगवान भरोसे है।



# शाहाबाद में पर्यटन की अपार संभावनाएं, लेकिन जनप्रतिनिधि उदासीन



अखिलेश कुमार

पौराणिक ग्रंथों के अनुसार सबसे प्रथम युग सतयुग से लेकर कलयुग तक ऐतिहासिक धरोहरों को अपने आगोश में समेटे बिहार का शाहाबाद क्षेत्र सरकार और जनप्रतिनिधियों की उपेक्षा पूर्ण तथा उदासीन रखी का कारण आज दुनिया की नजरों में अनजान है। जबकि यह भूभाग में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्रकृतिक छटा से भरपूर है। पर्यटन को केंद्र में रखकर यहाँ के ऐतिहासिक तथा प्रकृति स्थलों का विकास किया जाए तो यह दावा है की हिंदुस्तान ही नहीं बल्कि दुनिया के पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करने में शाहाबाद रिकॉर्ड कायम करेगा। सतयुग के राजा हरिश्चंद्र के पुत्र रोहिताश द्वारा निर्मित रोहतासगढ़ किला, आदिकाल में स्थापित यश्किणी धाम, भलूनी, मां मुंदेश्वरी धाम, ताराचंडी धाम के अलावे त्रेता युग में भगवान राम का शिक्षण तथा प्रशिक्षण केंद्र की पावन धरती बक्सर से लेकर मुगल काल का शेरगढ़ किला, बक्सर का किला, शेरशाह का मकाबरा और स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम बिगुल बजाने वाले वीर कुंवर सिंह की जन्मस्थली

जगदीशपुर जैसा कई स्थल है जिसे पर्यटन की सर्किट से जुड़कर यहाँ बाहरी लोगों को आसानी से आकर्षित किया जा सकता है। कैम्पूर पहाड़ी के गोद में धुआं कुंड, तेलहर कुंड, तुला भवानी सहित अन्य कई ऐसे स्थान हैं जहाँ जाने के बाद कोई भी मन्त्रमुग्ध हो जाता है।



लेकिन आवागमन और पर्यटन की सुविधाओं के घोर अभाव के कारण यह सारे महत्वपूर्ण स्थल आज बीराम पड़े हुए हैं। हाल के दिनों में रोहतास गढ़ किला पर जाने के लिए रोपवे निर्माण कि प्रक्रिया में तेजी आई थी,

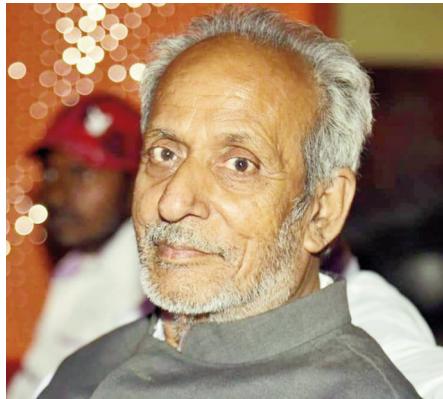
लेकिन इस संबंध में पिछले दिनों जब मैं पर्यटन विभाग के निदेशक उदय कुमार सिंह जी से जानकारी हासिल की तो उन्होंने बताया कि ऑस्ट्रेलिया के जिस कंपनी को रोपवे की ट्राली लगाने की जिम्मेवारी मिली थी वह कंपनी बंद हो गई, इसलिए पुनः टेंडर की प्रक्रिया के कारण विलंब हो सकता है। दरअसल शाहाबाद की राजनीति करने वाले नेताओं और सरकार में शामिल जनप्रतिनिधियों ने इस तरफ ध्यान देने की जहमत कभी उठाई ही नहीं। यदि कोई संगठन यह स्थानीय लोग इस संबंध में ध्यान आकृष्ट करते हैं तो थोड़ी आट सी होती है लेकिन फिर वही ढाक के तीन पात वाली कहानी चरितार्थ हो जाती है। यहाँ के नेता वोट की राजनीति में जाति धर्म जैसे नारे और अनावश्यक बयानबाजीयों में ही लोगों को गुमराह कर अपनी रोटियां सेकने में लगे रहते हैं। अपने दल और नेता के प्रति इन्होंने वफादार और नतमस्तक होते हैं कि शायद क्षेत्र के विकास की बात करने की हिम्मत तक नहीं जुटा पाते हैं। जरूरत है शाहाबाद में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक कदम उठाने की, जिससे यहाँ के लोगों के लिए रोजगार एक बड़ा दरवाजा भी खुलेगा।



# और जब बिहार के मुख्यमंत्री की आंखें हो गई नम...

अनूप नारायण सिंह

दिनेश पाठक जी गंभीर रूप से बीमार थे पटना में जीवन और मौत से संघर्ष कर रहे थे और आप लोगों ने मुझे ही बेगाना कर दिया यह बताना भी मुनासिब नहीं समझा कि वह गंभीर रूप से बीमार हैं यह कहना था बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का । वे बिहार के बेगूसराय में बखरी नगर पंचायत के उपाध्यक्ष रहे समता पार्टी के संस्थापक सदस्य रहे स्वर्गीय दिनेश पाठक के घर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि देने आए थे उन्होंने दिनेश पाठक के पुत्र रजनीकांत पाठक व विष्णु पाठक से कहा आप लोगों ने तो बेगाना कर दिया पाठक जी मेरे मार्गदर्शक संघर्ष के साथी थे उन्होंने अपने लिए कभी कुछ नहीं मांगा समाज के लिए लड़ते रहे. कौन थे स्वर्गीय दिनेश पाठक क्यों उनके निधन के बाद श्रद्धांजलि देने वाले का लगा हुआ है तांता । पढ़िए यादों के झरेखे में स्व. दिनेश पाठक जी 1974 आंदोलन के सिपाही थे। आजीवन समाजवाद को अक्षुण्ण रखे। वे भाई में अकेले थे।



1974 के आपातकाल आंदोलन में मुजफ्फरपुर व हजारीवांग जेल में 27 दिन रहे। इनको को 3 पुत्र व 1 पुत्री हैं । केंद्रीय खाद्य आपूर्ति मंत्री और लोजपा प्रमुख राम विलास पासवान जी के राजनीतिक जीवन के प्रमुख सहयोगी रहे। 1994 के समता पार्टी के संस्थापक सदस्य व 3 बार प्रखण्ड अध्यक्ष भी रहे। बीस सूत्री के उपाध्यक्ष भी। 2012 में बखरी

नगर पंचायत बेगूसराय के निविरोध प्रथम उप मुख्य पार्षद रहे। कार्यकाल 5 वर्ष में प्रधानमंत्री आवास योजना, चापाकल, शैक्षात्मक, सड़क आदि बुनियादी योजना को बिना बाधा व घूसखोरी के संपन्न किये। 5 वर्ष के कार्यकाल में उन्हें 6 हजार प्रति माह वेतन मिलता था उस राशि को भी जरूरतमंद जनता के बीच खर्च किये। गाँव के ही एक दलित समाज का लड़का जो गैर कानूनी शराब बेचता था उसे ईरिक्सा खरीदने में अपने निजी राशि देकर मदद किये। गरीब कन्या के विवाह, इलाज व दाह संस्कार में अपने 5 वर्ष के वेतन को बाट दिए। इनके पुत्रों विष्णु पाठक और रजनीकांत पाठक ने राम जानकी फिल्म स्थापना भी इन्हीं के आदर्शों पर कि इस के बैनर तले कुसहा बांध त्रासदी पर पहली मैथिली फिल्म लव यू दुल्हन बन कर तैयार है। इस फिल्म के निर्माण में भी स्वर्गीय दिनेश पाठक जी जी जान से लगे हुए थे। उनके निधन पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के अलावा केंद्रीय मंत्री गिरिजांज सिंह रामविलास पासवान राज्यसभा सांसद मनोज ज्ञा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष मदन मोहन ज्ञा ने भी शोक प्रकट किया है।

## हमने संघर्ष के साथी को खो दिया : नीतीश



बखरी नगर परिषद क्षेत्र के पूर्व उपमुख्य पार्षद व प्रखण्ड समाजवादी नेता जिन्होंने संघर्ष के साथ समन्वय की विचारधारा पर आजीवन विकासशील परिवर्तन को तरजीह दी वैसे अभिभावक स्व० दिनेश पाठक का हमसबों के बीच न होना अत्यंत दुखदायी है। उन्हें अशुगृहि श्रद्धांजलि। कहा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने , वे आज स्वर्गीय श्री दिनेश पाठक के परिजनों से मिलने बखरी आए थे। उनके संग में भवन मंत्री श्री

अशोक चौधरी व भागलपुर के डीआईजी श्री विकास वैभव व बेगूसराय के जिला पदाधिकारी श्री राहुल कुमार सहित जिले के कई अधिकारी थे।

स्वर्गीय दिनेश पाठक के पुत्र रजनीकांत पाठक ने बताया कि मुख्यमंत्री नीतीश जी के प्रति प्रेम ही आज उन्हें यहां खींच लाया। मुख्यमंत्री जी मुझे बोले कि जब पाठक जी पटना में भर्ती थे तो मुझे बताना चाहिए था। मुख्यमंत्री जी ने समता पार्टी के स्थापना काल के कई

संस्मरण का उल्लेख किया। उन्होंने कहाँ कि हमने संघर्ष के साथी को खो दिया। स्वर्गीय दिनेश पाठक के चित्र पर माल्यार्पण व पुष्पांजलि करने वालों में मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार बिहार सरकार के काबीना मंत्री श्री अशोक चौधरी के साथ साथ भागलपुर मुगेर के डीआईजी श्री विकास वैभव व जदयू जिला प्रभारी श्री अंजनी कुमार व जदयू जिला अध्यक्ष श्री भूमिपाल राय सहित कई लोग शामिल थे।

# थानेदार हीं दोषी क्यों बल्कि वरीय अधिकारियों पर भी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए : मृत्युंजय सिंह

अनूप नारायण सिंह

नीतीश सरकार के फरमान पर बिहार पुलिस एसोसिएशन ने सवाल उठा दिए हैं। एसोसिएशन ने कहा है कि शराब मिलने पर सिर्फ थानेदार हीं दोषी क्यों बल्कि वरीय अधिकारियों पर भी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। जब प्रशंसनीय कार्य में वीरता पदक वरीय अधिकारी लेते हैं तो फिर शराबबंदी में भी तो जवाबदेही तय होनी चाहिए। शराब मिलने पर सिर्फ थानेदार को हीं जिम्मेदार नहीं बल्कि उसके वरीय अधिकारी यानि डीएसपी-एसपी पर भी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए। बिहार पुलिस एसोसिएशन के अध्यक्ष मृत्युंजय कुमार सिंह ने आज इस मुद्रे को बिहार के डीजीपी के समक्ष उठाया है। साथ हीं मांग किया है कि गृह विभाग की तरफ से जारी किए गए इस आदेश से पुलिसकर्मियों में क्षेभ है। एसोसिएशन ने सवाल उठाया कि सभी पदाधिकारियों के पदस्थापन में एक मापदंड अपनाई जानी चाहिए। लेकिन गृह विभाग ने सारी जवाबदेही कर्नीय अधिकारी यानि दारोगा और इंस्पेक्टर पर तय कर दी है जो नैसर्जिक न्याय के खिलाफ है। दरअसल बिहार सरकार ने थानाध्यक्षों के लिए अहर्ता तय कर दिया



है। गृह विभाग ने इस संबंध में अपना आदेश जारी कर दिया है। थानाध्यक्ष एवं अंचल पुलिस निरीक्षक पद पर पदस्थापन के लिए विशेष अहर्ता जरूरी है। सरकार ने अपने आदेश में कहा है कि यह आवश्यक है कि स्वच्छ सेवा वाले अधिकारी हीं इस पद पर पदस्थापित किए जायें। गृह विभाग ने अपने संकल्प में बताया है कि

किसी थानाध्यक्ष के क्षेत्र अंतर्गत शराब निर्माण, बिक्री, परिचालन, अथवा उपभोग में उसकी शिकायत या संलिप्ति की बात प्रकाश में आती है या क्षेत्र अंतर्गत मद्दू निषेध में उनके स्तर से कर्तव्यहीनता बरती जाती है तो उक्त पुलिस पदाधिकारी को अगले 10 सालों तक थानाध्यक्ष नहीं बनाया जाएगा।

## अपने दम पर बनाया मुकाम

कहता है कि दिल में अगर कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो तमाम विचार बाधाओं के बावजूद इंसान अपनी मंजिल को प्राप्त कर ही लेता है। इस कहावत को वास्तविकता के धरातल पर अक्षरस सत्य कर दिखाया है बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के राघवा छपरा गांव निवासी युवा व्यवसायी भूषण कुमार सिंह बबलू ने ये बिहार युथ बिल्डर एसोसिएशन के अध्यक्ष है। साथ ही साथ पटना ग्रीन हाऊसिंग प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक भी। सामाजिक गतिविधियों में भी इनकी सक्रियता इन्हें भीड़ से अलग करती है। संघों के बल पर सफलता का मुकाम पाने वाले भूषण सिंह ने अपने कठिन परिश्रम अदम्य साहस और इमानदारी पूर्वक किए गए कार्यों बदौलत बिहार के उधोगपतियों के भीड़ में अपनी एक अनूठी पहचान बनाई है। 15 अप्रैल 1986 को पिता श्री राम शंकर सिंह माता श्री मती शैल देवी - के घर पुत्ररक्त के जम्मे भूषण जी की शिक्षा दिक्षा मुजफ्फरपुर से प्राप्त हुई। दस बारह साल पहले पटना में आन के बाद अच्छे बुरे लोगों से भी मूलाकात हुई। और ऐसे भी इन्हे शुरू से बिजेनेश ही दिमाग में दौड़ता था और इन्होंने ऐसे बहुत से छोटे मोटे



बिजेनेश भी किया लेकिन ये सब में कही लापरवाही एवं कही असफलता हासिल होने के बावजूद हिम्मत नहीं हारे और एक दिनवह। दिन आया जिस दिन पींजीएचपीएल यानि पटना ग्रीन हाऊसिंग प्रा.लि. का नीव रखा 19/06/2017 को। बिहार के रियल इस्टेट व्यवसाय में इमानदारी पूर्वक अपनी पहचान बनाई 2 वर्षों के अंतर्गत ही इनकी की कंपनी बिहार के अग्रणी कंपनियों में शुमार हो चुकी है जल्द ही यह भवन निर्माण मॉल स्कूल

इंटरटेनमेंट एजेक्शन हेल्थ सेक्टर में भी अपना विस्तार करने जा रहे हैं। बातचीत के क्रम में भूषण कुमार सिंह बबलू ने बताया कि उन्होंने कभी भी असफलता दर असफलता मिलने के बावजूद हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने खुद के दम पर अपना मुकाम बनाया। भूषण कुमार सिंह बबलू ने बताया कि बिहार जैसे प्रांत में सामाजिक कारों में उनकी कंपनी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती है सामाजिक दायित्वों के निर्वहन के तहत ही कंपनी ने इस वर्ष अपने द्वितीय स्थापना दिवस के उपलक्ष में समाज के लिए लड़ने वाले सिपाहियों को सम्मानित कर एक अनूठी पंखरा की शुरूआत की है। उन्होंने बताया कि बिहार में गोजी गोजार का वैसे ही अभाव है जिसके लिए इस्टेट के क्षेत्र में संभावनाएं तो बहुत हैं। किंतु सरकार के ढुलमुल खेतों के कारण रियल स्टेट का व्यवसाय भी गति नहीं पकड़ पाया है। लोगों के घर के सपनों को पूरा करने के उद्देश्य से 2 वर्ष पूर्व उन्होंने इस कंपनी की स्थापना की थी। उन्हें इस बात की खुशी है कि उन्होंने पूरी इमानदारी के साथ अपने लक्ष्य के तरफ कदम बढ़ाया है। आने वाले समय में बिल्डिंग कंस्ट्रक्शन टाइनिंग के निर्माण के क्षेत्र में भी कंपनी पर्दापण करने जा रही है।



# पटना की बेटी फैशन की दुनिया में जाना-पहचाना नाम

अनूप नारायण सिंह

अपनी लगन की बदौलत तुलिका वैश ने फैशन जगत में अपनी पहचान बनाई है। उनकी कामयाबी की कहानी बिहार की नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती है। बिहार की राजधानी पटना की रहने वाली हैं तुलिका वैश। उनके पिता श्री राजीव रंजन सिंह और मां श्रीमती मीना सिंह घर की लाडली छोटी बेटी को डॉक्टर या इंजीनियर बनाना चाहते थे। बचपन के दिनों में तुलिका की रुचि फैशन की ओर थी। जाने माने फैशन डिजाइनर रोहित बाल को अपना आदर्श मानने वाली तुलिका उन्हीं की तरह फैशन की दुनिया में अपनी पहचान बनाने की ख्वाहिश रखा करती। वह बचपन के दिनों से ही अपने ही डिजाइन किये हुये कपड़े पहना करती थी। उन्होंने मैट्रिक तक की पढ़ाई पटना के माउंट कार्मेल स्कूल से पूरी की। इसके बाद उन्होंने पटना वीमन्स्प कॉलेज से इंटरमीडियट की पढ़ाई पूरी की।

इंटरमीडियट की पढ़ाई पूरी करने के बाद तुलिका दिल में बड़े सपने संजोए दिल्ली आ गयी जहाँ उन्होंने फैशन डिजाइनिंग में डिप्लोमा किया। इसके बाद उन्होंने कई नामचीन कंपनियों में फैशन डिजाइनर हेड के तौर पर काम किया। जल्द ही तुलिका की मेहनत रंग लायी और उन्हें उनके आदर्श रोहित बाल की कंपनी में फैशन कोअर्डिनेटर के तौर पर काम करने का अवसर मिला। उनकी मेहनत और लगन को देखते हुये उन्हें कंपनी का सीनियर फैशन डिजाइनर भी बनाया गया। वर्ष 2009 में तुलिका की की शादी बिजनेसमैन सत्यजीत वैश से हो गयी। जहाँ आम तौर पर युवती की शादी के बाद उसपर कई तरह की बदिश लगा दी जाती है लेकिन उनके साथ ऐसा नहीं हुआ। तुलिका के पति के साथ



ही समुराल पक्ष के सभी लोग ने उन्हें हर कदम पर सपोर्ट किया। तुलिका ने बताया कि उन्हें उनके बड़े भाई मानवेन्द्र सिंह और भाभी अंशु सिंह तथा बहन ममता सिंह से भी काफी सपोर्ट मिलता रहा।

वर्ष 2017 में तुलिका वैश ने अपना खुद का

फैशन हाउस हृतुलस्याह लांच किया जिसे राष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहना मिल रही है। तुलिका वैश खादी से बने परिधानों को काफी प्रमोट कर रही है। वह बिहार के फैशन को वैश्विक मंच पर ले जाना चाहती है। उनका कहना है कि बिहार प्रतिभा के मामले में किसी भी दूसरे राज्य से कम नहीं है। फिर चाहे वह फिल्म हो, फैशन हो या फिर कला का क्षेत्र हर जगह बिहार के लोगों ने अपनी सफलता के झंडे गाढ़े हैं।

तुलिका वैश का मानना है कि हमारा युवा वर्ग फैशन इंडस्ट्री और ग्लैमर जगत से जितना प्रभावित है उतना ही आतुर वह उनमें जाने के लिए भी है। आधुनिक युग में युवा सिर्फ तन ढंकने और सुंदर बनने के लिए ही कपड़े नहीं पहनता बल्कि अब यह हमारे स्टेटस का सिंबल बन चुका है। वैश्विक फैशन जगत में भारत की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। इसके अलावा अच्छे से अच्छे ब्रांड के कपड़े पहनना, लेटेस्ट डिजाइन को फॉलो करना और हमेशा स्टाइलिश बनना आज के युवा का शौक है जिसे संभव करते हैं फैशन डिजाइनर। यही कारण है कि पिछले कुछ सालों में फैशन डिजाइनिंग का कोर्स सबसे ज्यादा प्रचलित हुआ है। मेरी ख्वाहिश है बिहार का फैशन वैश्विक मंच पर सराहा जाये। उन्होंने कहा कि वह बहुत जल्द पटना में भी तुलिका डिजाइन का ब्रांच खोलने जा रही हैं।

तुलिका वैश ने बताया कि वह बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन और पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन की स्टाइल और फैशन सेंस से बहुत प्रभावित है और उन्हें अवसर मिलता है तो वह उन्हें अपने डिजाइन किये हुये परिधान पहनाना चाहती है। उन्हें गार्डनिंग और इंटरीयर डिजाइन में भी काफी दिलचस्पी है।

## प्रेस कॉउंसिल का दरबार, पुलिस को फटकार

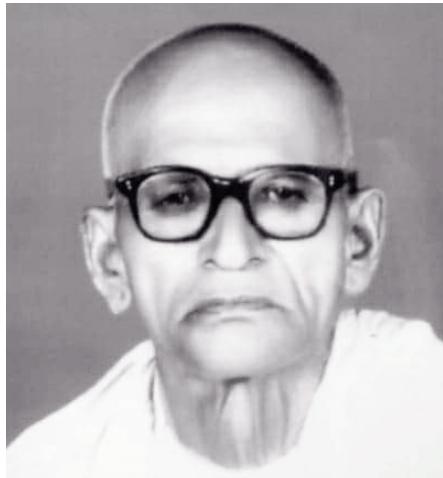
प्रेस कॉउंसिल की इंकायरी कमीशन बिहार पुलिस की कार्यशैली पर सख्त नाराजगी जाहिर करते हुये कई वरीय पुलिस पदाधिकारियों को जमकर लताड़ा और फटकार लगाया। काउंसिल की पटना के चाणक्या होटल में हुए दो दिवसीय सुनवाई में बिहार के अलावा उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, बंगाल, एवं उडीसा के मामलों को उठाया गया। 9 जुलाई को कुल 39 मामलों की सुनवाई हुई। कॉउंसिल के अध्यक्ष ने साफ कहा की कानून से बड़ा कोई नहीं है यह गंठ बाँध ले अधिकारी। इस सुनवाई में मोतिहारी, पटना, कटिहार, पलामू गोरखपुर इत्यादि के कई मामलों में पुलिस की ओर लापरवाही और पत्रकारों के खिलाफ सजिश उजागर हुई। ऑन द स्पॉट अदेश पारित हुआ। कई पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की अनुशंसा कर रिपोर्ट मांग गया। बिहार प्रेस में यूनियन के अध्यक्ष एवं वरीय पत्रकार एस एन श्याम ने पत्रकारों पर पुलिस उत्पीड़न और प्रशासनिक प्रताड़ना का मामला उठाया। 2 नवंबर 2018 को पटना पुलिस लाइन में पुलिस विद्रोह के दरम्यान पत्रकारों पर हमले का मामला भी काउंसिल के समक्ष आया। इस परिवाद में सरकार की ओर से किसी पुलिस और प्रशासनिक पदाधिकारी के हाजिर नहीं होने पर चेतावनै ने सख्त नाराजगी जाहिर किया और डी जी पी तथा चीफ सेक्टरी को नोटिस भेजा।



# दुनिया जिसे जानती है भोजपुरी के शेक्सपियर के रूप में आज भी उसके परिजन बने हुए हैं भिखारी

अनूप नारायण सिंह

भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर के नाम पर हजारों लोग अमीर बन गए आज भी भिखारी ठाकुर के परिजन फेटेहाल स्थिति में किसी तरह अपना गुजर-बसर कर रहे हैं उनकी सुध लेने की फुर्सत ना राज्य सरकार को है और ना ही उन संस्थाओं को जो भिखारी ठाकुर के नाम पर प्रतिवर्ष लाखों करोड़ों के अनुदान प्राप्त करते हैं। लोक संस्कृति के वाहक कवि व भोजपुरी के शेक्सपियर माने जाने वाले भिखारी ठाकुर का जयंती 18 दिसंबर को मनाई जाती है लेकिन क्या कोई यकीन कर सकता है कि भक्तिकालीन भक्त कवियों व रीत कालीन कवियों के संधि स्थल पर कैथी लिपि में कलम चलाकर फिर रामलीला, कृष्णलीला, विदेशिया, बेटी-बेचवा, गबरधिचोरहा, गीति नाट्य को अभिनीत करने वाले लोक कवि भोजपुरी के शेक्सपीयर भिखारी ठाकुर के परिवार चीथड़ो में जी रहा हो। देश ही नहीं विदेशों में भोजपुरी के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले मलिलक जी के परिवार गरीबी का देश झेल रहा है। यह सच है कि उनके जयंती व पुण्यतिथि पर कुछ गणपान्य पहुंचते हैं, कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं, लेकिन यह सब मात्र श्रद्धांजलि की औपचारिकता तक सिमट कर रह जाते हैं। न तो ऐसे किसी आयोजन में भिखारी ठाकुर के गांववासियों का दर्द सुना जाता है न ही उनके दर्द की दवा की प्रबंध की बात होती है कुतुबपुर दियारा स्थित मलिलक जी का खपौल व छपर निर्मित जीर्ण-शीण घर आज भी अपने जीर्णोद्धार की बात जोह रहा है? यही से भिखारी ठाकुर ने काव्य सरिता प्रवाहित की थी और उनकी प्रसिद्धि की गूंज आज भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर सुनाइ पड़ रही है। भिखारी ठाकुर के प्रपोत्र सुशील आज भी अद्द चतुर्थ श्रेणी के नौकरी के लिए भटक रहा, कोई



सुधी तक नहीं लेने वाला। भिखारी ठाकुर के प्रपोत्र सुशील कुमार आज एक अद्द चतुर्थ श्रेणी की नौकरी के लिए मारा-मारा फिर रहा है। दर्द भरी जुबान से सुशील बताते हैं कि अगर फुजा और फुफा नहीं रहते तो शायद मैं एमए तक पढ़ाई नहीं कर पाता। रोटी की लड़ाई में मेरी पढ़ाई नेपथ्य में चली गई रहती। समहरणालय में चतुर्थ वर्षीय कर्मचारी की नौकरी के लिए वे आवेदन किये हैं। पैनल सूची में नाम भी है, लेकिन एक साल बीत गए, भगवान जाने नौकरी कब मिलेगी। हाल यह है कि विभिन्न कार्यक्रमों में उहें एवं उनके परिजन को मंच तक नहीं बुलाया जाता है जिस दीपक की लौ से सपाज में व्यास कुरीतियों और सामायिक संमस्याओं को उजागर करने का महती प्रयास भिखारी ठाकुर ने किया उनकी लौ में आज कई लोग रोटियां सेंक रहे हैं, लेकिन दीपक तले अंधेरे की कहावत चरितार्थ है। दबी जुबान से दिल की बात बाहर आती है कि भिखारी ठाकुर के नाम पर कई लोग

वृद्ध पेंशन एवं सुख सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। परिवार को हरेक जरूरत की दरकार है। एक ओर जहां सुशील जीवकोपार्जन के लिए दर-दर भटक रहे हैं वहाँ, उनकी पुत्रवधु व सुशील की मां गरीबी का देश झेल रही है। भिखारी ठाकुर के इकलौते पुत्र शीलानाथ ठाकुर थे। वे भिखारी ठाकुर के नाट्य मंडली व उनके कार्यक्रमों से कोई रुची नहीं थी। उनके तीन पुत्र राजेन्द्र ठाकुर, हीरालाल ठाकुर व दीनदयाल ठाकुर भिखारी की कला को जिन्दा रखे। नाटक मंडली बनाकर जगह-जगह कार्यक्रम करने लगे। लेकिन इसी बीच उनके बाबू जी गुजर गये। फिर पेट की आग तले वह संस्कार दब गई। अब तो राजेन्द्र ठाकुर भी नहीं रहे। फिल्मक भिखारी ठाकुर के परिवार में उनके प्रपोत्र सुशील ठाकुर, राकेश ठाकुर, मुना ठाकुर एवं इनकी पत्नी रहती है। जीर्ण-शीण हालात में किसी तरह सत्ता व सरकार को कोसते जिंदगी जिये जा रहे हैं उनके परिजन। लोक साहित्य व संस्कृति के पुरोधा, भोजपुरी के शेक्सपियर के गांव कुतुबपुर काश, स्थानीय सासद व कन्द्रीय राज्य मंत्री रहे राजीव प्रताप रुद्धी के सासद ग्राम योजना के तहत गोद में होता तो शायद पुरोधा के गांव को तारणहार की प्रतिक्षा नहीं होती। गंगा नदी नाव से उस पर छपरा से करीब 25 किलोमीटर दूर स्थित कुतुबपुर गांव आज भी अंधेरे तले है। कार्यक्रमों की रोशनी व राजनेताओं का आश्वासन उस गांव को रोशन नहीं कर सका। शायद श्रद्धांजलि सभा और सांस्कृतिक समारोह भी कुछ लोगों तक सीमट कर है। बरन सरकार दो फूल चढ़ाने में भी भिखारी ही रहा है। आस-पास दर्जनों गांव, हजारों की बस्ती, तीन पंचायतों में एक मात्र अपग्रेड हाईस्कूल। वह भी प्राथमिक विद्यालय से अपग्रेड हुआ है। प्रारंभिक शिक्षक और पढ़ाई हाईस्कूल तक। आगे की पढ़ाई के लिए नदी इस पर आना होता है। कुछ बच्चे तो आ जाते हैं, बच्चियां कहाँ



# 5,000 से ज्यादा छात्रों को अंग्रेजी शिक्षा दे चुके हैं विपिन कुमार सिन्हा



अनूप नारायण सिंह

जाये। कुतुबपुर से सटे कोटवापट्टी रामपुर, रायपुर, बिंदगोवा व बड़हरा महाजी अन्य पंचायतें हैं। लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि है। अब नदी इनके खेतों को निगलने लगी है। 75 फीसद भूमिखंड में सरयू, गंगा नदी का राग है। टापू सद्श गंगा है। 2010 से निर्माणाधीन छपरा आरा पुल से कुछ उमीद जी है, लेकिन फिलहाल नाव से आने-जाने की व्यवस्था है। अस्पताल है ही नहीं। बाढ़ की तबाही अलग से झेलना पड़ता है। प्रत्येक साल किसानों को परवत की खेती में बाढ़ आने पर लाखों-करोड़ों रुपयों का घाटा सहना पड़ता है। सुविधा के नाम पर इस गांव में पवकी सड़क तक नहीं है। छपरा- लोक कलाकार भिखारी ठाकुर जो समाज के न्यूनतम नई वर्ग में पैदा हुए थे, वे अपनी नाटकों, गीतों एवं अन्य कला माध्यमों से समाज के हाशिये पर रहने वाले आम लोगों की व्यथा कथा का वर्णन किया है। अपनी प्रसिद्ध रचना विदेशिया में जिस नारी की विरह वर्णन एवं सामाजिक प्रताड़ना का उन्होंने सजीव चित्रण किया है। वही नारी आज साहित्यकारों एवं समाज विज्ञानियों के लिए स्त्री-विमर्श के रूप में चिन्तन एवं अध्यन का केन्द्र-बिन्दु बनी हुई है। भिखारी ठाकुर ने अपने नाटकों के माध्यम से सामाजिक कुरीरियों, विषमता, भेदभाव के खिलाफ संघर्ष किया। इस तरह उन्होंने देश के विशाल भेजपुरी क्षेत्र में नवजागरण का संदेश फैलाया। बेमेल-विवाह, नशापान, स्त्रियों का शोषण एवं दमन, संयुक्त परिवार के विघटन एवं गरीबी के खिलाफ वे जीवनपर्यन्त विभिन्न कला माध्यमों के द्वारा संघर्ष करते रहे। यही कारण है कि इस महान कलाकार की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। कभी महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जिन्हें साहित्य का अनगढ़ हीरा एवं भोजपुरी का शेंकसपीयर कहा था उस भिखारी ठाकुर का जन्म सरण जिले के छपरा जिले के सदर प्रखंड के कुतुबपुर दियारा में 18 दिसंबर 1887 को हुआ को हुआ था। उनके पिता का नाम दलशूरागर ठाकुर एवं माता का नाम शिवकली देवी था। भिखारी ठाकुर निरक्षर थे, परंतु उनकी साहित्य-साधना बेमिसाल थी। रोजी-रोटी कमने के लिए वे पश्चिम बंगाल के मैदानीपुर नामक स्थान पर गये जहां बंगाल के जातरा पाटियों के द्वारा किये जा रहे रामलीला के मंचन से वे काफी प्रभावित हुए, और उससे प्रेरणा पाकर उन्होंने नाच पार्टी का गठन किया। लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के समस्त साहित्य का संकलन अब तक पूरा नहीं हो सका है। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना के पूर्व निदेशक प्रो० डॉ० वीरेन्द्र नारायण यादव के प्रयास से परिषद ने रचनाओं का एक संकलन भिखारी ठाकुर ग्रंथालयी के नाम से प्रकाशित किया है, परंतु अभी भी उनके लिए बहुत कुछ किये जाना बाकी है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में उनपर शोध-कार्य चल रहे हैं। कई पुस्तकें भी उनसे प्रकाशित हुई हैं।



कुमार सिन्हा के लगभग 5 से ज्यादा छात्र छात्राएं सरकारी नौकरियों में अंतिम रूप से चयनित हो चुके हैं। सजगता को सफलता का विपिन कुमार सिन्हा कहते हैं कि बिहार के छात्र-छात्राओं में प्रतिभा की कमी नहीं उनमें सबसे बड़ी कमी अंग्रेजी भाषा की कमजोरी को लेकर होती है और इसी हीन ग्रंथि से ग्रसित होते मेधावी छात्र भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

विपिन कुमार सिन्हा की स्कूली शिक्षा पटना के जे डी पाटलिपुत्र हाई स्कूल इंटर कॉलेज व पटना कॉलेज से एम ए तक की पढ़ाई की। पिता कृष्ण नंदन वर्मा सरकारी नौकरी में थे घर में किसी तरह का आभाव नहीं था। कॉलेज की पढ़ाई खत्म होने के बाद सरकारी सेवा के अपेक्षा इन्होंने शिक्षा सेवा को चुना। बाजार वाद में फंसे पटना की कोचिंग संस्थानों के बीच श्रेष्ठ कोचिंग संस्थान की स्थापना कर नाम मात्र के फीस पर इन्होंने छात्रों को पढ़ाना शुरू किया 2005 के यादों को कुरेदते हुए वे कहते हैं कि 2 छात्रों से शुरू हुआ अभियान आज हजारों छात्रों के बीच पहुँचा है। विपिन कुमार सिन्हा कहते हैं कि पटना के कोचिंग संस्थानों पर इन दिनों बाजारवाद कुछ ज्यादा ही हावी है प्रचार तंत्र के बल पर छात्रों को बरगलाने की कोशिश की जाती है।

ग्रामीण परिवेश से आने वाले और खासकर बिहार के अधिकांश छात्रों के सामने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान का अभाव होता है और उसके बिना तो आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में सफल हो ही नहीं सकते हैं। भाषा की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए छात्रों को वे हर संभव मदद करते हैं और इसका परिणाम भी सामने आता है कि इरण प्रकाशन से इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। बच्चों को पढ़ाने के लिए प्रतिदिन यह खुद 2 से 3 घंटे पढ़ते हैं। इनकी धर्मपती बंदना कृष्णा नेशनल पब्लिक स्कूल की डायरेक्टर है। जो बाजार समिति में स्थित है। श्रेष्ठ कोचिंग संस्थान में 6 से 7 माह में छात्रों को अंग्रेजी भाषा मैं पूरी तरह से परागत कर दिया जाता है। प्रत्येक 15 दिनों पर टेस्ट का आयोजन होता है एस एम एस के माध्यम से छात्रों को टेस्ट का परिणाम बताए जाते हैं। बेहतर परिणाम लाने वाले छात्र छात्राओं को पारितोषिक देकर उनका मनोबल भी पढ़ाया जाता है। अपने स्कूल के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि के अंग्रेजी के शिक्षक अवध बाबू का उनके जीवन पर खासा प्रभाव पड़ा। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा पूरी तम्यता के साथ मेहनत करने से ही सफलता मिलती है। संस्थान के 13 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में उन्होंने कहा कि उन्होंने तो सिर्फ पेड़ लगाया था इसे बाट वृक्ष छात्रों की सफलता ने बनाया। उनका अभियान आगे भी जारी रहेगा।

कई राष्ट्रीय पुस्तकार से सम्मानित यहां अनूठे शिक्षक अपने संस्थान श्रेष्ठ कोचिंग के माध्यम से बिहार के छात्रों को सर्वश्रेष्ठ बनाने का अभियान चला रहे हैं।

# बिहार विधान परिषद सदस्य एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय मीडिया सह प्रभारी संजय मयूख के हाथों से भोजन बैंक के फूट एम्बुलेंस का शुभारंभ



**आपका जन्मदिन हो, शादी की सालगिरह हो, या कोई भी शुभ कार्य हो।**  
आप अपना शुभ कार्य कुछ बेसहारा लोगों के साथ मनाये उनको भोजन जरूर करायें।  
**हमारा मकसद है कि ऐसी व्यवस्था पूरे देश में उपलब्ध कराई जाये कि कोई भूखे न सोये।**

राजनीतिकी लिया



अनूप नारायण सिंह

भोजन बैंक अभियान के संयोजक पंकज कुमार सिंह ने बताया कि भोजन बैंक भूखे और जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराना में अग्रसर एक स्वयंसेवी संस्था है। हम अस्पतालों और अन्य सार्वजनिक

जगहों पर भूखे और जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध करवाते हैं। हम एक ऐसे भारत की कल्पना के साथ यह काम कर रहे हैं, जहाँ कम से कम कोई भूखे ना रहे। हम पिछले दो सालों से इस पुनीत कार्य को कर रहे हैं। भोजन बैंक की यह गाड़ी पटना की सड़कों पर भोजन लेकर चलेगी और जो भी जरूरतमंद

मिलेंगे उनको भोजन उपलब्ध करवाएगी। हमारा मकसद है कि एक दिन ऐसी व्यवस्था पूरे देश में उपलब्ध करवायी जाए, ताकि ऐसे जरूरतमंदों की यथासंभव मदद किया जा सके। इसके लिए आप सभी का प्यार, आशीर्वाद एवं सहयोग हमेशा साथ रहे।



## राजनाथ सिंह का जन्मदिन बिहार में भी मनाया गया

भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का जन्मदिन पूरे देश भर में मनाया गया। राजनाथ सिंह का जन्मदिन बिहार में भी मनाया गया। इस मौके पर इंडियन ऑयल श्रीमिक संघ के तत्वावधान में विधान पार्श्व डॉ० संजय मयूख, भाजपा एमएलसी सचिवदानंद राय, श्रीमिक संघ के महामंत्री विक्रम कुमार और मुकेश कुमार ने पटना के व्हील चेयर का वितरण किया।

डॉ० संजय मयूख ने आईजीएमएस और पीएमसीएच में एक-एक व्हील चेयर प्रदान किया। संजय मयूख ने इस अवसर पर कहा कि आज हमारे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का जन्मदिन है। इसे हम यादगार बनाना चाहते थे। व्हील चेयर देने से आईजीएमएस और पीएमसीएच में आने वाले मरीजों की सुविधा होगी।

उन्होंने कहा कि हम सबों ने राजनाथ सिंह के स्वस्थ, दीर्घायु एवं यशस्वी होने की कामना की। देश उनकी सेवाओं का लंबे अरसे तक लाभ लेता रहे। हम सबों



को उनका मार्गदर्शन सदैव मिलता रहे। उनके प्रेरणादायी नेतृत्व से सभी राष्ट्रवादी विचारधारा के कार्यकर्ता प्रेरित होते रहे। इस अवसर पर आईजीएमएस के अधीक्षक



डॉक्टर मनीष मंडल भी उपस्थित थे।

# वर्तमान दौर में जनता - सरकार और पुलिस

अनूप नारायण सिंह

वर्तमान समय में पुलिस के रूप - कार्य - दायित्व को परिभ्राषित करना काफी कठिन है। वैसे पुलिस शब्द ..बोध से आरक्षी पुलिस से पुलिस महानिदेशक तक पुलिस का पूरा रूप - स्वरूप है। पुलिस में थाना स्तर पर .....कानून की रक्षा जनता की सुरक्षा का मुख्य दायित्व है। उसके ऊपर के पदाधिकारी एवं कार्यालय उनके कार्यों की समीक्षा , निर्देश एवं सहयोग के लिए है। बिहार के थाना में पुलिस की पोस्टिंग एवं कार्यपद्धति की समीक्षा , कानून की राज की मजबूती एवं जनता की हित के लिये जरूरी है। वरीय अधिकारीयों द्वारा सकारात्मक सोच के साथ समीक्षात्मक - निगरानी लगातार होती रहनी चाहिए। आज एक बहुत ही बड़ा प्रश्न देखने को मिल रहा है जो मैटिया - समाज एवं पुलिस विभाग में कौतुहल के साथ चर्चा का विषय बना हूवा है .....वो प्रश्न है कि ..... पुलिस महानिदेशक (ऊर्ह) महोदय का थाना भ्रमण। पुलिस विभाग का सर्वोच्च पद पर पदस्थापित अधिकारी जिसके नीचे राज्य की सारी पुलिस कार्यरत है वो लगातार जिले में थाने का भ्रमण करे। इससे तो एक बात निश्चित रूप से दृष्टिगोचर हो रही है की जिले के पुलिसिंग में , पुलिस की कार्यप्रणाली में खामी है। क्या केवल थाने के अधिकारी खामी या पुलिसिंग में गिरावट के लिए जीमेवार है या पुलिस अधीक्षक स्तर तक के अधिकारी भी जीमेवार है ?।

सरकार एवं पुलिस मुख्यालय हाल में कुछ घटित घटनाओं पर चिंतित है ... होना भी लाजमी है। लगातार सरकार स्तर पर , पुलिस मुख्यालय स्तर पर समीक्षा कर दिशा - निर्देश दी जा रही है। कनीय स्तर के पुलिसपदाधिकारियों पर शख्त निर्देश नित्य सपाह जारी हो रहे हैं। होना भी चाहिए। पर इससे सुधार कितना हो पा रहा है इसकी गहन समीक्षा की जरूरत है।

पुलिस थाने के कार्यपद्धति के व्यवहारिकता को समीक्षा उपरांत एवं उनकी कुछ मूलभूत परेशानी को ईमानदारी से निदान करते हुवे यदि शाखित थाने , अनुमंडल , ज़िला स्तर के सभी पुलिस अधिकारियों पर एकरूपता के साथ हो तो बेहतर पुलिसिंग मजबूती के साथ दिखेगी। कारण ..... खामी जिले में पुलिस के सभी कार्यालयों में है। बिहार की पुलिस आज भी देश के अन्य राज्यों की पुलिस से अपने सीमित संसाधन के बावजूद बेहतर कार्य कर रही है। पुलिस विभाग के मूलभूत समस्यावो में सुधार ( बदलाव ) के लिये एक कमिटी का गठन हो जिसने बिहार पुलिस एसोसिएशन के पधारक उसमें शामिल हो। क्यों की एसो ... के पद्धतिकारक पुलिस के समस्यावो की भली - भाली जानकारी रखते हैं ..। केन्द्र सरकार को भी अलग से अन्य विभाग जैसा राज्यों में पुलिस कमियों के मूलभूत समस्या सुधार हेतु एक निश्चित बजट आम बजट में पास कर आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करने एवं कानून के राज को मजबूत करने के दिशा में सकारात्मक पहल की जरूरत है..। अगर इस पर ध्यान नहीं दिया गया तो जनता को न्याय हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी। जिसमें गरीब और सामान्य जनता को काफी परेशानी उठानी पड़ेगी ..।

आज के तारीख में देखा जाता है की थाना के थानाप्रभारी अपने थाना क्षेत्र में अनुमन 500 / 600 लोगों से जुड़े रहते हैं जिनमें से कई लोगों की छवि अच्छी नहीं होती है। जबकि थाना क्षेत्र में आम जनता की आबादी लगभग 70000 / 1,00000 के बीच होती है ..। आम जनता में अधिकतर लोग उन चिन्हित लोगों के माध्यम से थाना आते हैं। आम लोग जो आज भी पुलिसके पास आने से डरती हैं पुलिस को उनके बीच जाकर उनकी समस्या सुन कर समधान करे। अक्सर देखा जाता की पुलिस किसी गाँव में जाती है तो गरीब या आम जनता के बीच न जाकर गाँव के मजबूत या अमीर व्यक्ति के दरवाजे पर बैठती है। इसमें बदलाव की जरूरत है। थाना में सभी पदाधिकारी में आपसी तालमेल के साथ सभी की जबाबदेही निर्धारित हो। आम जनता चाहे वो गरीब हो , चाहे वो अमीर हो , चाहे वो राजनीतिज्ञ हो सभी के साथ थाना में व्यवहार एक जैसा हो ...। उद्धरण स्वरूप जैसे कोई एक आम इंसान का मोबाइल कही खो जाता है वो थाना जाता है तो वो आम व्यक्ति को थाना में हीं भटकना पड़ता है। उसी काम से अमीर व्यक्ति या ऊँची पहुँच वाला व्यक्ति थाना जाता है तो उसे कम परेशानी उठाते हैं या बिना परेशानी के हीं उनका सनहाँ दर्ज हो जाता है। थाना प्रभारी यदि थाना में नहीं रहते हैं तो थाना के अन्य पदाधिकारी का बर्ताव या बोलचाल आम जनता से अनुमन कभी कभी अच्छा नहीं होता है।



कारण की जबाबदेही थाना प्रभारी की निर्धारित होती है। जिससे आम जनता का विश्वास पुलिस के प्रति कमज़ोर होता है। जो कभी भी पुलिस के विरोध आंदोलन में भुगतना पड़ता है।

थाना में पोस्टिंग में कही - कही महसूस होता है या विभिन्न जिलों में पुलिस में आम चर्चा दबी जुबान में सुनने में आता है की थाना प्रभारी की पोस्टिंग योग्यता , दक्षता , कर्मठता , अनुभव को नजर अन्वाज किया जा रहा है जिसका खामियाजा या परेशानी आम जनता को होता है। पुलिस एक्ट 2007 के सेक्षन 10 में स्पष्ट अंकित है की दो वर्ष तक किसी भी पुलिस कर्मी को कही से तबादला नहीं किया जा सकता है। प्रशासनिक रूप से छोड़ कर। पर कभी - कभी देखा जाता है की थाना प्रभारी की पोस्टिंग समयावधि के पहले बिना बजह के एक थाने से दूसरे थाने कर दिया जाता है जो गलत होता है। यदि थाना प्रभारी अच्छा कार्य नहीं करता है या अपने कार्य में रुचि नहीं लेता है तो पुलिस लाइन या कई ओफिस हैं जहाँ पोस्टिंग की जा सकती है। कई जिला के रुच का व्यवहार अपने नीचे के अधिकारी के साथ भाषा उचारन अच्छा नहीं होता है। परिवारिक / निजी कार्य हेतु छूटी के लिये काफी परेशानी होती है। साथ हीं पुलिस विभाग में वर्तमान चुनौती को देखते हुवे पुलिस बल की कमी है। पुलिस काम के दबाव से दबी है। तथा पुलिस कई बीमारियों से गशिंह हो रही है।

बेहतर पुलिसिंग एवं आम जनता के हित तथा कानून के राज की मजबूती हेतु इस में बदलाव की जरूरत है बिहार हीं नहीं पूरे देश में उपरोक्त समस्या पुलिस विभाग में व्याप है।

मृत्युंजय कुमार सिंह  
अध्यक्ष बिहार पुलिस एसोसिएशन

# नेपाल से संबंध को लेकर भारत को सजग रहने की जरूरत



**चीन वहां तेजी से बढ़ा रहा है  
अपना प्रभाव**

**सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नेपाल  
के रिश्ते से जुड़ा है बिहार का  
आर्थिक संबंध**

**अखिलेश कुमार**

नेपाल का नाम आते भारतीय लोगों में अपनत्व की भावना जग जाती है। भारतीयों की नजर में नेपाल एक अलग देश कम, पड़ोसी छोटे भाई के के भाव को अधिक जगाता है। सदियों से भौगोलिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक संबंध नेपाल से रहा है। त्रेता युग से ही इस देश से भारत का बेटी रोटी का संबंध कायम है। इस संबंध को और प्रगाढ़ करने की जरूरत है, वरना वहां चाइना अपने कूटनीतिक प्रयास और भारतीय शासन द्वारा उदासीनता का लाभ उठाते हुए प्रभाव बढ़ाने की पुरजोर कोशिश में लगा हुआ है।

आजादी के बाद 1950 से अब तक नेपाल पर जो भी समस्या आई, भारत ने उस समस्या को अपना माना तथा बिना कोई सामरिक समझौता के नेपाल की संकट की घड़ी में हमेशा चट्टान की तरह खड़ा रहा। 1950 में जब नेपाल पर संकट आई थी तो उस समय वहां के महाराज त्रिभुवन दिल्ली आए थे। तथा सैनिक सहायता

की मांग की थी, ताकि नेपाल में सेना और प्रशासन का पुनर्गठन किया जा सके। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें भरपूर सहयोग किया था और उस समय से भारत नेपाल के बीच संबंधों की मजबूती और बढ़ती गई। इधर पिछले कुछ वर्षों से नेपाल में उत्पन्न अस्थिरता के बीच पड़ोसी मुल्क चीन वहां

अपना प्रभाव बढ़ाने में लगा हुआ है। पिछले 10 वर्षों के भीतर नेपाल में 10 सरकारें बनी। इस बीच पहाड़ी तथा मध्येशी लोगों के बीच संविधान में प्रविधानों को लेकर उत्पन्न विवाद और 2015 में आंदोलन के दौरान भारत से खाद्य सामग्रियों के आवागमन बाधित होने का भरपूर फायदा चाइना ने उठाया। चीन नेपाल-पाकिस्तान गढ़जोड़ पर तेजी से काम कर रहा है। इसके तहत इन दोनों देशों में पूंजी निवेश को बढ़ा रहा है। भारत को नेपाल ने सबसे बड़ी झटका पिछले वर्ष पुणे में होने वाले सैनिक अभ्यास के दौरान दिया था। बिस्मेटेक देशों की इस सैनिक अभ्यास में भाग लेने की सहमति देने के बाद अंतिम दौर में नेपाल ने इंकार कर दिया। भारत को दूसरा झटका तब लगा जब नेपाल ने चीन के साथ सागरमाथा फ्रेंड्स नामक सैन्य अभ्यास में शामिल होने की सहमति दे दी। चीन का यह जादू नेपाली संविधान तथा मध्येशी आंदोलन के बाद नेपाल में तेजी से चल रहा है। नेपाल में दशकों से अस्थिरता की स्थिति और भारत तथा नेपाल के बीच कूटनीतिक रस्साकशी के बीच चीन नेपाल की गतिविधियों पर गिर्द दृष्टि गड़ाए हुए हैं। पिछले दिनों नेपाल के प्रधानमंत्री केपी ओली ने जब चीन की यात्रा की तो वहां 14 मुद्दों पर समझौता हुआ। इन मुद्दों में व्यापार को बढ़ावा देना, चीन तिब्बत रेल लिंक का समझौता तथा बुनियादी ढांचा में सङ्करण बिजली परियोजना में निवेश का निर्णय महत्वपूर्ण है। चीन ने हाल के वर्षों में अपने कई बंदरगाहों को भी नेपाल को उपयोग के लिए अनुमति दे दी है।



वही दूसरी तरफ भारत नेपाल के साथ पूर्व में किए गए समझौते और चल रहे कार्यों में उदासीनता दिखा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी का जनकपुर दौरे के बाद जनकपुर तक रेल का निर्माण तो हुआ लेकिन तकनीकी कारणों से रेल का परिचालन बंद है। भारत और नेपाल के बीच हुए समझौते के तहत रक्सौल से काठमांडू तक रेल लिंक निर्माण कार्य में कोई प्रगति नहीं हो रही है। भारत सरकार ने सङ्क तथा रेल कनेक्शन के लिए म्यानमार के अराकान टट बंदरगाह तक रेल और सङ्क कनेक्शन निर्माण की बात कही थी। परंतु इस क्षेत्र में कदम आगे नहीं बढ़ सका है। मोतिहारी से तेल पाइपलाइन पर भी कार्य में कोई प्रगति नहीं है।

पिछले पछवाड़े नेपाल ने भारत के बिहार और उत्तर प्रदेश से जाने वाली फल सब्जी तथा अन्य खाद्य पदार्थों पर यह कहकर रोक लगा दी कि भारत से नेपाल आने वाले फल और सब्जियों में बड़े पैमाने पर कीटनाशक का उपयोग किया जा रहा है। जिससे उसके नारिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है और लोग बीमार हो रहे हैं। नेपाल ने कहा कि काठमांडू लैब में जांच होने और मानक पर खरा उत्तरने के बाद ही भारतीय खाद्य सामग्री नेपाल में आ सकता है। नेपाल के यह सारे कदम

प्रमाणित कर रहे हैं कि भारत और नेपाल के संबंधों में कहीं ना कहीं कटूता के भाव में इजाफा हो रहा है। और इसका पूरा फायदा चीन उठाने के लिए तत्पर है। जबकि भारत सरकार इस मामले को लेकर इतनी सवेदनशील दिखाई नहीं दे रही है जितनी दिखने चाहिए। भारत को लेकर नेपाल की महत्वाकांक्षा बढ़ी हो, फिर भारत नेपाल की आकांक्षाओं पर खरा नहीं उत्तर रहा है, इस बिंदु पर गंभीरता से विचार करते हुए भारत नेपाल संबंध को मजबूती प्रदान करने तथा कूटनीतिक प्रयास के तहत वहां अपना सामरिक महत्व बढ़ाने हेतु निर्णयिक कदम उठाने की जरूरत है। भारत नेपाल संबंध पर नेपाल संसदीय दल के उपनेता रामाशीष यादव कहते हैं कि नेपाल और भारत का सदियों से रिश्ता रहा है ऐसा नेपाल का रिश्ता किसी अन्य देश के साथ कभी नहीं हो सकता। जिस समय भारत और नेपाल नहीं था उस समय से इन दोनों देशों के बीच बेटी रोटी का रिश्ता है। जनकपुर से समाजवादी पार्टी के टिकट पर निर्वाचित रामाशीष यादव कहते हैं कि राजनीतिक कारणों से दिल्ली और काठमांडू के रिश्ते में खटास आते रहे हैं लेकिन उस रिश्ते का गंभीर असर कभी भी नेपाल के आम जनमानस पर नहीं पड़ा है। हालांकि राम अशीष यादव यह मानते हैं कि चाइना वन ब्रिज वन रोड के

नीति पर काम कर रहा है, तथा दक्षिण एशिया में अपना प्रभाव बढ़ाना चाहता है। इसके लिए भारत को सजग रहना होगा। भारत को नेपाल के अलावे भूटान और म्यानमार जैसे छोटे-छोटे देशों में अपनी पकड़ मजबूत करनी होगी। उन्होंने स्वीकार किया कि नेपाल के पहाड़ी लोगों को ऐसा लगता है कि भारत मध्येशी लोगों को ज्यादा तरजीह देता है। लेकिन यह पहाड़ी लोगों की भूल है। भारत मध्येशी क्षेत्र से अधिक पहाड़ी क्षेत्रों में अपना पूंजी निवेश कर रहा है। भारत का ऐसा मानना है कि मध्येशी तो भारत के साथ हैं हीं। पहाड़ी लोगों के उन्नति के लिए भी विशेष प्रयास होनी चाहिए। जनकपुर से निर्वाचित सदन के उप नेता रामाशीष यादव नरेंद्र मोदी और आदित्यनाथ योगी से काफी प्रभावित हैं और उनका कहना है कि मोदी के स्वच्छता अभियान तथा बेटी बचाओ बेटी बेटी पढ़ाओ अभियान को नेपाल में भी चलाया जा रहा है। जनकपुर में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के आगमन के बाद रिश्ते और मजबूत हुए हैं। उन्होंने कहा कि भारत की कुल आबादी सवा सौ करोड़ है और नेपाल से प्रगाढ़ा रिश्ता को देखते हुए यदि एक प्रतिशत भारतीय भी पर्यटक के रूप में नेपाल आते हैं तो नेपाल का कायाकल्प हो जाएगा।

# मिशन 3500 क्या है पटना के चर्चित गुरु डॉ एम रहमान का मिशन पढ़िए उन्हीं के कलम से

अनूप नारायण सिंह

जिन छात्र-छात्राओं के अंदर वर्दी पाने का जुनून हो, जिन छात्र-छात्राओं को मंजिल पाने का जुनून हो, जिनके रांगों में दारोगा बनने का चाहत हो, जिसके आँखों में वर्दी पाने का जुनून झलक रहा हो, जिनके दिल में कंधे पर स्टार का जिह हो, उनको लिए 'दारोगा 3500' एक बेहत ही शुभ एवं सुनहरा अवसर है इस अवसर को किसी भी कीमत में न गवाए।

किसी के दिल में अगर दारोगा बनने का चाहत है तो वे किसी द्विदिक के तैयारी में जुट जाएं। परीक्षा के नजदीक आने का इतेजार न करें, बहुत से बच्चे हैं जो सोचते हैं कि जब परीक्षा 1-2 महीना रहेगा तब तैयारी करें, कुछ लोग सोचते हैं कि जब परीक्षा का डेट निकल जायेगा तब तैयारी करें... जी नहीं आप ऐसा बिल्कुल न सोचें हा ठीक है आप 1 महीना पहले भी पढ़कर परीक्षा तो दे सकते हैं पर क्या आप सिर्फ परीक्षा में भाग लेने के लिए तैयारी किये हैं? ? या आपको सबसे बेहतर बनना है??? अगर सिर्फ परीक्षा में भाग देने के लिए बैठना है तब तो ठीक है 1 महीना क्या 1 दिन भी तैयारी करके बैठ सकते हैं परंतु अगर आपको सफल होना है तो आपको पता होगा कि किसी भी कम्पटीशन में कितनी भीड़ रहती एक सीट पर हजारों स्टूडेंट्स रहते हैं इसलिए अगर परीक्षा में सफल होनी है सीट पर कब्जा करना है तो उसके लिए सबसे बेहतर करना होगा औ सबसे बेहतर करने के लिए सबसे ज्यादा मेहनत



भी करना होगा इसलिए समय का इतेजार न करे क्योंकि समय आपका इतेजार नहीं करता। अभी से ही ईमानदारी एवं नियमित रूप तैयारी में जुट जाएं, किसी प्रकार की आगे किस्मत को भी घुटने टेकने पड़ेंगी। क्योंकि इंसान लड़े तो संघर्ष के बल पर हाथ की लकीरें बदल सकता है।

उसे दूर करने का प्रयत्न करें या फिर अपने करीबी से उस बारे में बात करें, हर प्रकार के बाधा से दूर हटकर तैयारी में लगे रहें, अगर परिवार में किसी की समस्या हो रही हो तो घरवाले बस कुछ समय मांगने की कोशिश करें। और पूर्ण रूप से एक रणनीति के साथ तैयारी में लगे रहें जब तक परीक्षा नहीं हो जाता। बेहतर करना है तो परीक्षा के डेट का इंतेजार कभी नहीं करें। आप अपना काम करे आयोग का जो काम है वो अपना करेगा।

बहुत से छात्र-छात्राओं को पैसा बहुत बड़ा बाधा बन जाता है तो पढ़ने के त्रैम में पैसा बाधा न बनने दे जिस किसी को भी पैसे की समस्या है वे मेरे से मिले, अद्यता अदिति गुरुकुल में कोई बच्चा पैसे की समस्या से कभी लौट कर नहीं जाता न कभी जायेगा।

दारोगा का स्पेशल बैच प्रारम्भ हो चुका है और भी बैच प्रारम्भ होने जा रहा है जो बच्चे अभी तक तैयारी में लगे नहीं है वे जल्दी जगे और तैयारी में जुटे, क्योंकि सफलता ऐसे ही नहीं मिलती है सफलता छीननी पड़ती है उसके लिए लड़ना पड़ता है, समय का इतेजार नहीं करे क्योंकि समय आपका इतेजार नहीं करती है कुछ दिन के लिए अपने आप को झोंक दी तैयारी में, फिर सफलता जरूर मिलेगी। हर पढ़ने वाले का परिणाम अच्छा आता है हा कभी कभी किस्मत साथ नहीं देती कोई बात नहीं ये सोच कर आगे बढ़े की परिश्रम के आगे किस्मत को भी घुटने टेकने पड़ेंगी। क्योंकि क्योंकि इंसान लड़े तो संघर्ष के बल पर हाथ की लकीरें बदल सकता है।

# अज्ञानता के अंधकार दूर करते अमरदीप ज्ञा गौतम

अनूप नारायण सिंह

अपनी अलग सोच व काम के अलग अंदाज की वजह से अमरदीप ज्ञा गौतम ने एलिट इंस्टीचूट को शिखर तक पहुंचा दिया है। बच्चों के साथ सपने देखना, उसके सपने बुनना और फिर उन सपनों को अंजाम तक पहुंचाने के लिए दिन-रात की मेहनत का ही नतीजा है कि हर साल एलिट इंस्टीचूट देश को बेहतर इंजीनियर और डॉक्टर देता रहा है।

सारा जीवन कालचक्र है,  
आना-जाना यहां खेल है।  
अपने उज्ज्वल लक्ष्य को देखा,  
रहा पुकार न कर अनदेख।  
आशाओं के दीप जलाकर कर्म करो,  
बस यही धर्म है !

## तनाव में भी हंसना-हंसाना...

अगर 2019 के रिजल्ट पर नजर डालें, तो 178 जेर्ड्स मेन, 23 जेर्ड्स एडवांस्ड, 69 नीट-मेडिकल में और 2018 में 165 जी-मेन में, 30 बच्चे जी-एडवांस और नीट-2018 में 63 बच्चों को क्वालिफाइड करवा चुके अमरदीप ज्ञा गौतम का सफर काफी लंबा है। 18 सालों से हर दिन बच्चों के बीच रहते, उनसे फ्रेंडली बातें करते, उनकी प्रॉब्लम को सुनते और फिर उस प्रॉब्लम को दूर करने में लग जाते।

इस दौरान एक बार भी उनके चेहरे पर थकान का भाव नहीं आता।

एलिट इंस्टीचूट की सफलता के पीछे उनकी बेहतर सोच और बेहतर कर्म ही है कि वो आज बच्चों को बेहतर सुविधा के साथ-साथ बेहतर पर्याचर प्रोवाइड करवा रहे हैं।

## स्मार्ट स्टडी और प्रैक्टिकल-एप्रोच...

पटना में एलिट इंस्टीचूट ऐसा पहला हुआ, जो अपने बच्चों की सुविधा और उसके ज्ञान को उन्हीं की लैंगेज में समझाने का ट्रेन शुरू कर पाने में सफल हो पाया। एलिट अपने स्टूडेंट्स के लिए स्मार्ट-स्टडी के साथ-

साथ मॉडर्न स्टडी-पैकेज भी मुरीदा करवा रहा है। अब दसवीं पास स्टूडेंट्स को मेडिकल व इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए श्री इयर कोर्स भी सबसे पहले यहीं शुरू करवाया जाएगा।

एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और डायरेक्टर अमरदीप ज्ञा गौतम ने बताया कि बच्चों के स्किल को अपडेट करने के लिए हर 45 दिनों पर बच्चों की काउंसिलिंग



करवायी जाती है।

इसमें स्टूडेंट्स की इन्जी, उसका लेवल, उसकी समझदारी का आंकलन करने के बाद उसकी कमियों को दूर करने की दिशा में भी काम किया जाता है। सिर्फ कोचिंग हीं नहीं बल्कि सेल्फ स्टडी के लिए लाइब्रेरी, डिस्क्शन हाल, ऑन लाइन और ऑफ लाइन सिस्टम के साथ-साथ इंग्लिश की पढ़ाई भी मुहैया करवायी जा रही है।

## योग-विज्ञान और कल्पना-शक्ति के सदुपयोग के प्रयोग

एलिट संस्थान एक ऐसा संस्थान हो पाया, जहाँ छात्र-छात्राओं को नियमित-रूप से योगासन, प्राणायाम और ध्यान के प्रयोगों से उनको शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक संवर्धन का लाभ मिलता है। वहीं संस्थान के निदेशक अमरदीप ज्ञा गौतम का शोध "रिदिमिक-एक्शन" के माध्यम से बच्चों को प्रकृति के साथ अपनी कल्पना-शक्ति को जोड़ना सिखाया जाता है।

## जनरल लाइफ के एजांपल से प्रॉब्लम दूर...

कुछ स्टूडेंट्स की शिकायत रहती है कि वे सवाल करने से डरते हैं।

अगर सवाल करते हैं, तो सही जवाब नहीं मिल पाता है।

लेकिन, एलिट इंस्टीचूट में बच्चों को आने वाले सब्जेक्ट्स परेशानी को जनरल लाइफ के एजांपल

देकर समझाया जाता है।

एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप ज्ञा गौतम ने बताया कि "मेरे इंस्टीचूट में टीचर और स्टूडेंट के बीच के गैप को कम किया जाता है। फ्रेंडली माहौल होने की वजह से बच्चे आसानी से अपनी पढ़ाई कर पाते हैं, साथ ही उनके सवालों का सही-सही जवाब भी दिया जाता है"।

12 टीचर और 10 नन टीचिंग स्टॉफ के साथ मॉडर्न टीचिंग हब के रूप में तब्दील हो चुका एलिट इंस्टीचूट बच्चों के सवालों के जवाब पर खरा उतर रहा है। यहाँ पर इंजीनियरिंग और मेडिकल दोनों के ही एक्सपर्ट द्वारा इसकी पढ़ाई करवायी जाती है।

## विरासत में मिला शिक्षण कार्य...

बेगूसराय के सांस्कृतिक व सामाजिक परिवेश से आगे बढ़ने के बाद अमरदीप ज्ञा गौतम पटना साइंस कॉलेज और बी.एच.यू. से अपनी पढ़ाई करने के बाद संघ लोकसेवा आयोग के लिये चुने गये, पर उन चीजों में मन नहीं लगने के कारण शिक्षण-कार्य में जुट गये।

अमरदीप ज्ञा गौतम के माँ और पिताजी भी बिहार-सरकार के सेवा-निवृत शिक्षक हैं, जिन्होंने लगभग 28 वर्षों तक बिहार की शिक्षा में अपना योगदान दिया।

ऐसे में श्री गौतम ने शिक्षण का दायित्व विरासत के तौर पर ग्रहण किया।

वह फिजिक्स के विषयात शिक्षक हैं और बच्चों को खेल-खेल में फिजिक्स को आसान बना कर समझाने के हुनर में माहिर हैं।

## फिजिक्स से सोशल एक्टिविटी तक...



एलिट इंस्टीचूट के डायरेक्टर अमरदीप झा गौतम को जब भी मौका लगता है कि वो सोसायटी के गंभीर मसलों पर अपनी कलम भी खिंगाने लगते हैं।

फिजिक्स के जानकार अमरदीप झा गौतम एक साथ कई विधाओं में महारात रखते हैं।

मसलन कि उनकी लिखी नाटक 'आम्रपाली', 'सुदमा', 'मेरी आवाज़', 'चंद्र-पृथ्वी', 'शबरी' 'सीता' और 'द्रौपदी' ने उनकी लेखनी और उनके विचारों को बहुआयामी सिद्ध किया।

वहीं उनकी कवितायें, शायरी की बेहद रोमांचकारी प्रस्तुति लोगों को झूमने पर विवश कर देती है।

गाना लिखने का शौक और उसकी अदायगी एलिट इंस्टीचूट के एनुअल-फंक्शन में दिख जाती है।

### एनुअल फंक्शन की मर्स्ती...

एनुअल फंक्शन में अपने लिखे गीत, नाटक, भाषण और काव्य पाठ के साथ उसे बच्चों की आवाज में पिरोकर पेश करवाया जाता है।

समाज के विभिन्न-वर्गों के विभूतियों और देश के लिये



समर्पित व्यक्तियों को "सरस्वती-सम्मान", "प्रतिभा-सम्मान" और "बाबा-नागर्जुन सम्मान" से अलंकृत किया जाता है।

स्वभाव से निर्मल अमरदीप झा गौतम ने बताया कि हरेक के अंदर एक्टर छिंगा रहता है। ऐसे में उसे उभार कर निकालने का दायित्व भी हम जैसे लोगों का ही है, इसलिए इस दिन को भी बच्चे काफी यादगार बनाते हैं और मैं भी इसमें जमकर जुट जाता हूँ।

### मेधावी बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं...

- ज्ञानोदय योजना के अंतर्गत एलिट-21 प्रोग्राम चलाया जाता है।
- इसमें वैसे 21 बच्चों का सेलेक्शन किया जाता है जो गरीब होते हैं।
- उनके अंदर जबरदस्त मेधा रहती है, साथ ही उसके घर की वार्षिक आय एक लाख या उससे कम हो।
- गरीब बच्चों के लिए 25 परसेंट की स्कॉलरशिप दी जाती है।
- लड़कियों को पूरे साल बीस परसेंट की छूट उपलब्ध करवायी जाती है।
- 2019 से ग्रामीण-परिवेश के स्टूडेंट्स को कंप्यूटर की पढ़ाई और ऑनलाइन-टेस्ट के प्रैक्टिस के लिये कंप्यूटर-लैब की व्यवस्था की जायेगी।
- प्रैक्टिकल-एप्रोच से फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथ और बायोलॉजी पढ़ाया जाता है।

### सम्मान और पुरस्कार...

2012 में स्थानीय न्यूज चैनल की ओर से बेस्ट मोटिवेटर का अवार्ड मिल चुका है।

2013 में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के समूह द्वारा युवा शिक्षा सम्मान।

2014 में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए शिक्षा-रत्न पुरस्कार।

**2015 में आईनेक्स्ट-अखबार के द्वारा एजुकेशनल एचिवर्स-अवार्ड।**

2015 में केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री से सरस्वती-सम्मान।  
2016 में पत्र-पत्रिकाओं द्वारा लालबहादुर शास्त्री सम्मान।

2017 में जागरण-समूह द्वारा गुरु-सम्मान।

2018 में गैर-सामाजिक संगठन द्वारा युवा-दर्शनिक सम्मान।  
2018 में चंपारण में युवा-कविरत्न सम्मान।

### प्रोफाइल :

नाम- अमरदीप झा गौतम

प्रख्यात शिक्षाविद, फिजिक्स-टीचर, कौरियर-काउंसलर, साहित्यकार, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीति-विशेषक सामाजिक चिंतक और एलिट इंस्टीचूट के संस्थापक और निदेशक।

**अमरदीप झा गौतम के बारे में कुछ खास बातें:**

पिता : श्री तेज नारायण झा।

माता : श्रीमति नगीना झा।

जन्म तिथि : 12 फरवरी, बैगूसराय।

शौक : भौतिकी पढ़ाना, काव्य-लेखन और वाचन, गजल लिखना, किताबें पढ़ाना, सामाजिक-जागरूकता को बढ़ाना।

फेवरेट मूवी : पेज श्री, आँधी, ब्लैक, डोर, पिंजर, आमिर, बाहुबली, मणिकर्णिका।

बेस्ट एक्टर : अमिताभ बच्चन।

बेस्ट एक्ट्रेस : कोंकणा सेन और कंगना राणावत।

गजल : जगजीत सिंह और गुलाम अली।

फेवरेट नॉवेल : कर्मभूमि, गोदान, दिनकर और निराला की कवितायें, जयशंकर प्रसाद की कामायनी, वाजपेयी जी की मेरी "इक्यावन कवितायें" का संग्रह शामिल हैं।

इंसायरिंग पर्सन : अमिताभ बच्चन, हरेक पल ऐसा लगता है कि वो कुछ न कुछ सीख रहे हैं, जिज्ञासा है।

**आंधियां बहुत तेज हैं कुछ दीप झिलमिलाते हैं !  
ये वही हैं जो अंधेरों से रौशनी चीर लाते हैं !!**



# मुंबई में बारिश से तबाही, कईयों की गयी जान

महाराष्ट्र के मुंबई और पुणे में भारी बारिश के कारण दीवार गिरने की कई घटनाएँ हुई हैं। बीते 25 घण्टों के दौरान तीन ऐसी ही अलग-अलग घटनाओं में मुंबई, कल्याण और पुणे में अब तक 24 लोगों की मौत हो गई है।

पश्चिम मुंबई के मलाड में एक कपाड़ंड की दीवार गिरने से बीती रात भारी तबाही हुई और इसमें 15 लोगों की मौत हो गई। शहर में आपदा प्रबंधन के अधिकारियों के मुताबिक अब तक करीब 75 लोग घायल बताए गए हैं। राहत बचाव अभियान अब भी जारी है। घायलों को शताब्दी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मृतकों के परिजनों को 5 लाख मुआवजा देने की घोषणा की है। एक अन्य घटना में मुंबई के पास कल्याण में दीवार गिरने के कारण तीन मौतें हुई हैं। एक अन्य दीवार गिरने की घटना में दो महिलाओं और एक बच्चे की मौत हो गई।

मुंबई में जारी लगातार मूसलाधार बारिश के कारण शहर पानी-पानी हो गया है। जल जमाव के कारण रेल सेवाएं बाधित हुई हैं, ट्रैफिक में घटों लोग फँसे रहे और फ्लाइट सेवाओं में देरी हो रही है। म्यूनिसिपल कमिशनर प्रवीन परदेशी ने स्कूल और कॉलेज बंद रखने की घोषणा की है। भारतीय मौसम विभाग का कहना है कि अभी भारी बारिश थमने वाली नहीं है और शुक्रवार तक बारिश जारी रहेगी।

बीते दो दिनों से मुंबई में लगातार बारिश हो रही है। इससे मुंबई शहर में रहने वालों का जनजीवन बुरों तरह प्रभावित हुआ है। लेकिन ये पहला मौका नहीं है जब मुंबई वासियों को बारिश के बाद जलभराव की समस्या से दो चार होना पड़ रहा हो। हर साल बारिश शुरू होते ही सड़कों पर पानी जमा होने लगता है। इसके बाद शहरवासियों को ट्रैफिक जाम से लेकर तमाम समस्याओं से जूझना पड़ता है। ऐसे में सबाल उठता है कि वो कौन से कारण हैं जिसकी वजह से मुंबई को हर साल इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

## क्या भौगोलिक स्थिति है जिम्मेदार?

मुंबई को एक ऐसे शहर के रूप में जाना जाता है जो कि सात द्वीपों को जोड़कर बनाया गया है। इसमें एक और समुद्र है। वर्ही, दूसरी और खाड़ी का क्षेत्र है। एक समय में इन द्वीपों पर 22 पहाड़ियां थीं। ऐसे में जब पहाड़ि इलाकों पर पानी बरसता है तो वह बहकर निचले इलाकों और फिर खाड़ी क्षेत्र में जाता है।

लेकिन पहाड़ि और खाड़ी क्षेत्र के बीच एक दलदली भूमि हुआ करती थी जो कि अब मुंबई के उपनगरों में तब्दील हो चुकी है। ऐसे में बारिश का पानी पहाड़ से बहकर इन उपनगरों में फंस जाता है और यहां जलभराव की समस्या सामने आती है। साथन, चूनाभट्टी, दादर पर्यावरण समेत मुंबई के कई इलाकों ऐसी ही जमीन को कृत्रिम तरीके से भरने के बाद अस्तित्व में आए हैं।

## दलदली वनों का नाश

मुंबई शहर तीन और समुद्र से घिरा हुआ है। समुद्र, खाड़ी और शहर के बीच दलदली बन हैं जो कि शहर की जमीन को समुद्र के पानी से संरक्षित करते हैं।

पर्यावरणविद् ऋषि अग्रवाल मानते हैं, "पिछले कई सालों से मुंबई में अवैध झुग्गियों और इमारतों के बनने की वजह से दलदली बनक्षेत्र में कमी आ रही है। इस जंगल की वजह से हाई टाइड के समय समुद्री जल मुंबई में घुसने की जगह इस जंगल में फँस जाता है। इसकी वजह से सृदूर अपरदन नहीं होता है। लेकिन पिछले कई सालों से ये जंगल खत्म हो रहे हैं।" इन वनों पर अध्ययन कर चुके एक अन्य पर्यावरणविद् गिरीश रात का मानना है कि इस बन क्षेत्र का 70 से ज्यादा फीसदी भाग हम पहले ही नष्ट कर चुके हैं और ये बहुत खतरनाक है।"

## बारिश और हाई टाइड

मुंबई शहर के इतिहास पर नजर डालें तो ये शहर हमेशा से जल भराव का शिकार होता रहा है। लेकिन पिछले 15 सालों में ये देखने में आया है कि जलभराव की समस्या हर साल होने लगी है। लोकसत्ता अखबार से जुड़े पत्रकार संदीप आचार्य बताते हैं, "पिछले कई सालों से मुंबई की बारिश का पैटर्न बदल चुका है। अब बहुत कम समय में बहुत ज्यादा पानी बरसता है। उसी वक्त आगे चार मीटर से ऊपर की हाई टाइड आए तो मुंबई में काफी जलभराव होता है।"

मौसम विभाग के निदेशक कृष्णानंद होसलिकर इस बात को नहीं मानते हैं। उनका



कहना है, "बारिश का पैटर्न बदलता है या नहीं, ये तथ करने के लिए हमें लगभग 25 से 30 सालों की बारिश के आँकड़ों का अध्ययन करना होगा। तब जाकर हम पुख्ता तौर पर हम ये कह पाएंगे।" "मुंबई में बारिश टुकड़ों में गिरती है। इसमें ज्यादा, बहुत ज्यादा और तीव्र इन तीन श्रेणियां हैं। अगर दिन में 20 सेटीमीटर से ज्यादा बारिश हो तो उसे तीव्र श्रेणी की बारिश कहते हैं। ऐसी बारिश मौसम में चार या पाँच बार ही होती है। अगर ऐसी बारिश हो रही हो और हाई टाइड आए तो मुसीबतें बढ़ जाती हैं।" मुंबई में बारिश का पानी समुद्र तक बहा कर ले जाने के लिए पाइप लाइनें हैं। जब हाई टाइड होता है तो समुद्र में गिरने वाले इन पाइपों के दरवाजे बंद कर दिए जाते हैं ताकि समंदर का पानी अंदर न आ जाए।

ऐसे में जब तेज बारिश हो जाए और हाई टाइड की वजह से पानी बाहर ले जाने वाले पाइप भी बंद हों तो शहर में पानी भरना लाजमी है।

## शहर के विकास में क्रमियां

आचार्य कहते हैं, "कुछ साल पहले तक मुंबई का क्षेत्रफल साढ़े चार सौ वर्ग किलोमीटर था। अब ये छह सौ तीन वर्ग किलोमीटर हो चुका है। ये अतिरिक्त क्षेत्र समंदर में कंक्रीट-मिट्टी डालकर हासिल किया है।" नगर विकास से जुड़े विषयों को जानने वाले सुलक्षणा महाजन बताती हैं, "ये क्षेत्र बढ़ते हुए हमनें नाले, रास्तों और पानी जाने के रास्तों पर गौर नहीं किया। किसी भी शहर को बसाने की योजना बनाते हुए पहाड़, तराई क्षेत्र, नदी और नालों जैसे चार भौगोलिक चीजों पर गौर करना जरूरी होता है। शहर के नक्शे पर इन चीजों को चिह्नित किया जाता है ताकि आने वाले समय में इनका खाल रखा जाए। लेकिन मुंबई का विकास करते समय इन चीजों को नजरअंदाज किया गया।"

## जलभराव की समस्याएं ज्यादातर उपनगरों में सामने आती हैं।

इसका कारण बताते हुए महाजन कहती हैं, "ब्रिटिश राज में जल निकासी को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त कदम उठाए गए थे। वर्ली के पानी को समंदर तक ले जाने वाला नाला इसका एक बड़ा उदाहरण है। साल 1951 तक मुंबई के उपनगर मुंबई नगरपालिका के अंतर्गत नहीं आते थे। लेकिन 1951 के बाद धीरे-धीरे ये सभी इलाके एमसीजीएम के तहत आ गए। लेकिन इन इलाकों में जलनिकासी के लिए कोई व्यवस्था नहीं बनाई गई।" आचार्य मानते हैं कि सड़क निर्माण के दौरान जलनिकासी की व्यवस्था नहीं की जाती है। वो कहते हैं, "जब सड़कों का निर्माण किया गया तब ये ध्यान नहीं रखा गया कि सड़क के मध्य का भाग थोड़ा ऊंचा और सड़क के किनारों पर नलियों हों ताकि सड़क पर गिरने वाला पानी सड़क से निकल जाए।"

## प्रशासनिक कारण

मुंबई शहर 14 से ज्यादा अलग-अलग सरकारी विभागों के अधीन है। उदाहरण के लिए, मुंबई का कोई क्षेत्र बीएमसी के अधीन है तो उससे सदा हुआ दूसरा हिस्सा रेलवे के अधीन है।

# विदेशी पर्यटक का आगमन हुआ दरभंगा जिला, इतिहास के साथ साथ पुरातत्व की भी ली जानकारी

जाहिद अनवर (राजू) / दरभंगा

दरभंगा--महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय, दरभंगा में मैक्सिको के बिजनेसमैन डेनियल ग्राफ अपने पूरे परिवार सहित और क्लोविस कम्युनिटी कॉलेज, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के मेकार्ट्रोनिक्स एवं इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन के प्रोफेसर मैथू ग्राफ विशेष रूप से सभी कलावस्तुओं और पुरावशेषों को देखने के लिए आए हुए थे। इस मौके पर संग्रहालय के तकनीकी सहायक चंद्र प्रकाश ने काफी विस्तार से अतिथियों को सभी पुरावशेष के बारे में जानकारियां दी। इस मौके पर विकसित भारत फाउंडेशन के सिनियर साइंस एवं आईटी इंस्ट्रूक्टर फवाद गजली ने डैनियल ग्राफ का परिचय देते हुए बताया कि विंगत 3 वर्षों से उनके संपर्क में है यह भारत से भी व्यापार कर रहे हैं मार्बल का जो जो राजस्थान से गुजरात और फिर सीधा मैक्सिको तक जाता है इसके साथ मोरिंगा जिसे हम सोहजन के नाम से जानते हैं, कैप्सूल के रूप में परिवर्तित किया जाता है खुद की कम्पनी भी चला रहे हैं और उनके ही अनुरोध से आज हमारे बीच दरभंगा के अतिथि हमारे बीच हैं। यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। इस मौके पर श्री चन्द्र प्रकाश द्वारा अतिथियों को महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह के जीवन पर लिखी किताब भी भेंट की गई।



## चिमकी बुखार इफेक्टेड एरिया में वहां के स्थानीय मुखिया के साथ में जा कर सामग्री वितरीत किया

भारत सरकार के केंद्रीय मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी के जन्मदिन पर इंडियन ऑयल श्रमिक संघ (पूर्वी झंग्रे) के महामंत्री विक्रम कुमार और भाजयुमों के प्रवक्ता शशि रंजन ने मुजफ्फरपुर बिहार में चिमकी बुखार इफेक्टेड एरिया में वहां के स्थानीय मुखिया के साथ में जा कर सामग्री वितरीत किया, इंडियन ऑयल श्रमिक संघ के विक्रम कुमार ने बताया कि भाजपा के राष्ट्रीय सह मीडिया प्रभारी एमएलसी डॉ संजय मयूर, भाजयुमों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष संतोष रंजन, चर्चित बिहार के संपादक अधिजीत कुमार, कैटन राहुल सिंह आदि ने सहयोग किया।



# चंद्रयान-2 की कमान संभालने वाली कौन हैं ये दो महिलाएं



भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एक बार फिर चांद पर अपना उपग्रह भेजने जा रहा है। इस उपग्रह को 15 जुलाई को सुबह 2:51 बजे आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से छोड़ा जाएगा।

इससे पहले अक्टूबर 2008 में इसरो ने चंद्रयान-1 उपग्रह को चांद पर भेजा था।

यह अभियान इसलिए भी खास बन गया है क्योंकि यह पहला ऐसा अंतर्राष्ट्रीय मिशन होगा जिसकी कमान दो महिलाओं के हाथ में है। रितू करिधल इसकी मिशन डायरेक्टर और एम. वनीता प्रोजेक्ट डायरेक्टर हैं।

इसरो के अध्यक्ष डॉ. के सिवन ने चंद्रयान 2 की प्रेस कांफ्रेंस के दौरान कहा था, "हम महिलाओं और पुरुषों में कोई अंतर नहीं करते। इसरो में करीब 30 प्रतिशत महिलाएं काम करती हैं।"

यह पहली बार नहीं है जब इसरो में महिलाओं ने किसी बड़े अभियान में मुख्य भूमिका निर्भाइ हो। इससे पहले मंगल मिशन में भी आठ महिलाओं की बड़ी भूमिका रही थी।

इस बार चंद्रयान 2 मिशन की कमान संभालने वालीं रितू करिधल और एम. वनीता कौन हैं, ये जानते हैं। चंद्रयान 2 की मिशन डायरेक्टर रितू करिधल को 'रॉकेट वुमन ऑफ इंडिया' भी कहा जाता है। वह मार्स

ऑर्बिटर मिशन में डिप्टी ऑपरेशंस डायरेक्टर भी रह चुकी हैं। करिधल के पास एरोस्पेस में इंजीनियरिंग डिग्री है। वह लखनऊ विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट हैं। साल 2007 में उन्हें पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से इसरो यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड भी मिल चुका है। करिधल की बचपन से ही विज्ञान में खास दिलचस्पी थी। मार्स ऑर्बिटर मिशन के बाद बीबीसी को दिए एक इंटरव्यू में उन्होंने बताया था, "मैं चांद का आकार घटने और बढ़ने को लेकर हैरान होती थी और अंतरिक्ष के अधरे के पार की दुनिया के बारे में जानना चाहती थी।"

फिजिक्स और मैथ्स रितू करिधल के पसंदीदा विषय रहे हैं। वो नासा और इसरो प्रोजेक्ट्स के बारे में अखबार की कटिंग रखा करती थीं। स्पेस साइंस से जुड़ी हर छोटी बात को समझने की कोशिश करती थीं। विज्ञान और अंतरिक्ष को लेकर उनका यही जुनून उन्हें इसरो तक ले गया। वो बताती हैं, "पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री पूरी करने के बाद मैंने इसरो में नौकरी के अप्लाई किया था और इस तरह मैं स्पेस साइंटिस्ट बन पाई।" वह करीब 20-21 सालों में इसरो में कई प्रोजेक्ट्स पर काम कर चुकी हैं। इनमें मार्स ऑर्बिटर मिशन बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

## मंगल की महिलाएं

रितू करिधल कहती हैं कि परिवार के सहयोग के बिना काई भी अपना लक्ष्य पूरा नहीं कर सकता है। उनके दो बच्चे हैं, एक बेटा और बेटी। वो कहती हैं कि मां बनने के बाद वो घर रहकर भी ऑफिस का काम करती थीं और तब उनके पति बच्चों को संभालने में उनकी पूरी मदद करते थे। जब आपके परिवार के सदस्य आपका जुनून और मेहनत देखते हैं तो वो भी उसमें आपके साथ जुड़ जाते हैं। उन्होंने बताया, "जब मेरा बेटा 11 साल का और बेटी 5 साल की थीं। तब हम समय बचाने के लिए मल्टीटास्किंग करते थे। ऑफिस से मैं बुरी तरह थक जाने के बावजूद जब मैं घर जाकर अपने बच्चों को देखती और उनके साथ समय बिताती थीं तो मुझे बहुत अच्छा लगता था।"

वह कहती है कि अक्सर ये कहा जाता है कि पुरुष मंगल ग्रह से आते हैं और महिलाएं शुक्र ग्रह से आती हैं। लेकिन मंगल अभियान कि सफलता के बाद कई लोग महिला वैज्ञानिकों को 'मंगल की महिलाएं' कहने लगे हैं। उन्होंने कहा, "मैं पृथ्वी पर रहने वाली महिला हूं, एक भारतीय महिला जिसे एक बेहतरीन मौका

मिला है।"

स्टार प्लस के एक कार्यक्रम 'टेड टॉक' में रितु करिधल ने कहा था, "मुझे लगता है जो आत्मविश्वास मुझे मेरे माता-पिता ने 20 साल पहले दिया था वो आज लोग अपनी बच्चियों में दिखा रहे हैं। लेकिन हमें देश के गांवों, कस्बों में ये भावना लानी है कि लड़कियां चाहे बड़े शहर की हों या कस्बों की पर अगर मां-बाप का सहयोग हो तो वो बहुत आगे बढ़ सकती हैं।"

एम. वनिता चंद्रयान 2 में प्रोजेक्ट डायरेक्टर के तौर पर काम कर रही हैं। वनीता के पास डिजाइन इंजीनियर का प्रशिक्षण है और एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया से 2006 में बेस्ट वृमन सार्विस्ट का अवॉर्ड मिल चुका है। वो बहुत सालों से सेटलाइट पर काम करती आई हैं।

विज्ञान मामलों के जानकार पल्लव बागला बताते हैं कि प्रोजेक्ट डायरेक्टर पर किसी अभियान पूरी जिम्मेदारी होती है। एक मिशन का एक ही प्रोजेक्ट डायरेक्टर होता है। जबकि किसी मिशन पर एक से ज्यादा मिशन डायरेक्टर हो सकते हैं जैसे ऑर्बिट डायरेक्टर, सेटलाइट या रॉकेट डायरेक्टर। रितु करिधल कौन सी मिशन डायरेक्टर हैं अभी ये साफ नहीं हैं।

एम. वनीता को इसमें प्रोजेक्ट के सभी पहलुओं को देखना होगा जिससे अभियान सफल हो सके। प्रोजेक्ट का हर काम उनकी निगरानी में होगा। उनसे ऊपर एक प्रोग्राम डायरेक्टर होता है।

### क्या है चंद्रयान 2 अभियान

चंद्रयान-2 बेहद खास उपग्रह है क्योंकि इसमें एक ऑर्बिटर है, एक 'विक्रम' नाम का लैंडर है और एक 'प्रज्ञान' नाम का रोवर है। पहली बार भारत चांद की सतह पर 'सॉफ्ट लैंडिंग' करेगा जो सबसे मुश्किल काम होता है।



इसकी कुल लागत 600 करोड़ रुपये से अधिक बताई जा रही है। 3.8 टन वज़नी चंद्रयान-2 को यानी जीएसएलवी मार्क-तीन के जरिए अंतरिक्ष में भेजा एगा। भारत अपने उपग्रह की छाप चांद पर छोड़ेगा यह बहुत ही अहम मिशन है। इसरो का मानना है कि मिशन कामयाब होगा।

इससे पहले चंद्रयान-1 का मिशन दो साल का था लेकिन उसमें खराबी आने के बाद यह मिशन एक साल में ही समाप्त हो गया। उस लिहाज से अगर देखा जाए तो इसरो कहता है कि उसने चंद्रयान-1 से सबक लेते हुए चंद्रयान-2 मिशन में सारी कमियों को दूर कर दिया है।



# योग से जीवन निर्माण का नया दौर



अनादिकाल से भारतभूमि योग भूमि के रूप में विख्यात रही है। यहां का कण-कण, अणु-अणु न जाने कितने योगियों की योग-साधना से आप्लावित हुआ है। योगियों की गहन योग-साधना के परमाणुओं से अधिषिक्त यह माटी धन्य है और धन्य है यहां की हवाएं, जो योग-साधना के शिखर पुरुषों की साक्षी हैं। संसार के प्रथम ग्रंथ ऋष्वेद में कई स्थानों पर यौगिक क्रियाओं के विषय में उल्लेख मिलता है। भगवान शंकर के बाद वैदिक ऋषि-मुनियों से ही योग का प्रारम्भ माना जाता है। इसके पश्चात पतंजली ने इसे सुव्यवस्थित रूप दिया। कभी भगवान महावीर, बुद्ध एवं आद्य शंकराचार्य की साधना ने इस माटी को कृतकृत्य किया था। इस महान् भूमि ने योग की गंगा को समूची दुनिया में प्रवाहित करके मानवता का महान् उपकार किया है।

भारत की धरा साक्षी है रामकृष्ण परमहंस की परमहंसी साधना की, साक्षी है यहां का कण-कण विवेकानंद की विवेक-साधना का, साक्षी है क्रांत योगी से बने अध्यात्म योगी श्री अरविन्द की ज्ञान साधना का और साक्षी है। योग साधना की यह मंदाकिनी न कभी यहां अवरुद्ध हुई है और न ही कभी अवरुद्ध होगी। इसी योग मंदाकिनी से आज समूचा विश्व आप्लावित हो रहा है, निश्चित ही यह एक शुभ संकेत है सम्पूर्ण मानवता के लिये। विश्व

योग दिवस की सार्थकता इसी बात में है कि सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, विश्व मानवता का कल्याण हो। सचमुच योग वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। लोगों का जीवन योगमय हो, इसी से युग की धारा को बदला जा सकता है। गीता में लिखा भी है—योग स्वयं की स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुँचने की यात्रा है। योग धर्म का वास्तविक एवं प्रायोगिक स्वरूप है। दरअसल परम्परागत धर्म तो लोगों को खूँटे से बाँधता है और योग सभी तरह के खूँटों से मुक्ति का मार्ग बताता है। इसीलिये मेरी दृष्टि में योग मानवता की न्यूनतम जीवनशैली होनी चाहिए। आदमी को आदमी बनाने का यही एक सशक्त माध्यम है। एक-एक व्यक्ति को इससे परिचित- अवगत कराने और हर इंसान को अपने अन्दर झांकने के लिये प्रेरित करने हेतु विश्व योग दिवस को और व्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के उपक्रम होने चाहिए। इसी से योगी बनने और अच्छा बनने की ललक पैदा होगी। योग मनुष्य जीवन की विसंगतियों पर नियंत्रण का माध्यम है।

किसी भी व्यक्ति की जीवन-पद्धति, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, जीवन जीने की शैली-ये सब उसके विचार और व्यवहार से ही संचालित होते हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में, एक-दूसरे के साथ कदमताल से चलने

की कोशिश में मनुष्य अपने वास्तविक रहन-सहन, खान-पान, बोलचाल तथा जीने के सारे तौर-तरीके भूल रहा है। यही कारण है, वह असमय में ही भाति-भाति के मानसिक/भावनात्मक दबावों के शिकार हो रहा है। मानसिक संतुलन गड़बड़ा जाने से शारीरिक व्याधियां भी अपना प्रभाव जमाना चालू कर देती हैं। जितनी आर्थिक संपन्नता बढ़ी है, सुविधादायी संसाधनों का विकास हुआ है, जीवन उतना ही अधिक बोझिल बना है। तनावों/दबावों के अंतहीन सिलसिले में मानवीय विकास की जड़ों को हिला कर रख दिया है। योग ही एक माध्यम है जो जीवन के असन्तुलन को नियोजित कर जीवन में शांति, स्वस्थता, संतुलन एवं खुशहाली का माहौल निर्मित करता है।

अंतःकरण को शुद्ध करने के लिए कर्म, भक्ति, ज्ञान, जप, तप, प्राणायाम तथा सत्संग आदि अनेक साधन हैं। ये समस्त साधन विषयासंक्षिकी के त्याग पर बल देते हैं। विषयासंक्षिकी का त्याग ही वास्तविक विषय-त्याग है। आसंक्षिकी अविद्याजनित मोह से होती है। जहां तक बुद्धि मोह से ढकी हुई है, वहां तक विषयों से वास्तविक वैराग्य नहीं हो सकता, कैवल्य प्राप्ति एवं मोक्ष तो संभव ही नहीं है। कहा गया है कि जब हमारा जीवन सांसारिक दलदल से निकल जाएगा तभी वास्तविक सुख एवं

शाति अवतरित होगी। मानवीय व्यक्तित्व को समग्रता से उद्घाषित परिभाषित करने वाले चार सकार हैं- स्वास्थ्य, सौंदर्य, शक्ति और समृद्धि। इनकी प्राप्ति और सुरक्षा के लिए प्रत्येक समझदार व्यक्ति सतत प्रयत्नशील रहता है पर अपेक्षा है उल्लेखित चारों तत्त्व श्रृंखलाबद्ध हों, एक दूसरे से जुड़े हुए हों। इन्हें टुकड़ों-टुकड़ों में बांट कर जीवन को समग्रता प्रदान नहीं की जा सकती। उक्त सकार चतुष्टी को एक सूत्रता में जोड़ने वाला सशक्त माध्यम है योग यानी स्वस्थ मनोभूमि का निर्माण। मन का धरातल यदि स्वस्थ न हो तो स्वास्थ्य कब क्षीण हो जाए, सौंदर्य पृष्ठ कब कुम्हला जाए, शक्ति कब चुक जाए और समृद्धि की इमारत कब भरभरा कर गिर पड़े, कहा नहीं जा सकता। अतः योग को जीवनशैली बनाना आवश्यक है।

भारत में विभिन्न योग पद्धतियां प्रचलित हैं, मेरे गुरु आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान के रूप में नवीन ध्यान पद्धति प्रदत्त की है, जो अंतःसौन्दर्य को प्रकट करने एवं उसे देखने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। स्वयं से स्वयं के साक्षात्कार का यह विलक्षण प्रयोग है। यह योग मनुष्य को पवित्र बनाता है, निर्मल बनाता है, स्वस्थ बनाता है। यजुर्वेद में की गयी पवित्रता-निर्मलता की यह कामना हर योगी के लिए काम्य है कि ह्याह्यादेवजन मुझे पवित्र करें, मन में सुसंगत बुद्धि मुझे पवित्र करे, विश्व के सभी प्राणी मुझे पवित्र करें, अभिन्न मुझे पवित्र करें। हङ्ग योग के पथ पर अविराम गति से वही साधक आगे बढ़ सकता है, जो चित्त की पवित्रता एवं निर्मलता के प्रति पूर्ण जागरूक हो। निर्मल चित्त वाला व्यक्ति ही योग की गहराई तक पहुंच सकता है।

बटर्जैंड रसेल अपने योगपूर्ण जीवन के सत्यों की अधिव्यक्ति इस भाषा में देते हैं- ह्याह्याअपने लम्बे जीवन में मैंने कुछ ध्रुव सत्य देखे हैं- पहला यह है कि बृहण, द्वेष और मोह को पल-पल मरना पड़ता है। निरंकुश इच्छाएं चेतना पर हावी होकर जीवन को असंतुलित

और दुःखी बना देती हैं। एक साधक आवश्यकता एवं आकांक्षा में भेदरेखा करना जानता है। इसलिए इच्छाएं उसे गलत दिशा में प्रवृत्त नहीं होने देती। हङ्ग आज योग दिवस के माध्यम से सारा मानव जाति आत्म-मंथन की ओर प्रवृत्त हो रही है, निश्चित ही दुनिया में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देगा।

योग किसी भी धर्म, सम्प्रदाय, जाति या भाषा से नहीं जुड़ा है। योग का अर्थ है जोड़ना, एकीकरण करना। अच्छी एवं सकारात्मक ऊजाऊओं को संगठित करने एवं परम परमात्मा से साक्षात्कार का यह अनुठान माध्यम है। इसलिए यह प्रेम, अहिंसा, करुणा और सबको साथ लेकर चलने की बात करता है। योग, जीवन की प्रक्रिया की छानबीन है। यह सभी धर्मों से पहले अस्तित्व में आया और इसने मानव के सामने अनंत संभावनाओं को खोलने का काम किया। आंतरिक व आत्मिक विकास, मानव कल्याण से जुड़ा यह विज्ञान सम्पूर्ण दुनिया के लिए एक महान तोहफा है।

आज योगिक विज्ञान जितना महत्वपूर्ण हो उठा है, इससे पहले यह कभी इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा। आज हमारे पास विज्ञान और तकनीक के तमाम साधन मौजूद हैं, जो दुनिया के विभिन्न कारण भी बन सकते हैं। ऐसे में यह बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमारे भीतर जीवन के प्रति जागरूकता और ऐसा भाव बना रहे कि हम हर दूसरे प्राणी को अपना ही अंश महसूस कर सकें, वरना अपने सुख और भलाई के पीछे की हमारी दौड़ सब कुछ बर्बाद कर सकती है। इन्हीं भावों के साथ अहिंसक विश्व भारती विश्व में योग को स्थापित करने एवं अहिंसक समाज रचना के संकल्प को आकार देने के लिये प्रयत्नशील हैं।

कहते हैं कि दुनिया की कुल आबादी में लगभग दस करोड़ व्यक्ति किसी न किसी मनोरोग से पीड़ित है। एक अध्ययन के अनुसार अकेले भारतवर्ष में ही दो करोड़ से अधिक लोग मनोरोगी हैं। जाने-अनजाने प्रत्येक

व्यक्ति किसी न किसी मनोरोग से सदा पीड़ित रहता है। चिंता, घबराहट, नींद की कमी, निराशा, चिड़चिड़ापन, नकारात्मक सोच-ये सब मनोरोग के लक्षण हैं। यह मानसिक पंगुता की शुरूआत है। इससे मस्तिष्क कुठित हो जाता है। बौद्धिक स्फुरण अवरुद्ध हो जाती है। दिमागी मशीनरी के जाम होते ही शरीर-तंत्र भी अस्त-व्यस्त और निष्क्रिय हो जाता है। असंतुलित मन स्वयं रोगी होता है और तन को भी रोगी बना देता है। इस तरह एक बीमार एवं खडित समाज का निर्माण हो रहा है, जिसे योग के माध्यम से ही संतुलित किया जा सकता है।

इस बात से कोई इंकार नहीं कर सकता है कि इस आधुनिक युग में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं। हमारे रहन-सहन, बोल-चाल और खान-पान बिल्कुल ही बनावटी हो चुकी है। हमारी जिंदगी मशीनों पर पूरी तरह से निर्भर हो चुकी है। हमे एहसास भी नहीं है लेकिन हम इस दुनिया की ओर तेजी से आगे बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में योग ही वह कारगर उपाय है जो हमें बनावटी दुनिया से मुक्त करके प्रकृति और आध्यात्म की दुनिया की ओर ले जाती है, प्रकृतिस्थ बनाता है।

अगर लोगों ने अपने जीवन का, जीवन में योग का महत्व समझ लिया और उसे महसूस कर लिया तो दुनिया में व्यापक बदलाव आ जाएगा। जीवन के प्रति अपने नजरिये में विस्तार लाने, व्यापकता लाने में ही मानव-जाति की सभी समस्याओं का समाधान है। उसे निजता से सार्वभौमिकता या समग्रता की ओर चलना होगा। भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, हमने गत वर्षों में अनेक महत्वपूर्ण राष्ट्रों में योग दिवस के सफलतम आयोजनों के माध्यम से दुनिया में योग का परचम फहराने का प्रयत्न किया, जो इस पूरी धरती पर मानव कल्याण और आत्मिक विकास की लहर पैदा करने की आहट थी।



# महात्मा गांधी जब खुद लिंच होने से यूं बाल-बाल बचे

साल 2007 में ओपरा विनप्री निर्मित और अकेडमी अवॉर्ड विजेता निर्देशक डेंजल वॉशिंगटन की निर्देशित बहुप्रशंसित अमरीकी फि ल्म 'दी ग्रेट डिबेटर्स' याद आती है।

इस फि ल्म में दिखाया गया था कि किस तरह काले लोगों के एक कॉलेज की टीम ने 1930 के दशक में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के गोरे घंटंडी डिबेटरों की टीम को एक वैचारिक बहस में हराया था।

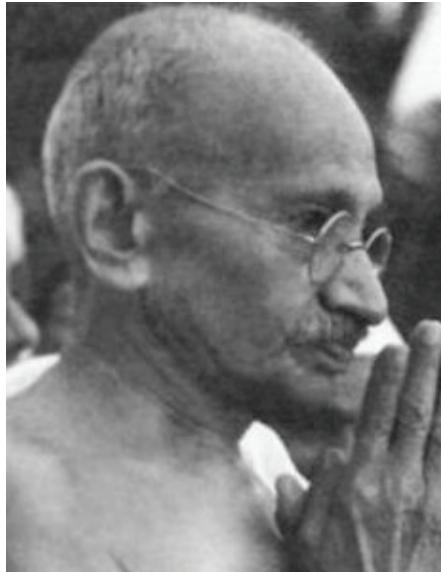
लेकिन आप सोच रहे होंगे कि गांधी और भीड़ की हिंसा के संदर्भ में यह फि ल्म यहां प्रासारिक क्यों है? वह इसलिए कि इस फि ल्म में उस दौरान अमरीका के दक्षिणी राज्यों में गोरे अमरीकियों की भीड़ से काले अफ्रीकी अमरीकियों की जाने वाली हत्या या लिंचिंग का मार्यिक चित्रण किया गया था।

लिंचिंग के कारणिक संदर्भ के साथ में गोरे अहंबोध से ग्रस्त हार्वर्ड (वास्तविक इतिहास में साऊथ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय) के डिबेटरों को पराजित कर उनके मानवीय प्रबोधन के लिए काले डिबेटर बार-बार महात्मा गांधी के नाम और विचारों का सहारा लेते हैं।

## अश्वेत को जिंदा जलाए जाने से जुड़ी चिट्ठी

इस तरह पूरी फि ल्म में 9 बार लिंचिंग का, 11 बार गांधी का नाम लिया जाता है। याद रहे कि उस दौर में महात्मा गांधी यहां भारत में भी ऐसे ही मानवतावादी सवालों पर भारतीयों और ब्रिटिशों का एक साथ सामना कर रहे थे।

1931 में ही किसी ने महात्मा गांधी को एक चिट्ठी लिखी जिसमें अमरीका में किसी काले को भीड़ की ओर से जिंदा जला दिए जाने से संबंधित 'लिटरेरी डाइजेस्ट' में छ्पे समाचार का कतरन भी संलग्न था। पत्र लेखक ने गांधी से कहा कि जब कोई अमरीकी अतिथि या भेटकर्ता आपसे मिलने आए और आपसे अपने देश के लिए सदेश मांगते तो, आप उन्हें यही संदेश दें कि वे वहां भीड़ से काले लोगों की की जानेवाली हत्याओं को बंद कराएं। 14 मई, 1931 को महात्मा गांधी ने इसके जवाब में 'यंग इंडिया' में लिखा, "ऐसी घटनाओं को पढ़कर मन अवसाद से भर आता है। पर मुझे इस बात में तनिक भी सदेह नहीं है कि अमरीकी जनता इस बुराई के प्रति पूरी तरह से जागरूक है और अमरीकी जन-जीवन के इस कलंक को दूर करने की भरसक कोशिश कर रही है।"



लिंच-न्याय

आज का अमरीकी समाज बहुत हद तक उस भीड़-हिंसा से सचमुच मुक्त हो चुका है, जिसका नाम ही लिंच-न्याय एक अमरीकी कैप्टन विलियम लिंच की प्रवृत्ति की वजह से पड़ा था। लेकिन उसके 90 साल बाद आज क्या दुर्भाग्य है कि हम भारत में भीड़ से हत्याओं की ऐसी ही प्रवृत्ति और घटनाओं पर चर्चा कर रहे हैं और हमें फिर से गांधी याद आ रहे हैं।

क्या संयोग है कि 1931 से 34 साल पहले 13 जनवरी, 1897 को खुद गांधी ही भीड़ के हाथों मारे जाने से किसी तरह बचाए जा सके थे। दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर में लगभग 6000 अंग्रेजों की उत्तेजित भीड़ ने महात्मा गांधी को धेर लिया था। वह भीड़ अपने नेता से इस कदर उत्तेजित कर दी गई थी कि वे गांधी को पीट-पीटकर मार डालना चाहते थे। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा और अन्य अवसरों पर भी विस्तार से इसका वर्णन किया है।

## 'गांधी को हमें सौंप दो'

पहले तो भीड़ ने गांधी पर पथर और सड़े हुए अंडे बरसाए। फिर किसी ने उनकी पगड़ी उछाल दी। उसके बाद लात और घूंसों की बौछार शुरू हुई। गांधी लगभग बेहश होकर गिर चुके थे। तभी किसी अंग्रेज महिला ने ही उनकी ढाल बनकर किसी तरह उनकी जान बचाई। फिर पुलिस की निगरानी में गांधी

अपने एक मित्र पारसी रस्तमजी के घर पहुंच तो गए, लेकिन हजारों की भीड़ ने आकर उस घर को धेर लिया। लोग तीखे शोर में चिल्लाने लगे कि 'गांधी को हमें सौंप दो।' वे लोग उस घर को आग लगा देना चाहते थे। अब उस घर में महिलाओं और बच्चों समेत करीब 20 लोगों की जान दांव पर लगी थी। वहां के पुलिस सुर्पिंटेंडेंट एलेक्जेंडर गांधी के शुभाचिंतक थे जबकि वे खुद भी एक अंग्रेज थे। उन्होंने भीड़ से गांधी की जान बचाने के लिए एक अनोखी तरकीब अपनाई। उन्होंने गांधी को एक हिन्दुस्तानी सिपाही की वर्दी पहनाकर उनका रूप बदलवा दिया और किसी तरह थाने पहुंचवा दिया। लेकिन दूसरी तरफ भीड़ को बहलाने के लिए वे स्वयं भीड़ से एक हिंसक गाना गवाने लगे। गाने के बोल इस प्रकार थे-

**"हैंग ओल्ड गांधी ऑन द साउर एप्ल ट्री!"**

इसका हिंदी भावानुवाद कुछ इस प्रकार होगा—  
'चलो हम बूढ़े गांधी को फांसी पर लटका दें,  
इमली के उस पेड़ पर फांसी लटका दें।'

## बीजेपी ने लिंचिंग के आरोपियों की मदद की?

इसके बाद जब एलेक्जेंडर ने भीड़ को बताया कि उनका शिकार गांधी तो वहां से सुरक्षित निकल भागा है, तो भीड़ में किसी को गुस्सा आया, कोई हँसा, तो बहुतों को उस बात का यकीन ही नहीं हुआ। लेकिन भीड़ के प्रतिनिधि ने घर की तलाशी के बाद जब भीड़ के सामने इस खबर की पुष्टि की, तो निराश होकर और मन-ही-मन कुछ गुस्सा होते हुए वह भीड़ फिर बिखर गई।

गांधी के जीवन से जुड़ी इस सच्ची घटना में दो बातें ध्यान देने की हैं। पहली यह कि उन्हें मारनेवालों की भीड़ भी अंग्रेजों की ही थी और उन्हें बचानेवाले लोग भी अंग्रेज ही थे।

दूसरी बात यह कि अंग्रेज पुलिस अधिकारी ने उन्मत्त भीड़ ही हिंसक मानसिकता को पहचानते हुए एक मनोवैज्ञानिक की तरह गांधी को फांसी पर लटकाने वाला वह हिंसक गाना गवाया ताकि हिंसा का वह मवाद मनोरंजक तरीके से उनके दिलो-दिमाग से फूटकर वह निकले।

उसने दिखाया कि मूर्खों की भीड़ को भी बुद्धिमानी से सभाला जा सकता है और किसी की जान बचाइ जा सकती है।

# मेला में कावंरियों के सुविधा के लिए हर पल रहें मुस्तैद : प्रभारी मंत्री



समीक्षात्मक बैठक में प्रभारी मंत्री ने दिया जिलाधिकारी को निर्देश आवश्यक निर्देश

समीक्षात्मक बैठक में प्रभारी मंत्री ने दिया जिलाधिकारी को निर्देश

राजेश पंजिकार (ब्लूरो चीफ)



हर साल की भाँति इस साल भी सावन माह आने से पहले ही बांका जिला रोपाचित हो उठा है बांका के बीरान जंगल व पहाड़ पर इस माह सावन माह में ना सिर्फ हरियाली छा जाती है बल्कि पूरे महा रात दिन पहाड़ों और जंगलों से बोल बम का नारा गुंजायमान होता रहता है पूरे देश की नजर सावनी मेला पर होती है यह मेला अपने आप में एक अनोखा मेला होता है द्वारा ज्योतिलिंग में से एक बाबा बैजनाथ महादेव को ऐसे तो जल अर्पण पूरे साल श्रद्धालुओं द्वारा किया जाता है लेकिन सावन माह में इसकी अनोखी परंपरा है उत्तर वाहनी गंगा सुल्तानगंज से गंगाजल भरकर भक्तों का ताता पैदल 105 किलोमीटर चलकर बाबा धाम पहुंचते हैं तथा बाबा को जल अर्पण करते हैं सावन माह में प्रतिदिन इस पैदल मार्ग से एक लाख से अधिक कावंरियों का गुजर ना होता है । चलने वाले इस मेला में बांका जिला अंतर्गत जिलेबिया मोड़ धर्मशाला अब रखा धर्मशाला एनआर आवश्यक धर्मशाला कटोरिया धर्मशाला गुढ़ियारी धर्मशाला एवं चांदन धर्मशाला जन्मा धर्मशाला देवासी धर्मशाला भूतनाथ धर्मशाला में सरकारी व्यवस्था रहती है । इस विश्व प्रसिद्ध 105 किलोमीटर के श्रावणी मेले का बांका जिला का सबसे अधिक क्षेत्र पाया जाता है जिसमें जिला प्रशासन मुस्तैद और चुस्त रहती है राज्य सरकार द्वारा विशेष निर्देश भी दिया जाता है और इस अवसर पर विभिन्न तरह के कार्यक्रम को आयोजित करने का भी निर्देश दिया जाता है राज्य सूचनाजनसंपर्क विभाग द्वारा विशेष कार्यक्रम भजन गायनआदि की जाती है बांका जिला प्रशासन की सक्रियता को इस मेला में विशेष रूप से देखा जा सकता है इस क्रम में घिरते दिनों श्रावणी मेला की समीक्षात्मक बैठक हेतु जिले के प्रभारी मंत्री रामसेवक सिंह बांका पथरे थे उन्होंने स्थानीय समाहरणालय सभागार में राजस्व व भूमि सुधार मंत्री रामनारायण मंडल एवं सांसद गिरिधारी यादव विधायक मनीष कुमार विधायक जनार्दन मांझी जी एवं जिलाधिकारी कुंदन कुमार व पुलिस प्रशासन के अधिकारियों व जिले के तमाम अधिकारी और कर्मचारियों के साथ एक समीक्षात्मक बैठक की इस बैठक में इन्होंने जिला पदाधिकारी को इस मेले को सुविधायुक्त बनाने के लिए आवश्यक निर्देश दिए जिससे कावंरियों पथ पर कावंरियों को हाने वाली असुविधा को देखते हुए कंकड़ युक्त बालू का प्रयोग करने से मना किया हर सुविधा हर संभव उहें मिले इसके लिए भी निर्देशित किया । हालांकि प्रभारी मंत्री कावंरिया पथ पर कंक्रीट युक्त बालू के प्रयोग से भव्यवस्था बांका उन्हें शिकायत मिली थी सुल्तानगंज विधायक ने कावंरिया

मार्ग में कंकड़ युक्त बालू बिना में की शिकायत मिली थी । डी .एम को इस को स्वयं जांच करने का आदेश दिया साथ ही प्रतिनियुक्त अधिकारीयों को इस बिषय में ल मुस्तैद रहने का निर्देश दिया । पदाधिकारियों का भी मौननिरिंग विशेष रूप समस्त मेला क्षेत्र में हो इसका भीलध्यान रखा जाय जिससे कावंरियों को हर सुविधा मुहैया हो सके । समस्त कावंरियों क्षेत्र में स्वच्छता को बनाए रखने के लिए विशेष सुविधा का ध्यान रखने हेतु निर्देशित किया गया है होटलों की मूल्य तालिका का सही से पालन हो , मेला क्षेत्र के भोजनालय में पौष्टिकता युक्त भोजन की जांच हेतु नियमित फूड इंप्रेक्टर की तैनाती हेतु भी निर्देशित किया गया । फूड इंप्रेक्टर द्वारा जाच की जाए की खाने की सामग्री की गुणवत्ता सही है कि नहीं जिससे सक्रमण पैदा ना हो । साथ ही जिलाधिकारी को क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को भी दुरुस्त करने का निर्देश दिया गया सुरक्षा पर विशेष ध्यान देने के लिए यात्रियों की व्यवस्था बांका जिला क्षेत्र में से हेकर भयमुक्त वातावरण में कावंरिया बाबा भोलेनाथ का जलाभिषेक करने हेतु इस मार्ग से गुजरे पर भी विशेष पहल करने हेतु पुलिस पदाधिकारी एवं जिलाधिकारी को निर्देश दिया ।

\* जिलाधिकारी कुंदन कुमार ने मेला में कावंरियों हेतु विशेष सुविधा प्रदान करने हेतु इस समीक्षात्मक बैठक में उन्होंने कहा कि बांका जिला पूर्ण रूप से कावंरियों के भक्ति भाव के प्रति समर्पित है हर सुविधा मुहैया हेतु जिला प्रशासन हर बक्तु मुस्तैद है बांका जिला अंतर्गत जिलेबिया मोड़ धर्मशाला धर्मशाला धर्मशाला कटोरिया धर्मशाला गुढ़ियारी धर्मशाला चांदन धर्मशाला जमुआ धर्मशाला देवासी धर्मशाला में विशेष व्यवस्था की गई है जिले के बेलहर जिलेबिया मोड़ में तथा कटोरिया में जिला नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गई है गोड़ियारी में स्वास्थ्य शिविर की व्यवस्था की गई है इसके अतिरिक्त एक भवन से चिकित्सा केन्द्र की भी स्थापना की गई इसके बाद जिलाधिकारी ने विशेष रूप से टेंट सिटी का जिक्र करते हुए कहा कि अवरखा सरकारी धर्मशाला के निकट एक टेंट सीटी का निर्माण कराया जा रहा है जिसमें पांच सौ कावंरियों का एक साथ बिश्राम करने की व्यवस्था होगी उन्होंने आगे बताया कि पिछले वर्ष एक सफल प्रयास के रूप में टेंट सीटी का निर्माण कराया गया था जिसे इसबार भी कराया जा रहा है इस टेंट सिटी में हर सुविधा उपलब्ध रहेगी साथ ही एक सिटी की तरह एक सुविधा जैसे स्नानागार शौचालय आदि की व्यवस्था की जाएगी एलईडी टीवी एलईडी टीवी निर्देश दिया जिससे हमेशा भक्ति संगीत कार्यक्रम चलाकर कावंरियों की थकान मिटाया जा सके आवश्यकतानुसार कूलर या रोशनी की संख्या को बढ़ाया भी जा सकता है लाइट की व्यवस्था होगी एलईडी लाइट की व्यवस्था होगी साफ सफाई के लिए हमारे पदाधिकारीहर पल मुस्तैद रहेंगे स्वास्थ्य सुविधा हेतु सिविल सर्जन को विशेष निर्देश दिया गया है कि वह अपनी चिकित्सा दल द्वारा कावंरियों के स्वास्थ्य के प्रति जबाबदेह रहें बांका जिला प्रशासन पूर्ण रूप से सफल मेला के आयोजन हेतु पूर्ण रूप से कठिबद्ध है



बाबाधाम जाते कावंरिया

# नवनिर्मित मंदिर मे प्राण- प्रतिष्ठा के साथ पूजन कार्य प्रारंभ

राजेश पंजिकार

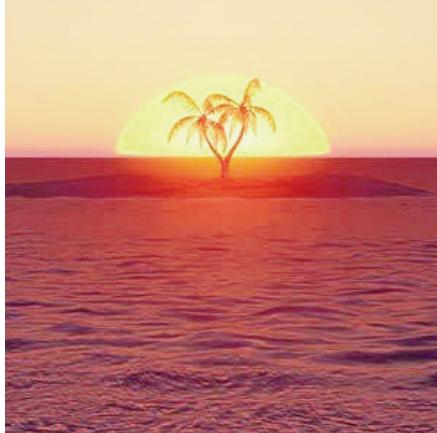
कटोरिया बाजार के सुईया रोड स्थित स्वयंसेवी संस्था मुक्ति निकेतन में नवनिर्मित मंदिर में मां दुर्गा के साथ-साथ मां सरस्वती सदगुरुदेव श्री श्री ठाकुर जी श्री अनुकूल चंद एवं श्री गणपति महाराज की प्रतिमा की का प्राण प्रतिष्ठा संपन्न हो गए की गई प्राण प्रतिष्ठा को लेकर सर्वप्रथम मंडप पूजन किया गया वहीं सीताफल गन्ना विभिन्न तरह के पकवान फूल और अनार, पुण्य लोंग, इलाइची के साथ सबै औषधी मक्खन शुद्ध धी से महा आरती की गई इसके बाद गाजे-बाजे के साथ नगर भ्रमण कर संध्याकालीन में कटोरिया राजवाड़ा निवासी मुख्य पुरोहित चंदन पांडे एवं बनारस से आए उनके सहयोगी पुरोहित के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच नवनिर्मित मंदिर में मूर्ति स्थापित की गई पंडित चंदन पांडे के अनुसार अनुष्टान के आठवें दिन सोमवार को चंडी सती यज्ञ का आप्रिति पाठ संपन्न कर लिया गया। वहीं दूसरे पूरे अनुष्टान की में कुल 105 आवृत्ति चंडी पाठ किया गया। चंडी पाठ किया गया आज मंगलवार को पूर्वाहन से पूणार्हीति प्रारंभ होकर यह अनुष्टान का संपन्न या अनुष्टान संपन्न हो गया। इस तरह भक्ति भावों में मुक्ति निकेतन का यह स्वयंसेवी संस्थान शिक्षा के मंदिर के रूप में जाना जाता था। आज देवी मंदिर स्थापित होने से इस क्षेत्र के लोगों में काफी हर्ष व्याप्त है और भक्ति का माहौल व्याप्त है। इसके निदेशक संस्थापक अनिरुद्ध प्रसाद सिंह ने बताया कि हमें इसकी प्रेरणा बचपन से ही मिली थी कि हम अपने इस स्वयंसेवी संस्था के अंतर्गत एक भगवती की मूर्ति युक्त भव्य मंदिर का निर्माण कराएं और मां भगवती की कृपा से एवं सब के सहयोग से यह संपन्न में भी हो गया और इस भक्ति माहौल में हम सबों के कल्याण की कामना करते हैं वही मुक्ति निकेतन के संस्थापक अनिरुद्ध कुमार सिंह चिरंजीवी कुमार सिंह ने बताया कि हमारे पैतृक परंपराओं के अनुसार इस क्षेत्र में मंदिर का निर्माण कराया गया। हमारे पूर्वज कई जगहों पर और मंदिर का निर्माण करा चुके हैं जिसमें की सबों का सहयोग बहुत जरूरी था। इस प्रांगण में मुक्ति निकेतन में इस मंदिर का निर्माण होना एक बहुत बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है मैंकामना करता हूं कि इसे मां भगवती की कृपा एवं गुरुदेव की कृपा इस संस्था पर सदैव बनी रहे।



# आईएएस बाबू : अनुभूति और यथात

रवि रंजन (जिला निबंधन पदाधिकारी, बांका)

सुबह की लाल सिंदूरी तारा कुर्सी पर अपनी अद्भुत छटा बिखेर रहा था जिलाधिकारी विजय की कार मध्य प्रदेश के बस्तर जिले की साफ-सुथरी सड़क पर रेंग रही थी आज सुबह से ही विजय का मन एक अज्ञात आशंका से घबरा रहा था इसलिए वह बिना सुरक्षा गार्ड की ही अपने बिल विचालित मन को शांत करने के लिए निकल पड़ा था वातावरण में मध्यम हवा का झोंका हरे भरे फसलों को अपने आगोश में झूला रहा था छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच खिले हुए सरसों के फूल विजय के मन को पुलिकित कर रहा था घास पर उसकी छोटी-छोटी बूँदें मोती की तरह चमक रही थी ऐसा लगता था मानो प्रकृति ने मोतीयों से अपना श्रृंगार किया हो पर खामोशी की तेज लहर विजय को आज परेशान कर रही थी जमाने भर का दर्द उसके सीने से बाहर आने को आतुर का नजरें सड़क पर थी लेकिन मस्तिष्क कहीं और था अचानक विजय का पैर ब्रेक पर कसता चला गया सामने एक लड़का कार के पहिए के नीचे आ गया था कार से उत्तरकर फैरन उस उस लड़के पर झपटा लड़का बेहोश होकर सड़क पर औंधे मुँह पड़ा था विजय को कार तो खून नहीं मुझे को काटो तो खून नहीं घबरा कर उस लड़की को कार की पिछली सौट पर डालकर हॉस्पिटल की ओर चल दिया अस्पताल में डॉक्टर एवं नर्स उस लड़के को बचाने के लिए अपने में अपने प्रयास में लगे हुए थे विजय डॉक्टर के चेंबर में था उसकी खामोश नजरें छत को निहार रही थी सर एक नर्स की आवाज थी उस धायल लड़की की जेब से एक पत्र मिला है विजय उड़ती नजरों से उस पत्र को देखा था आज तक मशरूफ से उसने पत्र को खोला पहली पंक्ति थी लालू के पापा विजय को जोर का झटका लगा घबराकर उठ बैठा अगले ही पल वाधा लड़के के पेट के पास था उसकी निगाहें ध्यान से लड़के को धूर रही थी प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने की इच्छा हो रही थी लेकिन समय की नजाकत को देखते हुए ऐसा करना ठीक नहीं समझा सूचना पाकर सभी सुरक्षा गार्ड ड्राइवर हॉस्पिटल में तैनात थे उसने कार में पैर रखा उसकी आंखें आंखों से हुई थी दवाई हुई थी कार की गेट को बंद कर को दोबारा खोला था लालू के पापा जब से अपने हमें त्याग रिश्तेदारों ने भी हमें घर से निकाल दिया मुझे टीवी हो गया लालू पेट में था जैसे-तैसे खेराती अस्पताल में मैंने अपनी बेटी को जन्म दिया लेकिन मैं अपना इलाज नहीं करवा सकी मेरे पास पैसे नहीं थे कुछ दिन बाद हमने भीख मांगकर पेट भरना शुरू कर दिया लालू गोद में था मेरी स्थिति खराब थी लेकिन फिर भी मैं ठाट बांध से बांधे हुई थी भटकते भटकते मैं यहां पहुंच गई एक दिन मैंने आपको गरीबों के बीच कंबल बांटे हुए देखा दिल को बड़ा सुकून मिला मेरा अंत समय निकट है मेरे मन के देवता आंतम बार आपको नजदीक से देखना चाहती हूं जी ईश्वर आपको दिन दूना रात चौपुना तरक्की दे विजय बच्चों की तरफ फफक कर रो पड़ा था साथ में सुरक्षा गार्ड थी



इसलिए तुरंत अपने आप को संभाला आशा मैं तुम्हारा गुनहगार हूं मुझे मुझे माफ कर दो मन ही मन भी जाता रहा कुछ पल बाद मुझे अपने सरकारी आवास में था डालिंग मैं ब्लब जा रही हूं आज सोशल वर्कर की मीटिंग भी है अगर लेट हो जाए तो खाना खा लेना मेरा इंजिनियर मत करना जिलाधिकारी विजय की खूबसूरत पत्ती अंजली अपने आपको आईने में निहारते हुए बोली वह पूरे मेकअप में थी तुम आज कहीं नहीं जाओगी विजय का का नारा का तारा मुझे तुमसे कुछ जरूरी बातें करनी है हार्डवेयर से देश अंजली नागिन की तरफ उपकार कर बोली मामूली दो कौड़ी का इंसान एक जज की बेटी से मुंह लगात है अंजलि बात समझते समझने की कोशिश करो मुझे कुछ नहीं सुनना प्लीज विजय की आंखों में विनती था अगर उन्हें मुझे अगर तुम्हें मेरे साथ रहना है तो जैसा मैं कहती हूं वैसा करना होगा वरना वरना क्या बात काटकर बढ़ा दे बॉस पेपर पर साइन करना पड़ेगा विजय हताश हो कर सोफे पर 10 गया एक जिलाधिकारी था लेकिन अपने ही घर में उसकी आैकात फूटी कौड़ी के बराबर ही न थी अपने दिल के अंदर जमाने भर का दर्द समेटकर उसने एक गहरी सांस लिया था पत के आंसुओं से भीगी हुई थी उसकी घमंडी पत्ती बाहर निकल चुकी थी आज अकेला था प्रशासन की नजरों में एक अधिकारी था लेकिन वह अपने को कर्तव्यनिष्ठ पति नहीं साबित करता था दिल के किसी कोने में बैठा चोर उस पर हंस रहा था उसने एक प्यार भरी दुनिया छोड़ी थी पहली पत्ती आशा के प्यार एवं त्याग को ढुकराया था अपने आप को कुंवारा बताकर उसने एक जज की लड़की से शादी कर ली थी आज उसके दिल के अंदर बैठा चोर उसके दिल एवं दिमाग को कुरेट रहा था आशा के साथ बिताए प्यार एवं स्कूल के चलचित्र की भाँति उसकी नजरों के सामने आता जा रहा था लगभग 20 वर्ष पहले आज का विजय उस वक्त का भोलाराम था जब वह मात्र 5 साल का था उसके पिताजी है यह की बीमारी के कारण चल बसे गम के मारे 2 साल बाद ही उसकी बूढ़ी मां उसका साथ छोड़ गई अब वह अनाथा मां बाबा का अंतिम औलाद था कोई भाई बहन नहीं उनके चाचा ने मात्र 8 वर्ष की आयु में ही उनकी शादी आशा नाम की एक शामली

लड़की से कर दी उम्र में विजय से 3 साल बड़ी थी आशा रंग से शामली जरूर थी पर चेहरा दिखा एवं आकर्षक शादी के बाद उसने रिश्तेदारों ने पैतृक संपत्ति का बांटवारा कर उसने अलग कर दिया भोलाराम पर तो जैसे ग विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा आशा तो नई नवेली दुल्हन थी लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी उसने मन ही मन कुछ ढट्ट निश्चय किया रात को भोलाराम का पैर दबाते हुए आशा को सजाते हुए बोली थी क्या बात है भोलाराम विवेचक विचारों की दुनिया में कहीं खोया हुआ था आप बुरा ना मानो तो एक बात कहूं बोलो मेरी इच्छा है पढ़ लिख कर आप ऊंची कुर्सी वाली नैकरी पाएं ऊंची कुर्सी वाली नैकरी भोलाराम छक्का मारा था आसाराम गंभीर हो गया था हम गरीबों के किस्मत में मजदूरी ही पढ़ाई है दोनों मजदूरी करेंगे तो पेट चलेगा फिर पढ़ाई का खर्च कहां से आएगा खर्च में पूरा खर्च में पूरा करूँगी जी मैं खेतों में काम करूँगी कठिन परिश्रम करूँगी लेकिन आप को पढ़ा आऊंची जी आशा के स्वर में ढट्टा थी भोलाराम शांत आपने मेरी बातों का जवाब नहीं दिया जी आशा उत्सुकता भरी नजरों से भोलाराम को देख रही थी तुम एक नई नवेली दुल्हन हो घर की हालत तुम से छिपी नहीं है संपत्ति के नाम पर सिफ एक कपमा थाड़े से बर्तन है नादानी से भरा कदम मत उठाओ टूट कर बिखर जाओगी हासिल कुछ नहीं होगा भोलाराम सपाट स्वर में जवाब दिया क्या पेड़ स्वयं खाने को फैलते हैं जी क्या नदी का पानी से पीने के लिए होता है जी आषाढ़ होती जा रही थी वह लाजवाब सुनकर आ गया था वह आशा के सामने नतमस्तक था इसके उपरांत इतिहास के पन्नों में एक नया एवं अनोखा अथाय लिखा जाना शुरू हुआ आशा अपने आप को खेतों में लगा दी इसके अलावा उसने गांव के जर्मीदार के यहां दाई की नैकरी कर ली भोलाराम की स्कूली पढ़ाई शुरू हुई आशा ने उसने उसे एक नया नाम दिया विजय संघर्ष में विजय प्राप्त करने वाला उस दिन आशा बहुत खुशी थी आज मैं बहुत खुश हूं क्यों सुकता भरी नजरों में आशा को देखा था मैंने आपको यह नया नाम दिया है ना ईश्वर करे आप जल्दी ही उचित कुर्सी पर जाएं बोला था उसे महसूस हुआ कि कोई देवी सामने बैठी हुई हो उसे प्यार भरी नजरों से देख रही थी उसकी आंखों में खुशी के आंसू थे उसे लग रहा था विजय को लेकर वह दुनिया का हर सुख पा लेगी अगले ही पल विजय आशा को कसकर अपनी बाहों में भीच लिया समय पंख लगाकर देखते देखते विजय दसवीं कक्षा पास पार कर गया आशा खेतों में काम करते करते कालिया दुबली हो गई थी सारा दिन धूप में खेतों में काम करती थी अपनी मजदूरी लेने के बाद तुरंत जर्मीदार की हवेली में दाई का काम करने चली जाती थी वहां खाना बनाने ज्ञाड़ पोछा करने के बाद घर आती थी खाना बनाकर अपने पति को खिलाती थी फिर वह स्वयं खाती थी कभी-कभी खेतों में काम न मिलने के कारण से भूखे भी रहना पड़ता था लेकिन अपने पति को कभी भूखा नहीं रखती थी विजय इन बातों से पूर्ण रूप से अवगत नहीं था उसका दिन पढ़ाई

में ही बीता था सौभाग्य से बुद्धि का युवक था प्रथम श्रेणी में पास करना उसकी आदत बन गई थी क्यों आशा तुम्हारा पति ऊँची कुर्सी वाली नौकरी कब आएगा निकालते हुए महिलाओं ने आशा प्रकट किया आशा ने जबाब नहीं दिया अरे भाई यह क्या बोलेगी यह तो उल्टी गंगा बहा रही है सभी औरतें मारकर हँसी थी आशा का दिल रो पड़ा था से प्रार्थना की थी प्रभु अगर ऐसी मेरी हँसी मत करना घड़े में पानी भरकर उदास एवं बोझिल कदमों से वह अपनी झोपड़ी की तरफ बड़ी रात को आशा बहुत हताश की पुरानी चारपाई पर विजय का पैर दबा रही थी अप कुर्सी ऊँची कुर्सी वाली नौकरी कब मिलेगी जी कमरे के अंदर सन्नाटा था लगभग 5 बजें बाद विजय घ्यार से आशा की हथेली अपने हाथों में लेते हुए बोला आशा का दिल बैठता हुआ महसूस हो रहा था सब्र की सीमा समाप्त हो रही थी क्या सोच रही हो निराश हो गई विजय कहता रहा अभी कुछ नहीं बिगड़ा चला चलो दोनों मिलकर मजदूरी करते हैं 1 दिन दुनिया बस आते हैं ऐसा मत कहिए जी मेरी तपस्या भग हो जाएगी कुछ पल तक दोनों खामोश थे वक्त ने अंगड़ाई ली अच्छे बुरे छन के कई पलुस में समा गए कालांतर में आशा ने विजय के बच्चे का जन्म दिया लेकिन वह इस दुनिया में आने से पहले ही चल बसा एक साल बाद दूसरा संतान हुआ और वह भी इस दुनिया को नहीं देख सका आशा टूट गई उसका चेहरा छीनने लगा गाल अंदर की ओर से लगा था गर्दन की हड्डियां सामने आने लगी थी और भी गहरा होता जा रहा था लेकिन उसने हार नहीं मानी दिनभर खेतों में काम करके उसका बदन टूटने लगा था उस पर जर्मीदार के यहां काम करती यहां का काम था उसका मन कभी डूबने लगता था लेकिन अपने पति के आकाश की बुर्दियों तक पहुंचने की अद्भुत शक्ति पैदा कर देता था अपनी पती की हत्या की भलीभांति समझ रहा था उसने आशा को कभी-कभी अपने पास बुता कर पढ़ा लिखाना शुरू कर दिया था विजय ने ग्रेजुएट पास कर ली बुद्धि एवं परिश्रम को आधार बनाकर उसने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी सारा दिन घर के पास नीम के पेढ़ के नीचे बैठकर अध्ययन करता रहा प्रतियोगिताओं पुस्तकों के संबंध में शहर जाया करता था इस साल वाली बार इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में बैठा था अपने प्रयास से ही चयनित होकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हो गया आशा खुशी का कोई ठिकाना नहीं था खेतों में हवेली में कुए पर वह पागलों की तरह लोगों से अपने पति की सफलता के बारे में बताती थी सचमुच में उसने उल्टी गंगा बहा दी थी सारा गांव उसका लोहा मानने लगा था और विजय तो जैसे उसकी पूजा करने लगा था उस दिन शाम को आशा इन्हीं हाथों से मुझे ऊँची कुर्सी वाली नौकरी दिलाई है ना यह भजन है अब और काम नहीं अब मेमसाहब बनना है आशा शर्मा गई थी कुछ दिन बाद ट्रेनिंग में चला गया था प्रतिमा हुआ कुछ भेजने लगा था घर की हालत सुधरने लगी थी आशा हर वक्त पुलकित रहती थी परिणाम स्वरूप उसके चेहरे पर निखार आने लगा था वह अब एक संपूर्ण नवयुग दिखने लगी थी लगभग 3 महीने बाद पहली बार घर आया था दोनों खुश थे दोनों मिलकर ख्वाबों का घोरोंदा बनाना शुरू कर दिया था आशा फिर मां बनने वाली थी विजय नहीं अपने बच्चे का नाम लालू रखने का फैसला लिया था तीसरी बार बदला

बदला था आशा सेवक खुलकर बातें नहीं कर पा रहा था आशा विजय के चेहरे को बहुत ध्यान से पढ़ने की कोशिश कर रही थी अगली बार 6 महीने के बाद घर आया वह खामोश था रात को आशा विजय का पैर दबा रही थी कमरे में सन्नाटा था एक बार आशा ने कमरे में छोड़ा क्या बीजेपी जैसे नींद से जाग आप दूसरी शादी कर लो चोरी पकड़ी गई हो आशा करती रही मैं तो एक औरत हूं मैं आपके लायक नहीं आपकी आंखों में आंसू थे उसकी आंखों में आंसू थे वैसे ही राम के साथ जो हमेशा सोने की सीता रहती थी ना असली सीता को तो बनवास ही मिला था अब आप बड़े

बात काटकर वह चीख पड़ा था डिवोर्स पेपर पर साइन करना पड़ेगा विजय हताश होकर सोफे पर धस गया वह एक जिला अधिकारी था लेकिन अपने ही घर में उसकी औकात फूटी कौड़ी के बराबर भी न थी अपने दिये के अंदर जमाने भर का दर्द समेटकर उसने एक गहरी सांस लिया था उनके आंसुओं से भी हुई थी उसकी घमंडी पती बाहर निकल चुकी थी आज वह सचमुच अकेला था प्रशासन की नजरों में वह एक कर्मठ अधिकारी था लेकिन वह अपने को कर्तव्यान्विष्ट पति नहीं साबित कर पाया था दिल के किसी कोने में बैठा चोर उस पर हंस रहा था उसने एक घ्यार भरी दुनिया छोड़ी थी पहली पती आशा के घ्यार एवं क्या को टुकरा रहा था अपने आप को कुंवारा बताकर उसने एक जज की लड़की से शादी कर ली थी आज उसके दिल के अंदर बैठा चोर उसके दिल पर दिमाग को कुरेद रहा था उसके दिल एवं दिमाग को कुरेद रहा था आशा के साथ बिताए घ्यार सुकून की किसी चलचित्र की भाँति उसकी नजरों के सामने आता जा रहा था लगभग 20 वर्ष पहले आज का विजय उस वक्त का भोलाराम था जब वह मात्र 5 साल का था उसने उसके पिताजी है जी की बीमारी के कारण चल बसे गम के मारे 2 साल बाद ही उसकी बूढ़ी मां उसका साथ छोड़ गई वह अब अनाथ था मां बाप का अंतिम औलाट था कोई भाई बहन नहीं थी उसके चाचा ने मात्र 8 वर्ष की आयु में ही उसकी शादी आशा नाम की एक शामली लड़की से कर दी विजय से 3 साल बड़ी थी आरंग से शामली जमा कर सकता शादी के बाद उसके रिश्तेदारों ने पैटिक संपत्ति का बंटावारा कर उसे अलग कर दिया भोलाराम पर तो जैसे विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा आशा तो नई नवेली दुल्हन थी लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी उसने मन ही मन का निश्चय किया रात को भोलाराम का पैर दबाते हुए आशा को समझाते हुए बोली थी क्या बात है भोलाराम भी विचारों की दुनिया में कहीं खोया हुआ था आप बुरा ना मानो तो एक बात कहूं बोलो मेरी इच्छा है पढ़ लिखकर आप ऊँची कुर्सी वाली नौकरी पाएं ऊँची कुर्सी वाली नौकरी भोलाराम छक्का मारा था आशा भोलाराम गंभीर हो गया था हम गरीबों के ही किस्मत में मजदूरी ही पढ़ाई है दोनों मजदूरी करेंगे तो पेट चलेगा फिर पढ़ाई का खर्च कहां से आएंगा मैं पूरा करूँगी मैं खेतों में काम करूँगी कठिन परिश्रम करूँगी लेकिन आप को पढ़ाऊंगी जी आशा के स्वर में दौड़ता थी भोलाराम शांत रहा अपनी बातों आपने मेरी बातों का जबाब नहीं दिया जी आशा भरी नजरों से बोला राम को देख रही थी तुम अभी एक नई नवेली दुल्हन हो घर की हालत तुम से छिपी नहीं है संपत्ति के नाम पर सिर्फ एक कमरा एवं थोड़े से बर्तन है नादानी से भरा कदम मत उठाओ टूट कर बिखर

जाओगी तो मैं हासिल नहीं होगा कुछ भी हासिल नहीं होगा भोलाराम सपाट स्वर में जबाब दिया क्या पेड़खुद खाने को फलते हैं क्या नदी का पानी स्वयं पीने के लिए होता है आशा दीढ़ होती जा रही थी भोला जबाब सुनकर हतप्रथ रह गया था वह आशा के सामने नतमस्तक था इसके उपरांत इतिहास के पन्नों में एक नया एवं अनेका अध्याय लिखा जाना शुरू हुआ आशा अपने आप को खेतों में लगा दी इसके अलावा उसने गांव के जमींदार के यहां दाई की नौकरी कर ली भोलाराम की स्कूली पढ़ाई शुरू हुई आशा ने उसे एक नया नाम दिया विजय सर्धा में विजय प्राप्त करने वाला उस दिन आशा बहुत खुशी थी एजी आज मैं बहुत खुश हूं क्यों सुकता भरी नजर से वह आशा को देखता रहा मैंने आपको नया नाम जो दिया है ना ईश्वर करे आप जल्दी ही ऊँची कुर्सी पर आ जाएं भोला खामोश था उसे महसूस हुआ कोई देवी सामने बैठी हुई हो आशा उसे घ्यार भरी नजरों से देख रही थी उसकी आंखों में खुशी के आंसू थी थे उसे लग रहा था विजय को लेकर वह दुनिया का हर सुख पा लेगी अगले ही पल विजय आशा को कसक अपनी बाहों में भीच लिया था समय पंख लगा कार उड़ता रहा देखते-देखते विजयदर्शी को कच्चा पार कर गया आशा खेतों में काम करते करते काहों में दुबली हो गई थी सारा दिन धूप में तप कर हुआ खेतों में काम करती रहती थी अपनी मजदूरी लेने के बाद वह तुरंत जमींदार की हवेली में दाई का काम करने चली जाती थी वहां खाना बनाने और झाड़ू पोष करने के बाद घर आती थी खाना बनाकर वह अपने पति को खिलाती थी फुल बास सोंग खाती थी कभी-कभी खेतों में काम ना मिलने के कारण उसे भूखे ही जाना पड़ता था लेकिन अपने पति की कमी को कभी धोखा नहीं रखती थी विजय इन बातों से पूर्ण रूप में अवगत नहीं था उसका दिन पढ़ाई में ही बीता था सौभाग्य से एक पिक सी बुद्धि का युवक था प्रथम श्रेणी में पास करना उसकी आदत बन गई थी तुम्हारा पति ऊँची कुर्सी वाली नौकरी कब आएगा कुएं पर पानी निकालते हुए महिलाओं ने आशा पर कटाक्ष किया आशा ने जबाब नहीं दिया अरे भाई यह क्या बोलेगी यह तो उल्टी गंगा बहा रही है

# .....नित्य स्पंदन.....

राहुल बांका



कसक भरी बेरुखी

उसमें भी है खुशी।

एक नित्य स्पंदन

खाली खाली सा है मन।

दूढ़ता है क्या ?

और क्यों दूढ़ता है

हर छन -छन ॥

स्तब्ध वातावरण

शांत कन कन

सोए महामाया

काली चादर ओड़े

भूले अपने को

अपनी अस्मिता छोड़े

क्यों हर पल

हर छन -छन ॥

जकड़ा जंजाल के

लौह पास में

है यही इति और अंत

वया इस अनंत संसार में ?

ग्रहों का भी गहरा पहरा

छूट न जाए कोई घेरा

चुप छिप बैठे देखे

हर मन हर छन छन ।

पर है तेरी जो छवि

मन में जा बसी

वया यह चाहत है ?

या है केवल बेबसी ।

क्योंकि दूढ़ता है मन

हर पल हर क्षण क्षण ।

प्रकृति तू जो जा बसी

हर कण,- कण ॥

सका आशा टूट गई उसका चेहरा छीन पड़ने लगा था  
 गाल अंदर की ओर धसने लगा था गर्दन की हड्डियाँ उभर  
 कर सामने आने लगी थी रंग और भी गहरा होता जा रहा  
 था लेकिन उसने हार नहीं मानी थी दिनभर खेतों में काम  
 करने के उसका करने से उसका बदन रूप में लगा था  
 उस पर जमींदार के यहां का काम कर काम था उसका  
 मन कभी भी डूबने लगा था लेकिन अपने पति की  
 आस आकाश की बुलदियों तक पहुंचाने का जुनून उसमें  
 अद्भुत शक्ति पैदा कर देता था विजय अपनी पती के त्याग  
 को भलीभांति समझ रहा था उसने आशा को कभी-कभी  
 अपने पास बुला कर पढ़ना लिखना शुरू कर दिया था  
 विजय ने फ्रेजुएट कर लिया अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से एवं  
 परिश्रम को आधार बनाकर उसने संघ लोक सेवा आयोग  
 की प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी सारा दिन घर  
 के पास नीम के पेड़ों के नीचे बैठकर अध्ययन करता  
 रहता कभी-कभी वह प्रतियोगी परीक्षा पुस्तकों के संबंध  
 में शहर जाया करता था इस साल हुआ पहली बार इस  
 प्रतिष्ठित प्रतियोगिता रिक्षा में बैठा था संजोग बस वह  
 अपने प्रथम प्रयास में ही चयनित होकर वह भारतीय  
 प्रशासनिक सेवा में शामिल हो गया आशा का तो खुशी  
 का कोई ठिकाना नहीं था खेतों में हवेली में कुएं पर तथा  
 अन्य जगहों पर वह पागलों की तरह लोगों से अपने पति  
 की सफलता के बारे में बताती थी सचमुच में उसने उल्टी  
 गंगा बहा दी थी सारा गांव उसका लोहा मानने लगा था  
 और विजय तो जैसे उसकी पूजा करने लगा था उस दिन  
 शाम को आता इन हाथों ने मुझे ऊंची कुर्सी वाली नौकरी  
 दिलाई है ना यह बचन है अब और काम नहीं अब  
 मेमसाब बनना है आशा शर्मा गई कुछ दिन बाद विजय  
 ट्रेनिंग में चला गया था प्रति महीने हुआ कुछ रुपए घर  
 भेजने लगा था घर की हालत सुधरने लगी थी आशा घर  
 हर वक्त पुलिकित रहती थी परिणाम स्वरूप उसके चेहरे  
 पर निखार आने लगा था अब वह एक संपूर्ण ब्यूटी  
 दिखने लगी थी लगभग 3 महीने बाद पहली बार आया  
 था दोनों खुश थे दोनों मिलकर खालियों का घरेंदा बनाना  
 शुरू कर दिया था आशा फिर मां बनने वाली थी विजय  
 नहीं अपने बेटे बच्चे का नाम लालू रखने का फैसला  
 लिया था तीसरी बार बदला बदला सा था आशा से वह  
 खुलकर बातें नहीं कर पा रहा था आशा विजय के चेहरे  
 को बहुत प्यार से पढ़ने की कोशिश कर रही थी अगली  
 बार विजय 6 महीने के बाद घर आया वह खामोश था  
 रात को आशा विजय का पैर दबा रही थी कमरे में सन्नाटा  
 था एक बात कहुं जी आशा ने कमरे में छाए सन्नाटे को  
 तोड़ा क्या जैसे विजय से नींद से जागा हो आप दूसरी  
 शादी कर लोकहते कहते आशा का मन रो पड़ा था  
 विजय को लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो देखिए  
 ना आशा करती रही मैं तो एक गवार औरत हूं मैं आपके  
 लायक नहीं जी उसकी आंखों में आंसू थे वैसे भी राम के  
 साथ तो हमेशा सोने की सीता रहती थी ना असली सीता  
 का तो बनवास ही मिला था असली सीता को तो बनवास  
 ही मिला था अब आप बड़े आदमी हो मैं आपके साथ  
 नहीं चल सकती हर शब्द आशा के कलेजे को चीर कर  
 बाहर आ रहा था उसका दिल बैठेने लगा था वह समझ  
 गई थी उसका पति अब उसका नहीं रहा उसका दिल कहीं  
 और लग गया है सर को झुका कर वह सिसकते हुए पैर  
 दबाती रही विजय मूर्ति वक्त पड़ा रहा कुछ नहीं बोला  
 उसके बाद कभी बापस ही आया आशा इंतजार करती  
 रही लेकिन वह बेकार वह तो अब रुपये भेजना भी बंद

समाप्त

# निवर्तमान पुलिस कसान की हुई विदाई

## अरबिन्द कुमार गुप्ता बने

### बांका के नए पुलिस कसान

राजेश पंजिकार (ब्यूरो चीफ)



बांका के निवर्तमान पुलिस कसान स्वप्नना जी मेश्राम के सम्मान में दिनांक 26 जून 2019 को स्थानीय परिसदन में विदाई समारोह का आयोजन किया गया था जिसमें जिलाधिकारी कुंदन कुमार एवं पुलिस बिभाग के अधिकारीयों एवं जिले के मीडिया बंधुओं के द्वारा उन्हे भावपूर्ण विदाई दी गई इस अवसर पर जिलाधिकारी कुंदन कुमार भागलपुर के एसएसपी आशीष कुमार एवं जिला प्रशासन एवं जिला पुलिस प्रशासन के सभी पदाधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित थे यद्यपि स्वप्नना जी मेश्राम ने अपना पदभार बाका जिले में विगत 6 माह पूर्व अपना पदभार ग्रहण किया था तदोपरांत उनका तबादला बांका जिले से अन्यत्र जगह पर हो जाना यह एक सरकारी परंपरा है इस अवसर पर सभी पुलिस बिभाग एवं जिला प्रशासन के पदाधिकारीयों के द्वारा उन्हें भावपूर्ण विदाई दे कर उन्हे शुभकामनाएं दी गई उनके अधिनस्त अधिकारीयों के द्वारा अपने संबोधन में कहा गया कि उनके कार्यकाल में बांका पुलिस को जो नया आयाम मिला था उसे भुलाया नहीं जा सकता है अपितु उन्होंने भी बांका पुलिस परिवार के साथ - जिलेवासीयों का भी आभार प्रकट करते हुए विदा हुई.

**नए पुलिस कसान पर जगी आम जनों की आस**



निवर्तमान पुलिस कसान को बुके देकर विदा करते हुए चर्चित बिहार के ब्यूरो

बांका जिले में नए पुलिस कसान के रूप में अरबिन्द कुमार गुप्ता ने अपना पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करने के साथ ही यहां के आम जनों को नए पुलिस कसान से कुछ नई उम्मीदें भी जगी हैं, पिछ्ले आंकड़े के अनुसार क्षेत्र में बढ़ते हुए अपराध और बालू माफियाओं की गतिविधियों से अपराध में बृद्धि जिससे आम लोगों का अक्रांत होना शामिल है यद्यपि पुलिस की गतिविधियों एवं उनकी क्रियाशीलता से इंकार नहीं किया जा सकता तथापि इस पर नकेल कसान पुलिस के लिए एक चुनौती भी है खासकर उन क्षेत्रों में जो नक्सल प्रभावित क्षेत्र माना जाता है। इन दिनों क्षेत्र में बालू माफियाओं का जो वर्चस्व कायम हुआ है जिससे कि जिले के विभिन्न घाटों पर कई अपराधिक घटनाएं हुई हैं। इस पर विशेष रूप से लोगों की निगाहें टिकी हैं नए एसपी के रूप में पदभार ग्रहण करने के साथ ही चर्चित बिहार के एक खास मुलाकात में उन्होंने बताया कि मेरी पहली प्राथमिकता

क्षेत्र में अपराध पर नियंत्रण होना पुलिस पब्लिक संबंध प्रगाढ़ होगा दोनों में समन्वय स्थापित किया जाएगा एवं पुलिस पदाधिकारियों को अपने कर्तव्य निष्ठा का पूर्ण पालन करना होगा सरकार एवं पुलिस मुख्यालय की प्राथमिकता उनकी पहली प्राथमिकता होगी बांका जिले में बालू माफियाओं पर लगाम लगाया जाएगा हर पल हर क्षण हमारे पदाधिकारी डियूटी पर तैनात रहेंगे और किसी भी परिस्थिति से जूझने के लिए तैयार रहेंगे लोगों के साथ पुलिस का व्यवहार सरल एवं सुलभ होगा जिले में शाराब माफियाओं पर भी पुलिस की पैनी नजर होगी किसी भी हाल में किसी भी पुलिस पदाधिकारियों की लापरवाही को बर्दाशत नहीं किया जाएगा उन्होंने सभी थानाध्यक्षों को पैदिंग केसों का तुरंत निपटारा करने का आदेश दिया पदभार ग्रहण करने के उपरांत ही एसपी ने बांका पुलिस लाइन थाना का निरीक्षण किया तथा आवश्यक निर्देश दिए। इसके बाद विभिन्न थानों का निरीक्षण किया और मामलों की जांच की पुराने मामलों को जल्द निपटाने को अधिकारियों को निर्देश दिया। इसके साथ ही अपने अधिकारीयों के साथ विश्वप्रसिद्ध श्रावणी मेला क्षेत्रों में विधि व्यवस्था कायम रहे, काभी मुयाना किया।



नये पुलिस कसान अरबिन्द कुमार गुप्ता

# तैयारी की सुरक्षा से कांवरियों को भोले बाबा के सहारे ही अपनी यात्रा करनी होगी पूरी



नाले में गंदगी का अंबार

आमोद कुमार दुबे, चांदन



विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला प्रारंभ होने में अब मात्र 12 दिन शेष बचे हैं। इसके लिए जिला प्रशासन की ओर से कांवरिया को सारी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए लगातार कई बैठकें हो चुकी हैं। कई प्रकार के निर्देश दिए जा चुके हैं। यहां तक कि हर विभाग को सावन शुरू होने के 10 दिन पूर्व तक सारी तैयारी पूरी करने का निर्देश जिलाधिकारी द्वारा दिया गया है। लेकिन कांवरिया पथ को देखने से यह साफ जाहिर है कि इस



बेहतरीन सड़के

वर्ष भी कांवरिया को भगवान भरोसे ही अपनी यात्रा पूरी करनी होगी। सावन शुरू होते ही गंगा धाम से बाबाधाम तक लगातार तीन महीने कांवरिया लाखों की संख्या में गंगाधाम से जल लेकर बाबाधाम जाते हैं। लाखों की संख्या में जुटने वाले श्रद्धालुओं के लिए सरकार की ओर से मात्र एक महीने के लिए अस्थाई सुविधा बहाल की जाती है। जो कांवरिया के लिए नाकाफी है।

निजी सेवा शिविरों को अलग कर देखें तो सरकार की ओर से श्रद्धालुओं को उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधा ऊंठ के मुंह में जीरा के समान है। वहीं दूसरी ओर नई कच्ची कांवरिया पथ बन जाने के बावजूद भी इनारावरण जैसे महत्वपूर्ण जगहों पर इस रास्ते को छालू नहीं किया जा सका है।

सुल्तानगंज से दुम्मा तक लगभग 90 किलोमीटर कच्ची सड़क बिहार में पड़ता है। जिसके लिए नया कांवरिया पथ बनाया गया है। लेकिन इस पथ पर आज तक कांवरिया को सारी सुविधाएं उपलब्ध नहीं कराई गई। निर्माण के समय ही सरकार की ओर से यात्री शेड,



कांवरिया के पर कंकड़युक्त बालू का प्रयोग



शैचालय, पानी, बिजली, चिकित्सा, आदि की सुविधा बहाल करने की घोषणा की गई थी। जो अभी तक धरातल पर उतर नहीं हो पाई है। प्रत्येक वर्ष सावन शुरू होने के एक माह पूर्व कांवरिया पथ पर सारी सेवा बहाल करने की कवायद शुरू की जाती है। जो आनन-फानन में किसी पूरा कर दिया जाता है।

बांका जिले के क्षेत्र में पड़ने वाले सरकारी धर्म शालाओं की स्थिति दयनीय अवस्था में है। मरम्मत एवं साफ सफाई जिला प्रशासन द्वारा कराई जाती है। इसमें यह स्थाई व्यवस्था नहीं होती। कई स्थानों पर श्रद्धालुओं को पहाड़ी क्षेत्रों में अंधेरे में ही गुजारना पड़ता है। प्रत्येक वर्ष कांवरिया पथ पर बालू डालने का काम किया जाता है। जिसका ठेकेदार द्वारा सिंक लूट की योजना मानकर कंकड़ युक्त बालू और मिट्टी डालकर कांवरिया पथ को कीचड़ युक्त बनाया जाता है। इसमें सुधार का आश्वासन



खुले आसमान में बसेऱा

# चयन रह पर्यवेक्षिका पर कार्यवाही का आदेश

आमोद कुमार दुबे चांदन बांका

प्रखंड के सिलजोरी पंचायत अंतर्गत वार्ड नंबर 5 में 5 जुलाई 18 को आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 5 में सेविका सुलेखा देवी और सहायिका चंदा कुमारी के चयन को जिला प्रोग्राम पदाधिकारी न्यायालय द्वारा रद्द कर दिया गया है। साथ ही साथ इस नियुक्ति में पर्यवेक्षिका ममता कुमारी पर भी निजी स्वार्थ के लिए काम करने का आरोप लगाते हुए उन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की अनुशंसा की गई है। जात हो कि वार्ड नंबर 5 में एक अभ्यर्थी दुलारी देवी ने फर्जी तरीके से चयनित सुलेखा कुमारी के प्रमाण पत्र और उसके चयन प्रणाली के खिलाफ आंगनबाड़ी बाद संख्या 53/18-19 दर्ज कराया था। जिसमें न्यायालय द्वारा बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, पर्यवेक्षिका ममता कुमारी, चयनित सेविका और सहायिका को नोटिस निर्गत कर न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश दिया था। न्यायालय द्वारा सभी पक्षों के कागजात को देखने के बाद पाया गया कि, इस चयन प्रक्रिया में किसी भी नियम कानून का पालन नहीं किया गया है। यहां तक की आम सभा की पंजी में आम सभा की तिथि, समय, और स्थान का भी कोई उल्लेख नहीं किया गया है। साथ



ही साथ कार्यवाही पंजी के कई पेज पूरी तरह खाली दिखाया गया है। इस प्रकार कार्यवाही पंजी सदेहास्पद होने की बात सामने आई।

इस चयन पंजी पर महिला पर्यवेक्षिका का हस्ताक्षर 5 जुलाई एवं वार्ड सदस्य 24 नवंबर को दिखाया गया है। इसभी तथ्यों को सुनने और जांचने के उपरांत न्यायालय द्वारा वार्ड 5 के चयनित सहायिका सेविका के चयन को रद्द करते हुए फिर से आम सभा के माध्यम से मार्गदर्शिका 2016 के अनुरूप चयन प्रक्रिया पूरा करने का आदेश दिया गया है। साथ ही साथ महिला पर्यवेक्षिका द्वारा निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए गलत चयन करने का भी आरोप लगाया गया। और बाल विकास परियोजना पदाधिकारी को निर्देश दिया गया कि महिला पर्यवेक्षिका के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही की अनुशंसा अति शीघ्र करते हुए न्यायालय को प्रतिवेदन दें। चांदन प्रखंड में सेविका सहायिका की बहाली में बड़े पैमाने पर लेनदेन की बात सामने आ रही है। जबकि कई जगह का मामला आज भी जिला कार्यक्रम पदाधिकारी के पास लंबित है।

## श्रावणी मेला एवं रथयात्रा अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ



**पुत्रुल कुमारी  
पूर्व सांसद, बांका**

श्रावणी मेला एवं रथयात्रा अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ



**दृष्टि  
रजन**  
जिला निबंधन  
पदाधिकारी  
बांका

# चाँदन प्रखंड में रवि बीज वितरण में व्यापक घोटाला



## आमोद कुमार दुबे चाँदन

बांका के चांदन प्रखंड के सभी पंचायतों में रवि बीज वितरण में व्यापक घोटाले की बू साफ नजर आ रही है। इसमें सबसे अधिक लूट चना वितरण को लेकर हुआ है। इसी कारण कृषि कार्यालय द्वारा चना वितरण करने वाले कामदार से किसानों को दिए गए भाषण की मांग करने के बावजूद भी कार्यालय को सुपुर्द नहीं किया गया है।

बता दें कि एक रजिस्टर जो कार्यालय को उपलब्ध कराई गई है उसमें दुकानदार का कोई हस्ताक्षर नहीं है। साथ ही साथ उस रजिस्टर को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि समान वितरण में बड़े पैमाने पर मनमानी की गई है और सरकारी रेट से अधिक राशि किसानों से वसूल किया गया है। जबकि चना भी सभी किसानों को नहीं दिया गया है।

इस संबंध में प्रखंड कृषि पदाधिकारी उमेश चंद्र राय

ने बताया कि रजिस्टर में हस्ताक्षर नहीं होने से उसे हम कार्यालय का अंग नहीं मान सकते हैं। इसके लिए बार-बार दुकानदार से सूची की मांग की गई। लेकिन आज तक उपलब्ध नहीं कराया गया है। इससे स्पष्ट है कि निश्चित रूप से चना वितरण में बहुत बड़ी लूट की गई है। दुकानदार पर समुचित कार्रवाई के लिए भी चांदन कार्यालय से जिला को अवगत कराते हुए उस पर कार्रवाई करने का निर्देश मांगा गया है। लेकिन जिला से कोई निर्देश आज तक प्राप्त नहीं हुआ है।

वहीं कृषि पदाधिकारी के अनुसार प्रखंड में चार दुकानदारों को बीज वितरण के लिए आवंटित किया गया था, लेकिन भागलपुर के थोक विक्रेता भुवानिया द्वारा चांदन के सिर्फ एक दुकानदार को ही सारा अनाज दिया गया। जिससे मनमानी तरीके से नियम कानून के वितरण किया गया।

दुकानदार द्वारा दिए गए सूची में सभी किसानों को

32 किलो चना देने की बात कही गई है जबकि इसके लिए 3240 रु की जगह 3790 रु वसूल किया गया है। जो नियम के पूरी तरह विपरीत है। इतना ही नहीं उसके साथ मिलने वाले कीट एवं अन्य दवाओं का वितरण किसी भी किसान को नहीं किया गया है और सारी राशि हड्डप ली गई है। जबकि अधिकतर किसान को पूरी राशि लेकर 20 से 22 किलो चना ही दिया गया है। इससे साफ जाहिर है कि जिला से लेकर प्रखंड तक के सभी इस लूट में सहयोगी हैं।

प्रखंड कृषि पदाधिकारी उमेश चन्द्र राय का कहना है कि दुकानदार द्वारा सूची उपलब्ध नहीं कराये जाने के कारण उसे हटा दिया गया है और उस पर निश्चित रूप से कार्यवाही की जाएगी। लेकिन जिला का निर्देश प्राप्त करना इसके लिए जरूरी है जबकि दुकानदार सुनील कुमार यादव का कहना है कि नियमानुसार सभी सरकारी दर पर चना दिया गया है।

# समाजसेविका के 'आवार्य सुमन सोनी' भागलपुर बिहार

मीडिया की सुर्खियां 'सुर्खियों पर विमर्श सोच कल की ! बेमिसाल

विश्व के सबसे बड़े सांस्कृतिक संगठन के इतिहास-विकास को रेखांकित करती अनाथों और लाचारों की हितेसी - सुमन सोनी

देश के ख्यातिनाम लेखकों, मंचों, पत्रकारों और बुद्धिजीवियों के लेखकीय योगदान से सजी हैं यह सुमन सोनी।

गौरीशंकर सिंह, दिल्ली ब्यूरोवीफ



**अवार्ड एवं सम्मान की यात्रा :** जिनमें प्रमुख हैं- अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल अवार्ड 2019-रांची ,मासा वर्ल्ड फाउंडेशन अवार्ड-दिल्ली , दू राजस्थान गैरव सम्मान-गाजियाबाद , गीता महोत्सव अवार्ड-दिल्ली ,नेशनल एम्पार्वर्ड बूमेन अवार्ड-हरियाणा करनाल, नेशनल यंग चेंज मेंकर अवार्ड- दिल्ली, नेशनल वोमेंस एक्सीलेंसी अचीवमेंट अवार्ड -जयपुर, नेशनल इंडिया आइंडल अवार्ड- हरियाणा करनाल, नेशनल वूमेन अवार्ड -जयपुर, नेशनल वृमनिया अवार्ड -जयपुर, नेशनल वूमेन मिलने पर पटना बीपीपीएमएसएस द्वारा सम्मानित इत्यादि ।

कौन हैं सुमन सोनी ?

सुमन सोनी- प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रान्त शिक्षिका प्रमुख बीपीपीएमएसएस बिहार महत्वपूर्ण कदम : समाजसेवी, कवित्री, अपने वेतन का 5%हिस्सा जरूरतमंद के नाम, रक्तदान, बालविवाह, दहेज प्रथा, प्रूण हत्या पर प्रतिबंध लगाना, अनाथ आश्रम, वृद्धआश्रम, झोपड़ी, दिव्यांग बच्चों एवं असहाय बुजुर्गों की निस्वार्थ सेवा भाव बिना एनजीओ चलाये सेवा करना आदि।

## हमारा प्रयास- सबके लिए सम्मान

प्रोफेशनलों के आत्मचिंतन और आत्ममंथन का प्रकल्प।



the helping nature, suman soni

अनेकों अनाथ बच्चे एवं लाचार बुजुर्गों की प्रेरणा स्रोत-सुमन सोनी यदि कोई व्यक्ति सुमन सोनी जी से यह प्रश्न पूछे कि उन्हें ऐसा ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ -निजी अनुसंधान से, दिव्य प्रेरणा से या जीवन से सीखे गए पाठों से ।

तो सुमन सोनी जी अपनी उंगली से ऊपर की ओर इशारा कर कहेंगी कि यह ज्ञान-सागर परमात्मा की देन है। आगे पूछें पर वे बतायेंगी कि उनके मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान उन्हें गुरुओं से, शास्त्रों से या भक्ति से उन्हें ऐसी समझ प्राप्त हुई। सुमन सोनी जी अल्प आयु से ही ईश्वर से गहरा प्रेम करती थीं। उन्होंने बाल अवस्था से ही सत्य की खोज शुरू कर दी थी। बचपन से ही सोनी जी को स्वच्छता से प्यार हो गया था। जब सुमन सोनी जी प्राथमिक विद्यालय में एक दिन उद्यान में भ्रमण करते हुए बच्चों से मिली। उस समय बच्चों के प्रति उनके जीवन में दिव्य परिवर्तन आ चुका था। बच्चों को देख कर मन में एक तेज प्रकाश संकल्प रूपी उत्पन्न हो रहा था। सुमन सोनी जी उन्हें देखते ही समझ गई कि किसी विशेष सेवा के लिए प्रस्तुत होना होगा, जो समय अने पर इन स्कूली बच्चों को आत्म- बल के रूप में सक्षम बनाना होगा। जिसके लिए सुमन सोनी जी ने स्वच्छता को माध्यम बनाया तथा वो ईश्वर द्वारा प्रदत्त सत्य ज्ञान का अपने शब्दों, प्रकंपनों व कर्मों के द्वारा आदान-प्रदान करते रहे।

पिछले लंबे वर्षों से भी अधिक समय से सोनी जी का बच्चों से इतना गहरा संबंध हो गया कि वो निरंतर स्वच्छ युक्त रहती हैं । बिभिन्न राज्यों में अनेक सेवाकार्य ख्याति प्राप्त अनगिनत नेशनल अवॉर्डों से नवाजी जा चुकी शिक्षिका सुमन सोनी इस बार अंतर्राष्ट्रीय बरिष्ठ अतिथि द्वारा हुई सम्मानित। द्वितीय झारखंड अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल 2019 (रांची) में इंजराइल निवासी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक डैन वालमेन ने पुष्पगुच्छ देकर सुमन सोनी को किया विशेष सम्मान कहा मुझे आपके भारतीय नारीहोंने पर गर्व है, आप नारी जाति के ही नहीं बल्कि हम पुरुषों के लिए भी प्रेरणाश्रोत हैं। सुमन सोनी कहती है इस रोमांचित पल को वो तो ता उप्र न भूल पाएगी सोनी जी का कहना है ये पल उन्हें गुरु, परिवार, समाज , देश, दुनिया के स्नेह और आशीर्वाद से मिल पाया है आभारी है ये आप सबों की। सुमन सोनी कहती है मुझे मिले हर सम्मान और भी नेक कार्य करने पर शक्ति प्रदान करते हैं इस आयोजन में झारखंड मंत्री अमर कुमार बाउरी जी जो कला संस्कृति, खेलकूद, पर्यटन, भूराजस्व के मंत्री जी, बहरान से अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष केंद्र के गुरु कुमारन स्वामी जी, बॉलीवुड स्टार आरबाज खान, अभिनेता रोनित रॉय, अभिनेत्री मुश्ता गोडसे, इकबाल खान, राजेश बिक्रम सिंह, रतन राजपूत (ललिया), गौतम रोडे, आदि ने सिरकत किए।